वर्षः 12, अंक : 42-43, अश्विन-फाल्गुन 2077, अक्टुबर 2019 - मार्च 2020 (संयुक्तांक)

मुकेश दत्त
संपादक

नव सोच, नव उमंगक नव विहान

श्रद्धेय मैथिलजन

नव वर्षक अशेष मंगलकामना

नूतन वर्ष नव उमंग, नव विचार, नव वादा-इरादाक संग आबि गेल। अपने लोकनि नव आशाक संग एहि नूतन वर्षक आरम्भ नव वादा सँ नहि नव उम्मीद सँ करब से अभिलाषा अछि। बितल वर्ष मे कएल गेल अपन resulationsक प्राप्ति वा ओहिमे सुधारक असीम सम्भावनाकेँ तलाशैत नव वर्ष मे नवका resulations नहि ओकरा पूर्ण आ सकार करबाक स्वप्न लऽ एहि दिश डेग बढ़ा स्वयं अपन पथ प्रदर्शीत कऽ दोसरोकेँ मार्गदर्शन करी, एहि लेल हार्दिक शुभकामना।

अगिला एक-दू मास मे बोर्डक परीक्षा आबयवला अछि समस्त बोर्ड परीक्षार्थीकेँ अग्रीम शुभकामना। हम समस्त परीक्षार्थी आ अभिभावकगण सँ कहय चाहब जे एहि परीक्षाकेँ लऽ कऽ कोनो तरहक दवाब अपना ऊपर नहि लऽ संयम सँ अपन लक्ष्यक प्राप्ति करैथ। प्रत्येक व्यक्ति मे किछ-नञि-किछ वैयक्तिक खुबि रहैत अछि, ओकरा पहचानि ओकरा अपन सम्बल बनाऊ। याद राखु बन्द मुट्ठि लाखक, खाली मुट्ठि खाकक। एकान्तिकता आ एकाग्रचितता सँ दैनिक जीवनक कतेको बाह्य बात जे हमरा भीतर नुकायल रहैत अछि, निकलि कऽ आबैत अछि। ओकरा निखारू जिनगी स्वतः सुखमय, उज्ज्वल आ सफल बनत।

अभिभावकगण सँ आग्रह जे ओ अपन संतानक व्यक्तिगत क्षमताकेँ पहचानैथ आ ओकरा उभारबाक प्रयास करैथ, हुनक मार्गदर्शन करैथ। मुदा क्रियान्वयन हेतु हुनका स्वतंत्र छोड़ि दैथ। हुनक पथप्रदर्शक बनु पथभोगी नञि। हुनका आशावादी बना सदति नव उत्साह भरैत रहु आ सदिखन काजकेँ अलग ढ़ंग सँ करबा लेल प्रेरित करैत रहु। परीक्षार्थी लोकनि केँ कहय चाहब जे ओ लगनशीलता, निरंतर अभ्यास आ मानसिक स्थिरता बना रूचिपूर्ण मनोयोग सँ परीक्षाक तैयारी करैथ। ई सर्वविदित अछि जे संघर्ष आ मेहनतक बले कोनो व्यक्ति मे चमक आबैत अछि। आगि मे तपलाक बादे सोना मे निखार आबैत अछि; मेंहदी पाथर पर घिसलाक बादे रंग आनैत अछि, ई सब जिनगीक सार्वभौमिक वास्तविकता अछि। याद राखु राम मात्र राम छलाह जा धरि ओ अयोध्या मे छलाह, वनक तपस आ ओकर कठिन परीक्षाक बाद वापस घुरि अयोध्या एलाह तऽ ओ मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम कहेलाह। अहुँकेँ ओहने बनबाक अछि।

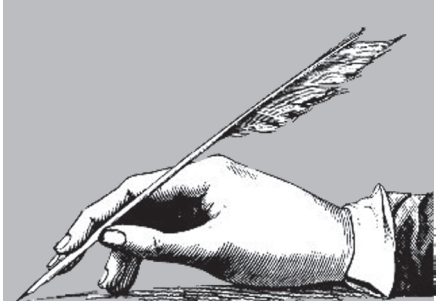

देखियौ कहल गेल अछि 'मन के जीते जीत है, मन के हारे हार'; इन्द्रियक संग मनक मित्रता तोड़ि, बल सँ नहि चतुराई सँ काज लेबय पड़ैत अछि। ***नीतिसुत्र*** मे **चाणक्य** कहने छथि "स्वयम् अशुद्धः परान् आशङ्कते" अर्थात् जे स्वयं अवगुण, अशुद्ध, अपवित्र होए ओ दोसरो केँ अपने सन मानैत अछि, तैं "आत्मछिद्रं न पश्यति परच्छिद्रमेव पश्यति बालिशः" अर्थात् अपन दोष नहि देखि दोसराक दोष देखनाए मूर्खता अछि, पहिने अपन अवगुण मिटाऊ फेर दोसरा केँ हुनक अवगुण मिटाबय मे सहायता करू। **फेलोरेसन स्कोवेल शिन** अपन पोथि ***द गेम ऑफ लाइफ एण्ड हाउ टु प्ले इट*** मे कहने छथि "कोनो आदत डालय लेल इक्कीस दिन

पर्याप्त होइत अछि", जकर ओ अपना ऊपर आ दोसरा पर कएल प्रयोगक उदाहरण सेहो देने छथि। व्यावाहारिक जिनगी मे एकर प्रयोग प्रासांगिक बुझना जाइत अछि। अपना अन्दरक अवगुण कें समेटि ओकरा दोषपूर्ण करबा लेल ई आवश्यक अछि। हमर निवेदन अछि जे अपनो सब नव वर्ष मे एक बेर एहि नव प्रयोग कें अपना कऽ देखु आ अपन जीवन कें अवगुण मुक्त करू।

आब पत्रिकाक गप्प, पत्रिकाक एहि अंक सँ चारिटा स्थायी स्तम्भ आरम्भ कएल जा रहल अछि - 1. मुद्दा, 2. विशेषज्ञ सँ पुछु, 3. मिथिलाक धिया, अओर 4. विज्ञान मंच। **मुद्दा** मे समसामयिक विषय पर लब्धप्रतिष्ठित विद्वतजनक विचार रहत; **विशेषज्ञ सँ पुछु** मे पाठक लोकनिक जिज्ञासा कें मिथिलांगनक विशेषज्ञगण द्वारा समुचित उत्तर देल जाएत; **मिथिलाक धिया** मे मिथिला कें गौरवान्वित करयवाली वर्त्तमान ललनाक संक्षिप्त विवरण रहत; **विज्ञान मंच** मे विद्यार्थी लोकनिक विज्ञानक जिज्ञासा कें शांत कएल जाएत। आशा अछि ई नव प्रयोग अपने लोकनिकें समुचित लागत। अहाँ सभहक सहभागिता एहि स्तम्भ सबकें अओर सारगर्भित बनाओत।

मैथिल युवाक बढ़ैत सोपानक अर्न्तगत आवरण आलेख 'मैथिल युवाक साहित्य क्षेत्र मे योगदान' साहित्य क्षेत्र मे मैथिल युवाक अवदान पर एकटा समुचित, संतुलीत आ सारगर्भित रिपोर्ट पेश कऽ रहल अछि। लेख द्वारा विभिन्न क्षेत्र मे हुनक भागिदारी कें अलग सँ उल्लेख अछि। प्रेरक व्यक्तित्व मे **सुपर कॉप आमोद कंठ** जीक विचार आ हुनक कार्यशैली कें जानबाक अवसर मिलत। एकर अलावे अपन स्थायी स्तम्भ कविता, नवांकुर, बीहनि कथा, लेख, लघुकथा, विचार मंथन, खान-पान, सौंदर्य, बाल-मचान आदि सँ परिपूर्ण अछि ई अंक।

अंत मे, जनगणनाक प्रक्रिया आरम्भ होएवला अछि अहाँ सबसँ करबद्ध निवेदन जे जनगणना मे अपन **मातृभाषा मैथिली** लिखाबी। नव वर्ष मे सब रूकल, छुटल वा छोड़ल काजकें नव ऊर्जाक संग पूर्ण करी से कामना।

सरस्वती पूजनोत्सव कें हार्दिक शुभकाकना।

अपनेक

मुकेश दत्त

मान्यवर,

जाहि पाठक लोकनिक एक वर्षीय सदस्यता समाप्त भऽ रहल छैन्ह वा नव सदस्यता लेबऽ चाहैत छथि, हुनका लोकनि सँ सादर अनुरोध जे अपन सदस्यताक नवीनीकरण वा नव सदस्यता लेबाक हेतु 100 टाका (डाक खर्च सहित) व्यक्तिगत रूपेँ, मनी आर्डर, चेक, बैंक ड्राफ्ट वा नगद आदिक माध्यम सँ मिथिलांगन कार्यालयक पता पर अविलम्ब पठा दी। मनी आर्डर, चेक, बैंक ड्राफ्ट आदि MITHILANGAN नाम सँ बनाओल आ दिल्ली मे देय हेबाक चाही।

- पत्रिका प्रसार व्यवस्थापक, मिथिलांगन

मिथिलांगन
साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था

© मिथिलांगन, सर्वाधिकार सुरक्षित।

व्यवस्थापन अओर विपणन कार्यालय : आदर्श इंटरप्राइजेज, 4393/4, तुलसीदास स्ट्रीट, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन : (011) 23246131/32, 41009940, फैक्स : 23246130
ई-मेल : adarshbooks@vsnl.com

संपादक : मुकेश दत्त
(समस्त संपादकीय कार्य पूर्णरूपेण अवैतनिक)

आवरण : रविन्द्र कुमार दास
डिजाइन आ सज्जा : संजीव कुमार 'बिट्टू'

मिथिलांगन मे छपल रचना/लेख इत्यादि मे व्यक्त विचार लेखक लोकनिक निजी विचार छैन्ह आ ई आवश्यक नहि जे ओ मिथिलांगनक नीति वा विचार इत्यादि कें प्रतिबिम्बित करय।

सब विवादक निपटारा दिल्ली/नई दिल्ली स्थित सक्षम न्यायालय आ फोरम मे कएल जायत।

मिथिलांगन (पंजी.) संस्थाक दिससँ अओर लेल अभय कुमार लाल दास द्वारा ए-40, कैलाश अपार्टमेंट, प्लॉट नं. 2, सेक्टर-4, द्वारका, नई दिल्ली-110078, सँ प्रकाशित अओर आनन्द संस (इण्डिया), सी-87, गणेश नगर (पांडव नगर कॉम्पलेक्स), दिल्ली-92, मे मुद्रित।
सम्पर्कः 9910952191 (संपादकीय)
9312301160, 9810450229 (प्रकाशकीय)
ईमेल : **mithilangan@gmail.com**
वेबसाइट : **www.mithilangan.org**

शुल्क : भारत मे एक प्रति 20 टाका, वार्षिक 100 टाका मात्र (डाक खर्च सहित)।

अनुक्रम

5 विमर्श
आत्म परीक्षण - *डॉ. जितेन्द्र लाल दास* ...5
आतंक अनाम आनन्द - *अर्जुन नारायण चौधरि* ...6

7 आवरण कथा
मैथिली साहित्य मे युवाक सक्रियता
- *सत्यनारायण प्रसाद यादव*

9 लेख
मैथिल युवाक बढ़ैत सोपान - *डॉ. राजीव कुमार वर्मा* ...9
गरिबी उन्मूलन मे मैथिल युवाक योगदान - *डॉ. पंकज कर्ण* ...11
मैथिल युवा वर्गक विभिन्न क्षेत्र मे योगदान - *जय प्रकाश लाल दास* ...12

13 कविता
नव वर्ष - *डॉ. शेफालिका वर्मा* ...13
विरह वेदना - *सुरेन्द्र शैल* ...13
रहय कर्मस्थली मिथिले मे - *डॉ. संजीव शमा* ...13
लड़की अल्हड़ - *सुधा कुमारी 'जूही'* ...14
पूसक राति - *स्वाति शाकम्भरी* ...14
ईस्कूल जाइत छी हम - *किशन कारीगर* ...14

15 नवांकुर-कविता
चिड़ै आ मनुक्ख - *संजय कुमार कर्ण* ...15
गामक सुख - *आनन्द दास* ...15
आगि - *रमेश कुमार* ...16
करू विचार - *सोगारथ सोम* ...16
समय चक्र - *विजय बाबू* ...16

17 बीहनि कथा
बेटी पढ़ाऊ - *सविता झा 'सोनी'* ...17
दुश्मन - *भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश'* ...17
मेला - *प्रभाष 'अकिंचन'* ...17
दहेज विरोधी - *विनीता ठाकुर* ...18
अप्पन सप्पत - *पूनम झा* ...18
समझौता - *घनश्याम घनेरो* ...18

19 प्रेरक व्यक्तित्व
मात्र कानून सँ स्त्रीक खिलाफ अपराध रोकब असंभव - **आमोद कंठ** - *गोविन्द चन्द्र दास*

24 मुद्दा
स्त्री बलिक बकरा, विचार तऽ खटिक कें करक छैक - *डॉ. ऊषा किरण खाँ*
शुरूये मे बच्ची कें लोकक स्पर्शक अर्थ बुझएबाक चाही - *डॉ. अरूणा चौधरी*
आभासी दुनियाक मायाजाल मे सब कंगाल; बलात्कार एकटा मानसिक बीमारी - *डॉ. शेफालिका वर्मा*

26 सम्मान

28 कथा
मधुश्रावणी - *पियूष रंजन* ...28
साढू - *ज्ञानवर्द्धन कंठ* ...29
चुनाव - *मिसिदा* ...30
परिश्रमक फल - *तनुजा दत्त* ...31

32 विशेषज्ञ सँ पुछू
विशेषज्ञ लोकनिक परिचय ...32
पाठक लोकनिक प्रश्न आ विशेषज्ञ लोकनिक उत्तर ...33

35 खान-पान
जाड़क मौसम मे भोरका नाश्ता - *प्रतिभा चौधरी*

36 सौन्दर्य प्रसाधन
बसंतक चमकैत मेकअप - *संतोषी कर्ण*

37 मिथिलाक धिया
हिमानी दत्त - *बसंत शेखर दत्त*

अनुक्रम

38 लघु कथा
तिल बहब - *कंचन कंठ* ...38
गनगुआरि - *कुमार मनोज कश्यप* ...38
फेसबुक - *अरूण लाल दास* ...39
खसल दुश्मन-दुश्मन नहि - *डॉ. परमानन्द लाभ* ...39

40 पोथी समीक्षा
भावांजलि (गद्य गीत) - *विनिता मल्लिक*

41 गीत
मिथिलाक बाढ़ि - *कुसुम लता देवी* ...41
बिगड़ल छै कोसी-कमला बलान - *ज्ञानेन्द्र भास्कर* ...41

42 विचार मंथन
साइबर कैफे मे सावधान रहू
- *कमांडर (रि.) के के चौधरी*

44 विज्ञान मंच
प्रश्नोत्तरी

45 श्रद्धांजलि
नहि रहलाह दिव्यांगजन केर योद्धा, समाजसेवी, प्रसिद्ध शिक्षाविद् डॉ. गजेन्द्र नारायण कर्ण

46 संस्था समाचार

48 चिट्ठी-पत्री

मिथिलांगनक निम्न अंक 'साक्षात्कार' हेतु अवश्य पढ़ू

1.	अंक 1 (अप्रैल-जून 2008)	:	श्री प्रदीप बिहारी आ श्रीमती शशिकला देवी
2.	अंक 2 (जुलाई-सितम्बर 2008)	:	श्री अच्युतानन्द चौधरी आ श्रीमती गोदावरी दत्त
3.	अंक 3-4 (अक्टूबर 2008-मार्च 2009)	:	श्री प्रत्युष कुमार आ श्री शरद कुमार
4.	अंक 5 (अप्रैल-जून 2009)	:	श्रीमती सुभद्रा देवी आ डॉ. गजेन्द्र नारायण कर्ण
5.	अंक 6 (जुलाई-सितम्बर 2009)	:	श्री निर्मल कुमार कर्ण आ श्री चन्द्र भूषण कूमार
6.	अंक 7-8 (अक्टूबर 2009-मार्च 2010)	:	आचर्य सोमदेव, श्रीमती चानो देवी आ श्री संजय चौधरी
7.	अंक 9 (अप्रैल-जून 2010)	:	श्री रमानन्द रेणु, श्रीमती शांती देवी आ श्री प्रभात प्रभाकर
8.	अंक 10 (जनवरी-मार्च 2011)	:	श्री कृष्ण कुमार कश्यप
9.	अंक 11 (अप्रैल-सितम्बर 2011)	:	श्री निशिकांत ठाकुर आ डॉ. ललित कुमुद (परिचय)
10.	अंक 12 (अक्टूबर 2011-मार्च 2012)	:	श्रीमती उषा किरण खां
11.	अंक 13 (अप्रैल-सितम्बर 2012)	:	श्रीमती गोदावरी दत्त
12.	अंक 14-15 (अक्टूबर 2012-मार्च 2013)	:	श्रीमती शेफालिका वर्मा
13.	अंक 16-17 (अप्रैल-सितम्बर 2013)	:	श्री सुन्दरम्
14.	अंक 20-21 (अप्रैल-सितम्बर 2014)	:	श्रीमती राखी दास
15.	अंक 22-23 (अक्टूबर 2014-मार्च 2015)	:	श्री मानवर्धन कंठ
16.	अंक 24-25 (अप्रैल-सितम्बर 2015)	:	श्री ब्रह्मदेव लाल दास
17.	अंक 26-27 (अक्टूबर 2015-मार्च 2016)	:	कमांडर (रि.) कौशल कुमार चौधरी
18.	अंक 28-29 (अप्रैल-सितम्बर 2016)	:	श्रीमती संजु दास आ श्री रविन्द्र कुमार दास
19.	अंक 30-31 (अक्टूबर 2016-मार्च 2017)	:	श्रीमती अम्बीका देवी
20.	अंक 32-33 (अप्रैल-सितम्बर 2017)	:	श्री (डा.) नागेश्वर लाल कर्ण
21.	अंक 34-35 (अक्टूबर 2017-मार्च 2018)	:	श्री पुष्कर कुमार
22.	अंक 36-37 (अप्रैल-सितम्बर 2018)	:	श्री सुधाकर दास
23.	अंक 40-41 (अप्रैल-सितम्बर 2019)	:	लेफ्टिनेंट कर्नल सतीश मल्लिक

आत्मपरीक्षण

डॉ. जितेन्द्र लाल दास

आत्मविश्वास हमर अन्तर्निहित एहन शक्ति अछि जाहिसँ हम जीवन मे आबयवाला प्रत्येक कठिनाई पर आसानी सँ विजय प्राप्त कऽ सकैत ही। विपत्तिकाल मे व्यक्ति जखन थकि-हारि कऽ निश्चिन्त भऽ जाईत अछि आ अपन भाग्यकेँ कोसय लागैत अछि, मुदा विपत्ति पर विजय प्राप्त करबाक कोनो उपाय नहि सुझैत अछि तऽ ओ जीतबा सँ पूर्व हार स्वीकार कऽ लैत अछि। परञ्च जे विपरीतो परिस्थिति मे संघर्षशील रहैत छथि, परिस्थिति सँ समझौता कऽ अपना ढंग सँ निदान हेतु अग्रसर होईत छथि ओ अवश्यमेव विजयी होईत छथि।

इतिहास साक्षी अछि जे कोनो महापुरुषकेँ एकाएक सफलता हाथ नहि लगलैन्ह अछि। पूर्व मे अनेको असफलताक स्थिति सँ गुजरैत हुनका सफलता भेटलैन्ह अछि आ ओ इतिहासक पृष्ठ पर अपन नाम अमर कऽ गेलाह। उदाहरणार्थ एडिसन महोदय बल्बक अविष्कारक क्रम मे दस हजार सँ बेसी परीक्षण कएलैन्ह, एहिसँ हुनका नवीन सीख भेटलैन्ह आ ओ एक दिन बल्बक अविष्कार कएलैन्ह "Failures are the pillors of success". उक्ति अक्षरशः सत्य अछि। एहन अनेको दृष्टान्त भेटत।

जौं अहाँ जीवन मे सफल होमय चाहैत छी तऽ असफलताक रहस्य बुझय पड़त, कारण सफलताक मार्ग असफलताक ऊपर सँ जाईत अछि। आत्मविश्वास राखय पड़त कारण अहाँ मे ओ सब शक्ति विद्यमान अछि जे एकटा सफल व्यक्ति मे होईत अछि अंतर मात्र एतबे अछि जे असफल आ नकारात्मक सोचक कारणेँ अहाँकेँ अपना ऊपर विश्वास नहि रहैत अछि। आत्मविश्वास जगाऊ, निश्चिते सफल होयब। जिनगी एकटा मैराथन दौड़ अछि। अपन लक्ष्य पर अडिग रहू, सफलता निश्चित भेटत। अपना भीतरक इच्छाशक्ति पर काबू रखबाक हेतु निम्नलिखित तथ्य पर ध्यान देब आवश्यक अछि, यथाः—

क) अहाँक संबंध मे किछु एहन बात अछि जे अहाँ जानैत छी आ दोसरो जानैत छथि, जेना- अहाँक नाम, जाति, धर्म आदि।

ख) किछु एहन बात जे अहाँ जानैत छी मुदा दोसर नहि जानैत छथि, जेना- अहाँक भीतरक विचार, आर्थिक स्थिति, मनःस्थिति आ अहाँ कतय फूसि बजलहुँ आदि।

ग) एहन बात जे अहाँ तऽ नहि जानैत छी मुदा दोसर जानैत छथि, जेना- अहाँक आदत, व्यवहार, अहाँक बात करबाक ढंग आदि।

घ) एहन बात जे नञि अहाँ जानैत छी आ नञि दोसर जानैत छथि, जेना- अहाँक क्षमता, अहाँक आत्मविश्वास आदि।

जौं अहाँक मस्तिष्क मे नकारात्मक विचार अछि तऽ-

क) सफल, सकारात्मक सोचवाला व्यक्ति सँ वार्ता करू।

ख) लक्ष्य निर्धारित करू।

ग) दृढ़ संकल्प लिय।

घ) सफल व्यक्ति सँ सुझाव लऽ सही योजना बनाऊ।

ङ) योजनानुसार कार्य प्रारम्भ केला सँ सफलता आवश्यम्भावी अछि।

स्मरण रहय जे सफल व्यक्तियेटा सफलता प्राप्तिक मार्ग बता सकैत छथि। अहाँ अपन लक्ष्य पर दृढ़ संकल्पित भऽ कार्य योजना बना आत्मविश्वास सँ अमल करू, सफलता निश्चिते भेटत।

सामान्यतया किहु व्यक्तिक छवि स्पष्ट नहि होइत छैन्ह, जाहि सँ हुनक विचार आ व्यवहार मे तादात्मय नहि होइत अछि आ हुनक सोच नकारात्मक होइत छैन्ह। ओ आगाँ बढ़यवाला व्यक्तिकेँ स्वस्थ्य या सुखी नहि देखय चाहैत छथि आ नञि अपने सुखी रहि पाबैत छथि। जखन कोनो व्यक्तिकेँ ओ असफल देखैत छथि तऽ प्रसन्नताक अनुभव करैत छथि आ सफल व्यक्तिकेँ देखि ईर्ष्या करैत छथि। ताहिसँ संग. ठन, समाज आ परिवार मे सकारात्मक व्यक्ति संग रहबाक चाही जाहिसँ अहाँक व्यवहार, मन सदैव प्रफुल्लित व सुखमय बनल रहय। एहिसँ प्रतिक्षण सकारात्मक ऊर्जा बनल रहत।

क्रमशः पेज नं. 27

आतंक बनाम आनन्द

-अर्जुननारायण चौधरी

हे गै पदलिप्सा! सत्ताक लोलुपता! वाक्यपटुता!!
किछु देरी सँ.... नीक जकाँ हम तोरा चिन्हलहुँ।
तों ही छैं आतंकवादी, सर्वविनाश केर जननी।
पुराणक कलंकित पुरुष 'रावण-कौरव-कंस'क
प्रतीक अहम्वृत्ति, आत्मघातिनी, वंशविनाशनी।
विगत विश्वयुद्ध केर 'भाइरस', विध्वंसकारिणी।
'हिटलर - स्टालीन - माओ - मुसोलिनी'क
संहारवाहिनी प्रियसि, प्राण-प्यारी, अंकशायिनी।

वर्त्तमान कालमे तौं छैं कराल-विकराल, मतान्ध
आतंकवादी फनकाढ़ने विषा दृश्य-अदृश्य
सहस्रजिह्वा इच्छाधारी मजहबी विषधारी सर्पिणी।
दुर्दमनीय, 'जैशेमोहम्मद' 'अलकायदा' सन असुर
कर्कश, क्रूर, दबंग, रक्तजीवी, पिशाचिनी।
'अल्लाह-हो-अकबर' केर कपटाचारी नारा सँ
जन्नतक हूर संग ऐश-मौज-मस्तीक लोभ मे
बिछा दै छैं तौं बेगुनाह शरीफ इन्सानक लाश।
एहि तरहें अपने ऐय्याशी आ गद्दीक खातिर तों
धरती पर तोड़ै छैं निर्दोष मनुष्यताक स्वर्णिम आस।
अबोध लोककें साम्प्रदायिक-मजहबी जहर पीआकऽ
विवेक सँ वंचित क्रूर अनुशासन केर पाठ पढ़ाकऽ
तों थोपैत छैं, ठूसै छैं सरलचित्त जन-मानस मे
अधोगामी, सर्वविनाशी घोर-गहन अन्धविश्वास।

एहने व्यवस्थातन्त्र सँ भारतीय लोकतन्त्र मे
ऊपजाबै छैं तों सम्मोहित अपन वोटर - समाज।
पाखण्ड सँ हरपै छैं पद, प्रतिष्ठा, राज-काज,
की विधयक, की सांसद, की मंत्री, की संतरी,
की अफसर, की व्यापारी सबकें बनौलैं तूँ धूर्तराज।
तोहरे बनाएल दुराचारी राजमे जड़ैए ई मानव-समाज,
चाटि गेलैए तों सभ नैतिकता अओर लोक-लाज।
सीमाहीन समृद्धि-लिप्सा आर एय्याशी-यौनाचार मे
आकंठ डूबल छै, नेतघट्टू, चरित्रहीन नेता-हैवान,
बनलै अध्यात्म बिनु जनता-जनार्दन असली शैतान।
ढ़ाहैत छै सर्वमान्य ऊँच सांस्कृतिक मिनार,
आदमीक शक्ल मे घूमैए चारूकात बलात्कारी इन्सान!

तोड़ैत छै आध्यात्मिक एकता केर सुन्दरतम विचार।
तों कपटी, तपस्वी-योगी-सन्यासीक बहुरंगी रूपमे
रावण जकाँ साधुताक मनमोहक चोंगा पहिर कऽ
ईश्वर - अल्लाह - गॉड - ब्रह्म - ताओ - नबी
पीर - पैगम्बर - फरिश्ता आ अवतार केर नाम पर
करै अछि सरलता रूपी सीताक हरण अओर व्यापार,
अनगिन भ्रष्टाचार, दुराचार, पापाचार केर व्यवहार।

हे गे, सत्तालोलुप, पदलोलुपता, नराधम राक्षसिनी!
विधिक अटल विधानसँ अमावस्याक अवसान पर
हँसैत आबै छै पूर्णमासीक मधुर शुभ्र ज्योत्सना।
ओहि विधाने तोहरो दुःखदायी अवसान-कब्र पर
विश्वचेतनाक मंगलकारी सृजनशीलता उदित हेतै।
चारू दिशा मे पृथ्वी पर सुसंस्कारित मातृगर्भ सँ
ज्योतिष्मान, करूणाप्रधान, आत्मज्ञानी आ कर्मठ
योगनिष्ठ अभिनव मानवश्रृंखलाक आविर्भाव हेतै।
पराज्ञान, अनासक्तकर्म अओर निःस्वार्थ भक्ति सँ
पीड़ित मरणासन्न मानवता मे नवल प्राण जागि जेतै।
मिथिलांगन सँ गगनांगनधरि मंगलमय शंखनाद हेतै –
'एक छै हमर धरती माता, एक्के ईश्वर परमपिता।
पृथ्वीक मानव भाए-भाए सब अछि हुनके सन्तान,
सबकें हित लए सभहक जीवन इएह समुचित ज्ञान,
सबकें हृदयकमलमे पसरल ब्रह्मचेतना एक समान।
एक्के लक्ष्य, एक्के प्रयोजन, एक्के संकल्प महान
'आत्ममोक्षार्थम् जगतहिताय च' एक्के अभियान-
''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा दुःखकश्चितभागभवेत।''
सब कियो सुखी होइथ, मायासँ मुक्त निर्भय होइथ।
सब लोकक चरित्र मे सज्जनता दृष्टिगोचर होए,
किनको भाग्य मे कोनो तरहक दुःख सन्ताप नहि होए।
त्याग, तपस्या, श्रम, साधना आ एहि सुविचार सँ
पर-पीड़ा आ दमन-शोषणकें अवश्ये अवसान हेतै,
सुख-समृद्धि केर वृद्धि संग प्रेममिलन, सम्मान हेतै।
वसुधाक भौतिक, आधि-भौतिक सभ सम्पदाक
आत्म-चेतना आ बौद्धिक क्षमता सँ सदुपयोग हेतै।
बढ़त परस्परप्रेम, आनन्दित सबकें घर-परिवार हेतै।

मैथिली साहित्य मे युवाक सक्रियता

सत्यनारायण प्रसाद यादव

पिछला आँकड़ाक हिसाब सँ भारत दुनियाँक सबसँ बेसी युवा आबादीवला राष्ट्र बनि गेल। घोषणाक अनुसार एखन अपन देशमे लगभग पैंसठि प्रतिशत जनसंख्या युवावर्गक अछि। कोनो राष्ट्र निर्माण ाक नींव मजगूत होएबाक चाही आ से युवावर्गसँ बेसी संभव होइत अछि किएक तऽ ओकरामे कार्यकुशलता, विवेकशीलता अओर दूरदर्शिताक परख खूब होइत अछि जाहि बल पर ओ एकटा फराक जगह बनबैत अछि। राष्ट्र निर्माणक विभिन्न तत्त्वमे साहित्यक भूमिका सबसँ बेसी महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि तैं भारतीय संस्कृतिमे सेहो साहित्यक मानव जीवनसँ अभिन्न संबंध अछि। मनुक्खकेँ जन्मक संगहि काव्यक जे सिलसिला सोहरक संग आरम्भ होइत अछि से फेर लोरी, गीत, गजल, कविता, कथा, पराती, भजन-कीर्तन आदिक सबसँ गुजरैत जीवन लीलाक समाप्ति पर निर्गुणक संग सम्पन्न होइत अछि। साहित्य सँ सामाजिक संबंध आ उत्तरदायित्व मे प्रगाढ़ता आबैत अछि, ई मानव चेतना केँ जागृत करैत अछि, बर्बरताक नाश करैत अछि अओर सबसँ महत्त्वपूर्ण भावनाक संसोधन सेहो करैत अछि। साहित्य बिनु सुसभ्य भाषा, आदर्श, नैतिकता आदिक बात सोचलो नहि जा सकैत अछि आ एहि सब मूल्यक बगैर मानवताक संश्लिष्ट परिभाषा नहि गढ़ब असंभव अछि। आई जखन नैतिकता आ आदर्शक मूल्य ढ़हल जा रहल अछि, सुसभ्य भाषाक नाम पर नहि जानि केहन-केहन अवैज्ञानिक विशेषण आ उपमान गढ़ल जा रहल अछि, क्षमाशीलता, परोपकारक गप्प आदर्शवादी लागय लागल अछि, एहन समय मे एहि चरमराइत व्यवस्थाकेँ साहित्ये मात्रसँ समहारल जा सकैत अछि। आई जखन हमर पीढ़ी आत्ममुग्धता, स्वार्थ, हिंसा, ईर्ष्या आ द्वेषक दलदल मे फँसैत जा रहल अछि, साहित्ये एहि समस्या सबसँ उबारि सकैत अछि। निःसंदेह मनुक्खमे पशु जकाँ आदिम प्रवृत्ति सब आईयो विद्यमान अछि। एकर एहि अस्तित्वकेँ अस्वीकार नहि कएल जा सकैत अछि। कनेक उत्तेजना पाबि ओ झनझना उठैत अछि आ कोनो घोर कुकृत्यसँ गुजरि जाइत अछि। मनुक्खकेँ एहि आदिम प्रवृत्ति सबसँ निकालबाक काज साहित्य करैत अछि। भर्तृहरि कहने छथि- "साहित्य संगीतकला विहीनः साक्षात पशुः पुच्छविहीनः।"

मिथिला जे भारत आ नेपालक तराई क्षेत्रक संयुक्त एकटा सुन्दर सन प्रदेश अछि, साहित्यिक रूपेँ सर्वदा समृद्ध आ गौरवान्वित रहल अछि। आर्थिक रूपेँ सब दिनसँ पिछड़ल रहलाक बाबजूदो एहिठामक साहित्यिक पुरखा लोकनि अपन साहित्य रचनाक तपसँ एहि प्रदेशक नाम स्वर्णाक्षरमे अंकित करौने छथि। गद्य होए वा पद्य साहित्यक सब विधामे एहिठामक विद्वान लोकनि एकटा फराक जगह छेकने छथि। सिद्ध लोकनिसँ लऽ ज्योतिरीश्वर, महाकवि विद्यापति, गोविन्द दास, उमापति, लोचन, मनबोध, कवीश्वर चन्दा झा, सीताराम झा, कुमार साहेब, जनसीदन, हरिमोहन झा, रमानाथ, किरण, मधुप, सुमन, यात्री, आरसी, किसुन, जयकान्त, सुभद्र, ललित, राजकमल, मायाबाबू, मणिपद्म आदि बड्ड पैघ श्रृंखलामे साहित्यिक विद्वान लोकनि एहि भूमि पर अवतरित भेलाह। सुखद गप्प ई अछि जे ई श्रृंखला दिनानुदिन अओर चतरिए रहल अछि।

एहि आलेखमे हमरा वर्तमान मैथिली साहित्य आ युवावर्ग पर संक्षेप मे चर्चा करबाक अछि। युवावर्ग कहबाक तात्पर्य जे साहित्यिक सबसँ प्रतिष्ठित संस्था साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक हिसाबे पैंतीस बरिख आ किछु अओर संस्थाक हिसाबे चालीस बरिख मानल जाइत अछि तैं हमहुँ एहिठाम तकरे पालन करब मुदा एहिमे किछु उनैस-बीस भऽ सकैत अछि। साहित्यिक विभिन्न विधाक अन्तर्गत रचनाशील साहित्यकार लोकनिक नामकरणक चर्च हम पोथीक अध्ययन आ सोशल मीडियाकेँ गतिविधिक हिसाबे करब। संभव अछि किछु पक्ष आ नामक चर्च जरूर छुटि जाएत। पहिनहुँ आ वर्तमान समयमे सेहो मैथिली साहित्यमे काव्य विधा सबसँ बेसी समृद्धताक संग रहल अछि। पोथी, पत्रिका आ मंचो पर कविता अपन उपस्थिति नीक जकाँ बनौने अछि। एहिमे महिला आ पुरुष दूनू वर्गक सहभागिता अछि, सब केओ खुब लिखि रहल छथि। अखन जैं मैथिली साहित्यमे युवावर्ग द्वारा रचित कविता/गीत/गजल पर नजर दौड़ाबी तऽ पाएब जे ई श्रृंखला खुब नमहर अछि। सजगतापूर्वक जे प्रमुख नाम सक्रियता सँ लेखनरत छथि ओ नाम अछि- अरूणाभ सौरभ, नारायण झा, चन्दन कुमार झा, मैथिल प्रशांत, राजीव रंजन झा, दीप नारायण 'विद्यार्थी', रूपेश त्योंथ, मुख्तार आलम, आशीष अन्चिन्हार, विकास वत्सनाभ, बालमुकुन्द, गुंजन श्री, प्रदीप पुष्प, प्रणव नार्मदेय, उमेश पासवान, कलमजीवी पंकज, नवल किशोर, अम्बिकेश मिश्र, अमित पाठक, संजीत झा 'सरस', मनीष झा 'बौआ भाई', अमित मिश्र, अक्षय आनंद सन्नी, गुफरान जिलानी, प्रियरंजन, सुमित मिश्र 'गुंजन', उगना शंकर, रजनीश प्रियदर्शी, अविनाश मिश्र, श्याम झा, आनन्द मोहन झा, कुन्दन कर्ण (नेपाल), नितीश कर्ण, अभिलाष ठाकुर, विन्देश्वर ठाकुर आदि बहुतो नाम अछि। किछु एहनो युवा छथि जनिक रचना साहित्य अकादेमी नई दिल्ली आ अन्य कोनो अंखिगर संस्था दिससँ पुरस्कृत सेहो भेल अछि। जाहिमे अरूणाभ सौरभक 'एतबेटा नहि', प्रवीण कश्यपक 'विषदंती वरमाल कालक रति',

दिलीप झा 'लूटन'क 'अँकुरा रहल संघर्ष', नारायण झाक 'प्रतिवादी हम', चन्दन कुमार झाक 'धरती सँ आकाश धरि', दीपनारायण विद्यार्थीक 'जे कहि नहि सकलहुँ', उमेश पासवानक 'वर्णित रस', अमित पाठकक 'राग-उपराग' साहित्य अकादेमी नई दिल्ली सँ पुरस्कृत अछि। मैथिल प्रशांतक 'समयक धाह पर' चेतना समिति पटनासँ कीर्ति नारायण मिश्र पुरस्कार प्राप्त छैन्ह। एहि विधामे महिला वर्गक भागीदारी जे अछि ताहिमे प्रमुख नाम- शारदा झा, निवेदिता झा, निधि कात्यायन, विभा कुमारी, निक्की प्रियदर्शनी, स्वाती शाकम्भरी, पुतुल प्रियंवदा, प्रियंका, सोनी नीलू झा, मुन्नी कामत, पूनम मंडल, रूची स्मृति, मुन्नी मधु, संस्कृति मिश्रा, विजेता चौधरी आदि बहुतो नाम अछि। महिला वर्गमे सेहो किछु कवयित्रीक पोथी पुरस्कृत अछि जाहिमे कामिनी चौधरीक 'खण्ड खण्डमे बँटैत स्त्री', स्वाती शाकम्भरीक 'पूर्वागमन' आ रोमिशा झाक 'फूजल आँखिक स्वप्न'। ई पोथी सब मैथिली साहित्य महासभा (मैसाम) पुरस्कार सँ सम्मानित अछि। एहि तरहें कहि सकैत छी जे एहि विधामे मैथिली साहित्यक स्थिति खुब समृद्ध आ नीक स्थितिमे अछि।

पूर्वमे मैथिली साहित्यमे काव्यक बाद सबसँ बेसी समृद्धता कथा आ उपन्यास विधा मे रहल छल मुदा वर्तमान समय जरूर एहि सब विधा हेतु चिंतनीय अछि खासकऽ उपन्यासक विधा। कथा संग्रहमे एम्हर अभिलाषाक 'पह', शुभेन्द्रु शेखरक 'ओकरो कहियो पाँखि हेतै', उमेश मंडलक 'टुटैत मनक जुड़ाव', सोनू कुमार झाक 'गस्सा', अखिलेश कुमार झाक 'नीर भरल नयन' आदि सोझाँ आबैत अछि। एकर अलावो चन्दन कुमार झा, नारायण झा, निक्की प्रियदर्शनी, पंकज प्रियांशु, पुतुल प्रियंवदा आदि लोकनि कथा लिखि रहल छथि।

बीहनि कथामे सक्रिय युवा भागीदारीक रूपमे विद्याचन्द्र झा 'बमबम', मोहन राज झा, मुन्नी कामत, सान्त्वना मिश्रा, अब्दुर रज्जाक राइन आदि सम्मिलित छथि आ हिनका लोकनि सँ एहि विधाकेँ बड्ड आस छैक। एहि तरहें कथा विधा लेखन केँ संतोषजनक तऽ मानलो जा सकैत अछि मुदा जैं उपन्यास मे देखि तऽ कमलेश प्रेमेन्द्रक 'पाथर सन करेज' आ 'किरिया' अओर कुमार पद्मनाभक 'पपुआ ढपुआ सनपटुआ' केँ छोड़ि कोनो तेहेन नाम सोझाँ नहि आबैत अछि जे अति चिन्तनीय विषय थिक।

मैथिली गद्य साहित्यमे उपन्यास विधा सेहो सुसम्पन्न विधा रहल अछि, जाहिसँ कोनो साहित्यकेँ अकानल जा सकैत अछि, मुदा आन भाषा वा हिन्दीक तुलनामे वर्तमान स्थिति अति दयनीय अछि। जकर कारण भऽ सकैत अछि जे अध्ययन-चिंतनक स्तर ओहि स्तर धरि नहि पहुँचि रहल होए। कविता विधाक एतेक पसरबाक वर्तमान कारण अछि- सोशल मिडिया पर सहजता सँ अपन रचना परोसब, सुगमता सँ पाठकवर्ग भेटब आ मंच धरि ओतबे आसानी सँ पहुँचबाक अवसरि भेटब। एहेन स्थितिमे गद्य विधा तऽ अओर बेसी कतिआएल जा रहल अछि। आई कवि सभजाना भेटि जाएत, मुदा कथाकार-उपन्यासकार बड्ड मोसकिल सँ तकलो पर नहि भेटत। जौं हम वरेण्य साहित्यकार लोकनिक एहि दिस मार्गदर्शन आ सहियारबा संबंध चर्चा करब तऽ ओहुठाम फोक मुट्ठी बारह। हुथबा लेल हुथाठ तऽ सबठाम सँ भेटिये जाएत, मुदा किछु अपवादकेँ छोड़ि प्रोत्साहन, मार्गदर्शन, रचना पर चर्चा आदि नगण्य हाथ लागैत अछि। तखन हमसभ स्वस्थ ओ स्तरीय साहित्य सब विधा मे कोना पाबि सकैत छी। बीसम शताब्दीक अंत धरि गद्य विधाक निरंतरता नीक छल, मुदा एक्कैसम शताब्दीक प्रारंभ सँ आई धरि दिनानुदिन कमजोर होइत चलि गेल आ आई झुझुआन सन लागि रहल अछि। तहिना नाटक, खण्डकाव्य, महाकाव्य, यात्रा-वृतान्त, संस्मरण आ रिपोतार्जक तऽ हाल अओरो खराब अछि। नाटक-एकांकी विधामे आनन्द कुमार झाक बाद किछु-किछु अमित मिश्र लिखि रहल छथि। तकर बाद कोनो तथाकथित युवाक नाम एहि विधाक संग नहि जुड़ि रहल अछि। बालकथा आ बाल कविता सेहो मात्र संतोषे धरि। बाल कविता पर कम काज भेल अछि। बाल कथा पर तऽ नाम मात्रे काज देखबा मे आबैत अछि। ताहि स्थिति मे बाल कविता, बाल कथा आदि मे ऋषि वशिष्ठ, अमित मिश्र, अक्षय आनंद सन्नी, चन्दन कुमार झा, नारायण झा आ स्वाती शाकम्भरीक अलावा तेहन केओ अओर नहि नजरि पड़ैत छथि मुदा ई लोकनि नीक जकाँ काज एखन कऽ रहल छथि अओर नीक कऽ सकैत छथि।

एम्हर एहि दशक मे विश्वविद्यालयी शिक्षामे विद्यार्थीगण मैथिली साहित्य राखि नेट/जे.आर.आफ. दिस खुब अग्रसर भेलैथ अछि। साल भरिमे करीब डेढ़-दू दर्जन सँ बेसी गोटे एहि परीक्षामे सफल भऽ रहलाह अछि। संघ लोक सेवा आयोग आ बिहार लोक सेवा आयोग मे सेहो मैथिली साहित्यकेँ वैकल्पिक विषय मानि मिथिले नहि मिथिला सँ बाहर प्रदेशक अभ्यार्थी लोकनि सफलता पाबि रहलाह अछि। कतेको एहेन छात्र-छात्राकेँ हम व्यक्तिगत रूपेँ जानैत छियैन्ह जे एहि विषयकेँ लऽ कऽ तैयारी कऽ रहलाह अछि आ कतेको गोटे सफल भऽ उच्च पदकेँ सुशोभित कएलैन्ह अछि जाहिमे हरियाणा, इलाहाबाद, लखनऊ, राजस्थान, महाराष्ट्र, उड़ीसा आदि प्रदेशक अभ्यार्थी लोकनि सेहो सम्मिलित छथि।

निष्कर्षतः हम कहैत छी जे मैथिली साहित्यक किछु विधामे रचनाकारक संख्यामे खुब वृद्धि भेल अछि तऽ ओतहि किछु विधा जरूर पछुवा गेल अछि। वृद्धि होइत संख्याबल मे ओहि अनुपाते स्तरो बढ़ब आवश्यक अछि। रचना पर समुचित समीक्षा-समालोचना आवश्यक अछि। बेगरता अछि एहि कतियाएल जा रहल विधा दिस युवाक नजर घुमेबाक, जाहिसँ मैथिली साहित्य जे पूर्वमे अपन सब विधामे उत्कृष्टताकेँ समहारि आ संजोगि कऽ रखने छल से विद्यमान रहए। तैयार होमयवला नव पीढीकेँ आरम्भहि सँ साहित्यक अध्ययन करबाक लेल प्रेरित करब। जाहि लेल बाल साहित्य पर सेहो ओहिना सजगता सँ कार्य होए, तैं जड़िमे पानि पटायब बड्ड जरूरी अछि। जखन आरम्भे सँ साहित्य पढ़य लेल भेटतैक तखन ओ नमहर भऽ अपने नीक साहित्य ताकि-ताकि कऽ पढ़त। फेर कठिन विधाक ज्ञान परोसब आ फेर ओहि विधा मे नव सृजन करबा लेल तैयार करब। उच्च शिक्षा आ प्रतियोगी परीक्षाक स्तर पर ई साहित्यक स्थिति खुब संतोषजनक रहि रहल अछि। मैथिली साहित्यक नवतुरिया आगाँ आबैथ आ अपन मार्ग प्रशस्त करैथ।

❐

मैथिल युवाक बढ़ैत सोपान

प्रो. डॉ. राजीव कुमार वर्मा

1980क दशक मे हम दिल्लीक हिन्दु कालेज मे बीए मे एडमिसन लेने छलौंह। मिथिला क्षेत्र सँ विद्यार्थीक संख्या दिल्ली विश्वविद्यालय मे गिनती मे छल। मैथिली मे बाजबाक मौका कम भेटैत छल। मुदा ओहि समय प्रो जयकांत मिश्र जीक संग मैथिली केँ अष्टम सुची मे आनय लेल राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा जी सँ राष्ट्रपति भवन मे भेट केने छलौंह। मैथिली भाषा आ अस्मिताक सवाल छल। भूमंडलीकरणक दौरक शुरूआत नहि भेल छल। मिथिलाक युवावर्गक विशेष पहचान नहि छल। समस्त भारत आ मिथिलाक युवावर्गक पहचान एक छल। नवतुरिया टीवी समाचार, चित्रहार आ कृषिदर्शन परोसैत छल। भारत प्रगति पर छल, मुदा आधुनिक प्रगति सँ कोसो दुर। पंचवर्षीय योजना, औद्योगीकिकरण आ हरित क्रान्ति सँ परिवर्तन भेल। किछु प्रगति केर संग भारत कृषिप्रधान, गरीब देश बनल रहल। बिहार अविकसित छल आ मिथिला क्षेत्र सेहो विकास सँ वंचित छल।

1990क दशक मे भूमंडलीकरणक दौरक शुरूआत भेल। भारत मे तेजी सँ परिवर्तन भेल। मोबाईल, मॉल आ मल्टीप्लेक्सक आविर्भाव भेल। शिक्षा केंद्र मे विस्तार भेल। युवावर्गक जनसंख्या मे अभूतपूर्व वृद्धि भेल। नौकरीक नया आयाम खुलल। परिवर्तनक कदम गाम धरि पड़ल, खेतीक तुलना मे नौकरी सँ आमदनी मे वृद्धि भेल। गाम सँ शहर, शहर सँ दिल्ली आ आन महानगर आ ओहिठाम सँ विदेश लेल पलायन शुरू भेल। मिथिलाक युवावर्ग एहि पलायनक भाग बनलाह। मिथिला सँ देश-विदेश धरि हुनक पएर पड़ल। मिथिला अविकसित रहि गेल आ अनेको मिथिलावासी विकसित भऽ अपन जड़ि सँ कटि गेलैथ।

एहि परिवर्तन सँ युवावर्गक समक्ष निम्नलिखित समस्या सुरसा जकाँ मुँह बौने अछिः-

1. विश्वविद्यालय शिक्षा आ कोचिंग मे पढ़य लेल माए-बापक कर्ज मे डुबनाय, महानगर मे डेरा आ खानाक समस्या, महानगरीय खर्च, प्रतिस्पर्धा आ बेरोजगारी।
2. देश-विदेश मे नौकरी सँ मैथिल युवाक अपन भाषा, संस्कृति सँ अलगाव।
3. संयुक्त परिवारक विघटन।
4. एहि भूमंडलीकरण आ भौतिकवादी युग मे मैथिल युवाकेँ पहिने समाज, फेर परिवार आ अंत मे अपना आप सँ विमुख भेनाय।
5. मैथिली भाषा आ संस्कृतिक पतन।

मुदा आजुक दौर मे युवावर्ग समस्या सँ अवगत छथि आ भाषा, संस्कृति पर प्रहार सँ सचेत छथि।

मिथिलाक विकास लेल अनेक मंचक निर्माण भेल अछि। मिथिला राज्यक माँग सेहो प्रबल ढंग सँ उठल अछि। मैथिल युवावर्ग लगभग हर क्षेत्र मे अपन योगदान दऽ रहल छथि, जेनाः- सिविल सेवा, शिक्षा क्षेत्र, व्यवसाय, चिकित्सा, राजनीति, कला, साहित्य, खेल, सेना, सिनेमा जगत आदि।

मैथिली आ मिथिलाक विकास लेल अनेक परिचर्चाक आयोजन भऽ रहल अछि। शोध आ लेखनीक माध्यम सँ विकास लेल प्रयत्न जरूरी अछि। एहिमे मिथिलांगन पत्रिकाक भूमिका सराहनीय अछि। मिथिला आ मैथिलीक विकास लेल दिल्ली स्थित एनजीओ इला फाउंडेशन सेहो सक्रिय अछि आ हाल मे एहि उद्देश्य लेल 'मिथिला चैप्टर'क स्थापना सेहो भेल अछि। मैथिल युवाकेँ सहुलियत लेल हमरा संगे मिथिलांगन आ अनेको संस्था दिल्ली विश्वविद्यालय मे मैथिलीक पढ़ाई लेल प्रयत्नशील छथि।

❐

Toll Free : 18003456277 www.vedantaeyecare.com

अंधापन का मुख्य कारण
'डायबिटीक रेटिनोपैथी'

क्या आप अंधेपन का शिकार होने वाले हैं???

अपनी आँखें तुरंत जाँच करायें

OUR FACILITIES

**Cataract And Refractive Surgery ❖ Vitreo Retina ❖ Glaucoma
Corneal Transplantation ❖ Squint ❖ Occuloplasty
Uveitis ❖ Neuro-Ophthalmology ❖ Pediatric Ophthalmology**

वेदांता नेत्र विज्ञान केन्द्र
TM
(एम्स नई दिल्ली के पूर्व सर्जनों द्वारा स्थापित संस्थान)

पासपोर्ट ऑफिस के सामने, आशियाना-दीघा रोड, पटना-800014

☎ 0612 2583331, 2584441 📱 7070094822/23/24/25

गरीबी उन्मूलन मे मैथिल युवाक योगदान

डॉ. पंकज कर्ण

अंग्रेजी मे एकटा कहावत अछि- "TO BE POOR IS A CRIME" वस्तुतः गरीबी एकटा अभिशाप अछि जे मानव मे अनेक विकृति आ विकारक भाव कें आश्रय आ आलंबन प्रदान करैत अछि। फलतः समाज मे आतंक, हत्या, चोरी, डकैती आदि सामाजिक विषमता कें पनपबाक सह दैत अछि।

संप्रति भारतक लगभग एक तिहाई आबादी गरीबी रेखाक नीचा जिनगी बसर करय पर मजबूर अछि। भारत सन अपार क्षमताबला देशक लेल ई विषम अभिशाप ढ़ोनाय अतिशय चिंतनीय कार्य अछि। प्रशासन आ राजनेता सभहक आश्वासन अओर अथक प्रयासक बावजूदो अकर अनुपात मे ह्रासक बदले वृद्धियेक संभावना परिलक्षित भऽ रहल अछि। भारतवर्ष मे युवावर्ग मे बेरोजगारी एहन कैंसर अछि जाहिसँ अधिकांश युवा ग्रसित छथि। अकूत बेचौनीक बावजूदो उन्मुक्तिक कोनो मार्ग प्रशस्त होइत दृष्टिगोचर नहि भऽ रहल अछि।

युवा सभहक एहि सामयिक मनोदशा पर प्रत्यक्ष रूपसँ शताब्दियो पूर्व मैकाले द्वारा लादल गेल शिक्षा नीतिक दुष्प्रभाव अछि जे अद्यतन भारतीय शिक्षा प्रणालीक रीढ़ थिक। मैकालेक शिक्षा नीति दासता, गुलामी, परवशता, लाबयवाला नीति छल। इएह नीति गुलाम भारत मे अंग्रेज द्वारा भारतीय मानसिकता कें सदिखन गुलामीक दिशा मे प्रवृत्त करबाक दुर्नीति छल। आईयो युवा हुनक एहि दुष्चक्रक शिकार छथि। फलस्वरूप शिक्षा ग्रहण केलाक बादो संप्रति युवा नौकरीक तलाश मे तबाह भऽ रहल छथि। नौकरी का आयु सीमा समाप्त भेला पर निराधार भऽ मानसिक रूपसँ कुंठित भऽ जाइत छथि अओर अनेकशः अनैतिक आचरण करबाक हिमायती बनैत छथि। युवावर्गक ई दशा विगत कतेको दशक सँ हुनक मन कें उद्वेलित कऽ रहल छैन्ह, मिथिलाक युवावर्ग सेहो एहि स्थितिक भयावहता सँ ग्रसित छथि।

ई ध्रुवसत्य अछि जे युवा देशक कर्णधार होइत छथि। एहि व्यवहारिक परिदृश्य पर गरीबीक उन्मूलन मे आई युवाक योगदान अपरिहार्य अछि। एहि प्रक्रिया हेतु सरकार सेहो चिंतित अछि अओर रोजगार प्रदान करबाक दिशा मे विगत किछु दशक (1983-84) सँ क्रियाशील सेहो छथि, संगे संग ग्रामीण युवा स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षणक योजना, ग्रामीण क्षेत्र मे महिला आ बाल विकास, ग्रामीण कारीगर योजना सभटा ग्रामीण विकास कार्यक्रमेक अभिन्न अंग अछि। सरकार द्वारा ग्रामीण युवा स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षणक योजना सेहो 1979 सँ आयोजित आ शुरू कएल गेल अछि जे देशक युवाक मे स्वरोजगार हेतु योग्यता प्राप्त करबाक संग-संग आवश्यक तकनीकी दक्षता उपलब्ध कराबैत अछि। सरकारी योजनाक कार्यान्वयन मिथिला क्षेत्र मे जेहन हेबाक चाही से नहि भेला कारणें मैथिल युवावर्ग एहिसँ सदिखन वंचिते रहलाह।

मुदा, सिवाय एहि सरकारी योजना आ कार्यक्रम सँ देशक गरीबी दूर भेनाए असंभव अछि। जखन धरि सरकारी तंत्र आ देशक युवा मे आंतरिक तालमेल नहि होएत, जखन धरि युवा मे क्रियात्मक सक्रियता उत्पन्न नहि होएत। युवा मे प्रगतिशीलता अओर कार्यक्षमताक अभिवृद्धिक लेल ई आवश्यक अछि हुनका स्वयं कें भीतरक शक्ति कें उन्मेष। उन्मेष एकटा एहन मनोवैज्ञानिक क्षमता अछि जे युवाककें मानसिक रूपसँ संकेंद्रित कऽ हुनका संरचनात्मक कार्यक दिशा मे अनुप्रेरित करैत अछि, हुनका मे आंतरिक शक्ति, अंतर्ज्ञान हेतु उद्वेलित करैत अछि संगहि कर्तव्य मार्ग लेल उत्प्रेरित करैत अछि।

जौं युवा मे ई अंतर्ज्ञान प्रज्वलित भऽ जाए आ ओ अपन भीतरक क्षमताकें पहचानय लागैथ तऽ असंभव कें संभव करबाक हुनका मे व्यग्रता महसूस हेतैन्ह। जाहिसँ देशक मात्र गरीबीयेटा दूर नहि होएत वरन् ई देशकें विकासशील सँ आगाँ बढ़ा गतिशीलताक बाट पर उत्तरोत्तर बढ़ी चरमोत्कर्ष पर पहुँच जाएत।

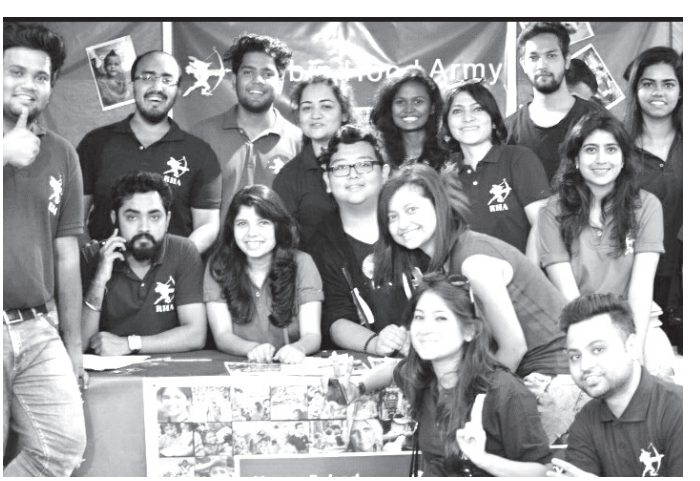

देशक गरीबीक उन्मूलन लेल मैथिल युवाक सक्रियता, कर्मठता आ तत्परताक अनुमान लगाओल जा सकैत अछि जे अखन प्रायः सब गाम/पंचायत मे युवा टोली आ गैर सरकारी संगठन बना एहि दिशा मे कार्य कऽ रहल छथि। हुनक एहि योगदान मे समाज आ सरकारकें सहयोग देबाक आवश्यकता अछि।

एहि हेतु मनोवैज्ञानिक धरातल पर युवाकें सबसँ पहिने अपन

आंतरिक उन्मेषकेँ जगेबाक जरूरत छैन्ह। हुनका अपन रचनात्मक अओर क्रियात्मक शक्तिक क्रियान्वित करबाक हेतैन्ह। ई सब एहन अनुभवजन्य आ व्यवहारिक प्रक्रिया अछि जाहिसँ युवा देशक गरीबीक संग संग अपन बेरोजगारी पर विजय पाबि सकैत छथि। तखन हुनका सरकारी योजना पर नहि निर्भर होमय पड़त आ नहि अपन दुर्भाग्य आ औचित्य-अनौचित्य केर खामियाजा भुगत पड़तैन्ह।

युवा मे एहि प्रकारक वैचारिक प्रबलताकेँ दृढ़ करबाक लेल अपन अस्तित्व बोधकेँ समृद्ध करय पड़तैन्ह। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे विगत चारिम सँ सातम शताब्दि धरि अधिकांश यूरोपियन देश मे अस्तित्ववादक लहर चलल जाहि मे कामू, काफ्का, किरकेगार्ड, सार्त्र, साइमन द बुआ, नीत्से सन चिंतक सब युवा मे अस्तित्वबोधक अपरिहार्यता केँ प्रश्रय देलैन्ह। अस्तित्वक अहसास व्यक्ति मे महामानव धरि के उपलब्धि कराबैत अछि। इएह नहि वरन् चिंतनक विराट मानस पटल पर समस्त भारतीय वाङ्गमय केर उद्भव आ विकास भेल अछि। एहिसँ प्रभावित भऽ विश्वक अस्तित्ववाद सन चिंतनधारा विकसित भेल अछि। ताहिसँ एहन ऐतिहासिक भूमिका वाला देशक युवा मे अप्रत्यक्ष आंतरिक क्षमता विद्यमान अछि।

गरीबी सन विषमता सँ जूझि रहल राष्ट्र केँ गरीबी उन्मूलन करनाय देशक युवाक प्रथम दायित्व बनैत छैन्ह। जौं मैथिल युवा अपन भीतरक ओज, साहस आ सक्रियता केँ यथार्थ कऽ धरातल पर अंजाम दैथ तऽ ओ स्वरोजगारक दिशा मे कुटीर आ गृह-उद्योगक माध्यम सँ अपन समाज मे आर्थिक क्रांति आनि सकैत छथि अओर सामाजिक चेतनाक नव आयाम केर दिशा मे मोड़ि सकैत छथि। स्वरोजगार कऽ जीवन स्तरकेँ गतिशील केला सँ बेरोजगारीक समस्या स्वतः समाप्त भऽ जाएत। जतय बेरोजगारी सन कोढ़ खत्म होएत आ गरीबी सन संक्रामक त्रासदीक होएबाक प्रश्ने नहि उठत।

युवा मे एहि प्राकारक आत्मचेतनाक स्फुरण हुनका पूर्णतः क्रियात्मक बनेबाक बल प्रदान करैत अछि। ई हुनका एहन स्थान पर आनि दैत अछि जतय सँ हुनका लेल बहुमुखी विकासक दिशा स्वतः आभासित होइत चलि जाएत अछि आ ओ देशक ओहि आधारशिला पर आबि जाइत छथि जतय सँ देशक समृद्ध इतिहास मूर्तिमान भऽ सकैत अछि।

एहि प्रकारेँ ई कहल जा सकैत अछि जे मैथिल युवाक आंतरिक शक्ति, अन्तरसंकल्प आ अन्तरउन्मेष एकटा एहन प्रबलतम शक्ति अछि जे हुनका भारतक युवावर्ग आत्मसात करैथ, अनुभव करैथ आ समुन्नत कऽ दिशा प्रचेष्टित होथि तऽ देशक गरीबी सदाक लेल उन्मूलित भऽ जाएत एहि मे कोनो शंका नहि। ❐

मैथिल युवा वर्गक विभिन्न क्षेत्र मे योगदान

जय प्रकाश लाल दास

आजुक मैथिल नवयुवक अपन ज्ञान, अनुभव, शिक्षा आदिक बले अपन रोजगारक क्षेत्र स्वयं चुनैत छथि। ओ अपन रूचि अनुरूपेँ शिक्षा आ रोजगार केँ चुनैत छथि चाहे ओ विज्ञान, अभियन्त्रण, मेडिकल, फैशन, साहित्य, कला वा आन कोनो क्षेत्र होए अओर ओहि क्षेत्र मे उच्च शिखर धरि पहुँच रहल छथि। जेना मैथिल ललना भावना कंठ, अद्विका लड़ाकू विमान उड़ाबैत छथि, तऽ फैशन क्षेत्र मे अपर्णा कंठ विश्व भरि मे मिथिला केँ मान बढ़ौलैन्ह। सिनेमा क्षेत्र मे प्रभात प्रभाकर, अनिल मिश्रा, भाष्कर झा (हिन्दी सिनेमा मे नागेन्द्र झा जीक योगदान केँ बिसरायल नहि जा सकैत अछि) तऽ विज्ञाक क्षेत्र मे अमलेन्दु कृष्ण अपन परचम लहरा रहल छथि।

मैथिल युवा अपन मेधा आ प्रतिभाक बल पर देशक कोना कोना मे उच्च पद पर अपन सेवा दऽ देशक उन्नति मे अपन भागिदारी दऽ रहल छथि। एतबे नहि ओ अपन प्रतिभा सँ अपन उपस्थिति देश सँ बाहर विदेश (इंग्लैण्ड, अमेरीका, जापान) धरि बिखैर रहल छथि जकर प्रमाण अछि मोटोरोला कम्पनीक CEO संजय झा, बोईंग ईण्डियाक CEO प्रत्युष कुमार। संगीतक क्षेत्र मे मैथिली ठाकुर देश-विदेश मे मिथिलाक नाम उज्ज्वल कऽ रहल छथि।

सबसँ महत्त्वपूर्ण बात जे आर्थिक रूपसँ कमजोर आ पिछड़ल मिथिलांचलक माटिक

शक्तिक बलेँ ई सब एहन उच्च शिखर पर पहुँचि रहल छथि। मैथिल युवक अपन अभिभावकक मार्गदर्शन आ आशिर्वादक बलेँ प्रथम सोपान सँ उच्च शिखर धरि पहुँच प्रगतिशील भऽ रहल छथि। ई अपन मिथिला आ देशक लेल अत्यंत गौरवक विषय थिक। ❐

नव वर्ष

डॉ. शेफालिका वर्मा

साल बितैत अछि
पता नञि की भऽ जाएत अछि लोग कें
तऽ
दिन वएह राति वएह
भोरक सूरज - किरिन सएह
कखनो कुहेसक तर सँ मुस्काइत
तऽ कखनो लाजक घोघ सँ हुलकैत
ई खेल सौंसे साल पहिनुक जकाँ
चलैत रहैत अछि।

पाछु घुरि कें तकैत छी सब किछु
फिलिमक रील जकाँ चकचका जाएत अछि
मुदा कोनो स्पष्ट कोनो अस्पष्ट
नव वर्ष आयल
साँचे बदलल
तखन तऽ हम 2019 सँ
2020 लिखय लगलौंह
मुदा एतेक अन्हार किएक अछि।

हम देख नञि पाबैत छी
नव वर्ष मे की की होएत
तैं हमर सब अपराध बिसरायब
नव वर्ष मे एहिना प्यार हमरा
करैत जायब
नव वर्ष मंगलमय होए अहाँक।

विरह वेदना

सुरेन्द्र शैल

चान पूनम निरखि हिय धड़कन बढ़ल
केहन भागो लिखल विधि एकसरि रहब
पहु बैसल विदेश सुधि घुरियो नञि लेल
नहि पतियो लिखल नञि पठाओल सनेश
नभ बिजुरी छिटकि हिय कम्पन बढ़य
मास साओन बरसि घृत पावक पड़य
स्वेद मुक्ता वदन ठोर अमृत भिजय
गात पाथर बनल गेह टपटप चुअय
दढ़ आंगी नञि नूआ बचल सजना
दृग लाजे झुकल अंग झांपव कोना
बेंग ढौंसा कुबोल शोर झिंगुर करय
पीत काया बनय कोंढ़ धकधक करय
निशि तारा गनी काहि काटी दिवस
सेज फेरी करोट निन्न बैरिन बनल
नोर नैना बहल मास साओन चढ़ल
धार गंगा जमुन बहि आंचर भिजल
हे चानक मयूख लखि दुरगति हमर
कनि नेने समाद जाह प्रीतम नगर
तन धधकल अनल छाऊर होएत जखन
प्राण उड़वो करत व्योम पी पी रटत
महि सजनी भेटत नञि आकाशे सजन
शैल जिनगी मिलन आस पूरत कखन।

रहय कर्मस्थली मिथिले मे

डॉ. संजीव शमा

चिंता जुनि करी, हाथ माथ नञि धरी,
समय व्यर्थ नहि जाए,
जयतु मैथिली मिथिला गान करी,
तकर किछु करू उपाय।

जय जनक सुते सुषमा समन्वित
जगदम्बा माँ जानकी,
जतय जनक नंदिनी सुस्मित
हासिनी ओतय केयो आन की।

मिथिले जननी जन भार हरू,
धरू वरन रूप अनुप,
शक्ति स्वरूपे भय क्लेश हरू,
धरू नवल जलद स्वरूप।

ज्ञान-सुधा-गुण विस्तार हुअय
हृदय हर्षक संचार हुअय,
सुर-नर-मुनि वन्दन करथि,
जनक सुताक अवतार हुअय।

रहय कर्म स्थली मिथिले मे,
हे जननी! तकर वरदान दिअ,
नहि तऽ एहि भूमंडल सँ
हे मातु! हमरा झट छाँटि दिअ।

लड़की अल्हड़

सुधा कुमारी जूही

कहियो काल कऽ याद आबय अछि,
छौंड़ी ओ हड़बड़ आ सुन्नर।
चहकैत-हंसैत चिड़ै-चुनमुन सन,
गामक एकटा लड़की अल्हड़।।

गाछ पर चढ़ि लताम खाइत,
गाछक तर मे जामुन बीछैत।
नोकसी लगा कऽ जिलेबी तोड़ैत,
बुइय्याम मे सँ अचार चोराबैत।

गोटी, कितकित, आसपास खेलैत,
हो जाड़, गर्मी वा पतझड़।
चहकैत-हंसैत चिड़ै-चुनमुन सन,
गामक एकटा लड़की अल्हड़।।

आमक गाछी मे झूला झुलैत,
पोखरि मे हेलबाक कोशिश करैत।
खेत मे मटर, खेसारी तोड़ैत,
अंगने-अंगने हकार पुरैत।

रोम-रोम मे भरल भोलापन,
संगी सभ संग बाजय बड़-बड़।
चहकैत-हंसैत चिड़ै-चुनमुन सन,
गामक एकटा लड़की अल्हड़।।

ओकरे हम परछाईं एखन धरि,
ओ हमर व्यापक स्वरूप अछि।
ओ हमर मोनक मार्गदर्शक,
अंतर केँ जीवंत रूप अछि।

ओहि जूही सँ भेट जौं होइए,
हमर मोन भऽ जाइए हरियर।
चहकैत-हंसैत चिड़ै-चुनमुन सन,
गामक एकटा लड़की अल्हड़।।

पूसक राति

स्वाती शाकम्भरी

पढ़ने रही, प्रेमचंदक कथा
'पूस की रात'
कोना हल्कू
अन्हरिया रातिक
हाड़ कपबैत जाड़ मे
जमींदारक खेतक
करैत अछि ओगरबाहि
आ, कोन स्तिथि परिस्थिति मे
बितबैत अछि
ओ पूसक राति संग मे
जबरा कुकुर सेहो
पूसक अन्हरिया राति
होइत अछि एहन
जेना, भोरका सुरूज
लऽ लेने होए संन्यास
द देने होए, अपन गरमी
कोनो सुखी सम्पन्नक
रूम हीटर मे
वा मखमल सनक
जयपुरी रजाई मे
जौं नहि तऽ
किएक भऽ जाइछ
इहलीला समाप्त
हेजक हेज, गरीब गुरबाक
इएह पूसक राति मे
आ, चेथड़ी भऽ जाइछ
सब सरकारी दावा
ई चेथड़ी ओढ़ने
गरीब गुरबा केँ
बचाबय बेर।

इस्कूल जाइत छि हम

किशन कारीगर

इस्कूल जाइत छि हम
झोड़ा मे कॉपी किताब नेने
स्कूल बैग मे टिफिन रखने
कूदैत फंगैत हँसैत गबैत
स्कूल जाइत छि हम।

टेम टेम पर पढ़ब-लिखब
अ आ आई हम सीखब
पएरे पएरे, स्कूल गाड़ी मे बैसि
हमहुँ आई स्कूल जाएब।

अपने मने कहियो भिंसरे उठब
सबसँ पहिने मुहँ-हाथ धोअब
भूख लागत तऽ जलखै करब
फेर कनि काल पढ़य लेल बैसब।

इस्कूलक घंटी हमरा शोर पारै
मास्टरजी कतेक नीक खिस्सा सुनाबैथ
नहा-सोना कऽ छि हम तैयार
मम्मी-डैडी हमरा स्कूल दऽ आबैथ।

किताब मे कतेक नीक डाँरी पाड़ल
सीलेट भट्टा पर लिखब नीक लागल
देखि-देखि हम डाँरी पाड़लौंह
रंग भरल स्केच केहन हँसी लागल।

आई कतेक लोक इस्कूल एलय
धिया-पूता सभ हँसलय-कनलय
सभ मिली फेर पढ़य लगलय
मास्टरजी केर कतेक नीक लगलय।

इस्कूल मे नबका ज्ञान सीखब
पढ़ब-लिखब आ खेलब-धूपब
दोस-महिम संग सलाह आ झगड़ा
कतेक नीक किताबी ककहरा।

चिड़ै आ मनुक्ख

संजय कुमार कर्ण

चिड़ै उड़ि जाइत अछि
स्वेच्छा सँ, आकाश मे!
पंख खोलि सकैत अछि
सम्पूर्णता सँ, आनंद मे;
बिनु रोकटोक।

हम सबल मनुक्ख भऽ
हिलियो नहि सकैत छी!
जेल मे जेना सकपंज छी,
अपना चिंता ओ खगता संगे,
बान्हल छी बिनु डोर।

चहुँओर सँ बान्हल
बुद्धिमान मनुक्ख कें देखि,
चिड़ै खिलखिलाइत अछि!
निश्चिंत जीबैत जाइत अछि,
तुच्छ नजरि हमरा दिश फेरी।

निर्बुद्धि चिड़ै जिबैत अछि
आ मरि जाइत अछि, परञ्च
हमरा जकाँ रोज नहि
मरि मरि कऽ जिबैत अछि,
चिंता सँ चिता धरि।

ओहि बुद्धिक मादे,
अपन उड़ै बला पंख पर,
हम कतेक जिनगी ढोए छी!
सदिखन फड़फड़ाइत छी,
उड़ैत चिड़ै दिस तकैत।
चिड़ै सँ नेहोरा केलहुँ-
बदलि ले हमरा सँ जिनगी!
बुद्धि, बल ओ सत्ता संगे,
मालिक भऽ जो सभहक;
बिनु रोकटोक।

उड़ि गेल खिसिया कऽ तत्क्षण,
हमरा अप्पन मुद्दै बूझि!
विवश भऽ हम सोचि रहल छी,
मनुक्ख ओ चिड़ै मे -
हम की चुनब अगिला जनम!

खेदित देखि चिड़ै चहकल-
हम जीबैत छी एकहिटा जीवन,
अस्तु आनंदपूर्वक उड़ैत छी!
अहाँ संगे लदने छी कतेको जिनगी,
तैं नहि उड़ि सकैत छी हमरा जकाँ,
बिनु रोकटोक।

गामक सुख

आनन्द दास

गामक सुखक खातिर, गाम आबैये पड़त,
माटि मे ऊँघराईये पड़त, खेत जाईये पड़त।

कतेक दिन लवानक सुख छोड़बै,
जाऊ गाम आ खेतो पर जाऊ।
फूल-अक्षत लऽ, पूजा करि, उसरगि,
मुट्ठीभरि धान काटि, बाबा अँगना लाऊ।

माए करौति ई सब, तऽ करैये पड़त,
अस्तित्वक अवलोकन खातिर,
गाम जाईये पड़त।
गामक सुखक खातिर, गाम आबैये पड़त।

चैति दुर्गा बिसरने काज कोना होएत,
माँ भगवती सँ क्षमा मांगी, सेवा कऽ आऊ।
खूब खरीदू चूड़ी-लहठी आ संगे फोटो
खिचाऊ।
जाऊ-जाऊ... मेला घुमि, नाच देखि,
जतरा दिन जलेबी सेहो खाऊ।

समय करबाओत ई सब, तऽ करैये पड़त,
जौं मोन मे बसल अछि नटुआ-नाच,
तऽ गाम आबैये पड़त।
गामक सुखक खातिर, गाम आबैये पड़त।

आबै छी तऽ आऊ, 8-10 दिन गाम रहि जाऊ,
दूटा भोज खा आऊ, एकटा भोज कऽ आऊ।
टिकुला तोड़ि चटनी आ मोझी के झक्खा खाऊ,
आऊ-आऊ... गाछी घुमि, मचान पर सुति,
उठि खूब झूला झूलि आऊ।

खटी हाथ नहि बेचब गाछ, अपने करैये
पड़त,
जौं जुराबैकें अछि गाछी मे गाछ,
तऽ गाम आबैये पड़त।
गामक सुखक खातिर, गाम आबैये पड़त।

कपूरी देवी

आगि

रमेश कुमार

आगि लागल सगरो दिश देखू
नहि अछि कतहु बाँचल,
देशक हाल जुनी पुछु बाबू
हाल अछि बिलकुल बिगड़ल।

नेता जनता खेल करैयै
चटिया बीच मे कूदल,
छोड़ छाड़ि अध्ययन अध्यापन
गुरु जी एहि सँ जुड़ल।

मंहगाईक आगि अछि लागल
बेरोजगारी केर मेला,
पढ़ि लिखी कऽ युवक बेचैत छथि
नगरे-नगरे केला।

शिक्षा बनल व्यापार आब देखू
पैसे सँ भेटत डिग्री,
आगि लागल शिक्षण संस्थान मे
करैत अछि डिग्री बिक्री।

खाना खोराकीक हाल जुनि पुछु
कि अछि आई सस्त,
देश लुटैत छथि नेतागण
जनता सब भेल त्रस्त।

बात करब जौं नेतागण सँ
देताह बात धुमाय,
कहता देश बदलि रहल अछि
रोजगार बढ़त होएत कम मंहगाई।
जी डी पी मे आगि अछि लागल
औंधे मुँह गिरैयै,
भाषण जतेक देताह नेतागण
देश तऽ आब जड़ैयै?

देश बचाऊ आब सब मिली-जुली
जुनि राखू कोनो क्लेश,
देश भारत सभहक थिक
आग्रह करैत छथि 'रमेश'।

करू विचार

सोगारथ सोम

चैं - चैं चिं - चिं भऽ गेल सोर,
लगय यऽ जेना भऽ गेल भोर।
बाप - बेटा संगहि लोटा लऽ,
चललाह दूनू जन संगहि भिर पर
महिला सभ पर करू विचार,
ओ सभ बेचारी थिकैथ लचार।
साउन - भादव केर बाटने पुछु,
बाट चलैत होए आँखि झाइप लु।
बैसल छथि जेना पांडट लगेने,
लगैय लोटा लऽ भोज खाइये।
इज्जत नहि ओना करू निलाम,
शौचालय केर करू निर्माण।
स्वच्छ समाजक लिय आई शप्पत,
लाऊ समाज केर विकासक पथ पर।

समय-चक्र

विजय बाबू

समय अहाँ आबय छी समय सँ
मुदा समय सँ चलियो जाए छी,
समय अहाँक शिकार मे हम, आ
ब्योंत मे सदिखन अहाँ रहैत छी।

अहाँक सोझा आबि बूझि नञि
जानी नहि हम की की पबैत छी?
कतेक कुंठा सेहो गड़ल अछि
बीत सँ अहाँ दहाड़ि रहल छी।

समय अहाँक अकल्पनीय परिधि मे
सब संगहि चलय, प्रयास मे छी,
अहाँक राह बिनु रोड़ा, हमरा सँ जुदा
संगहि लेल झटकारि रहल छी।

मोनक कोन मे दर्द एक शूल सन,
हँसि दैत छी तैयो बसंतक फूल सन।
काल-कालक मध्यक अंतराल मे
उमंग स्वाधीनता सँ पाबि रहल छी।

समय अहाँक अद्वितीय चाल मे
हम बालक उम्मीद कें सटने रहै छी,
देखू, एहि चाल मे कोनो चाल चलू नञि
हम शिष्ट बनि संग चलि रहल छी।

बेटी पढाओ बेटी बचाओ

सबिता झा 'सोनी'

ईस्कुल मे सोमनाथ सरजी बड्ड प्रसिद्ध छलाह 'बेटी पढाओ बेटी बचाओ' अभियानक प्रचार-प्रसार करबा लए। हुनक दूनू धिया सेहो ओहि ईस्कुल मे पढ़ैत छलीह आ अपन पिता पर बड्ड गर्व करैत छलीह जे पुत्र सँ बढि कऽ धिया कें मानैत छथि पिताजी। सोमनाथ सरजी कें फेर तेसरो संतान धियाक रूपमे जन्म लेलैन्ह। सगरो गाम मे शोर भऽ गेलैन्ह... जे मास्टर साहेब पुत्रीक बड्ड स्नेह आ सम्मान करैत छथि, गाम मे फेर सँ ओ बड़का भोज जागल!

गामक लोक - "बधाई यौ सरजी अहाँ धिया प्रेमी छी, फेर सँ लक्ष्मी एलीह!"

बड़की बेटी - "बाबुजी... बाबुजी यौ!

मास्टर जी - "की भेलौक... किए अनघोल केने छैं...!"

बेटी - "यौ बाबुजी आब तऽ सौंसे गाम मे हल्ला अछि जे एहि खुशी मे मास्टर साहेब भोज करथिन ... ठीके यौ बाबुजी??"

सरजी - "भगलैं एतह सँ...! एह... हम भोज करैत छी..! कहलकै जे... ई हमर ईस्कुल नहि घर अछि.... बेटी हमर कुल कें नहि डेभत... 'बेटी जन्माऊ कुल कें डूमाऊ' .....!

दूनू धिया अपन पिताक मुँह दिस ताकैते रहि गेल...!

❐

दुश्मन

भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश'

भाय जी यौ एगो बात कहौं।

- हँ किय नञि यौ, दू टा बाजू।

- हे जकरा कोनो उपाय नञि हैत, तकर आई-काल्हि हजारगो दुश्मन हैत।

ओ बाजल, "से कना यौ।"

- आब देखियौ नञि बेचारा बुधना केर खाय कें उपाय नञि अछि, मुदा बाजय छल, "मालिक हमर जान केर दुश्मन भऽ गेल छथि।"

- से किएक?

- मालिक बुधना केर ऊपर झूठ-मूठ केर इलजाम लगाबैत छथि, "जे हमरा खेत सँ बूट उखाइर लेलक आ साग बनाए खाय गेल।"

ओ बाजल - "इहो कोनो दुश्मनीबला बात भेल?"

- चुप रहू आ अप्पन मोन मे रखू नञि तऽ अहुँ मालिक केर दुश्मन भऽ जाएब।"

❐

मेला

प्रभाष अकिंचन

दाई गे.... चल नञि मेला घुमय...।

- रूक न रे बौआ, पहिले दुर्गाजी कें खोंइच भरय दे... फेर देखैत छियै।

आ दाई झटकारैत मंदिर मे घुसि गेलीह।

- आब चल दाई मेला मे... हमरा एकटा मोटर, एगो पीपही आ बैलून जल्दी कीन दे।

दाईक आंचरक खूट पकड़ि कऽ राजू खिंचौत जिद्द करय लागल...।

आंचरि सम्हारैत दाई बजलीह - रौ बौआ, तोहर बाप सौये टका देनहे रहौ, ओहिमे की की कीनबौ... आ सब पाई तऽ पूजे मे खतम भऽ गेलौंह।

- हे, ले... एगो जिलेबी खो आ घर चल।

कानैत छिरियाईत राजू कें डेन पकड़ने दाई घिसियाबैत गाम दिस विदा भेलीह।

❐

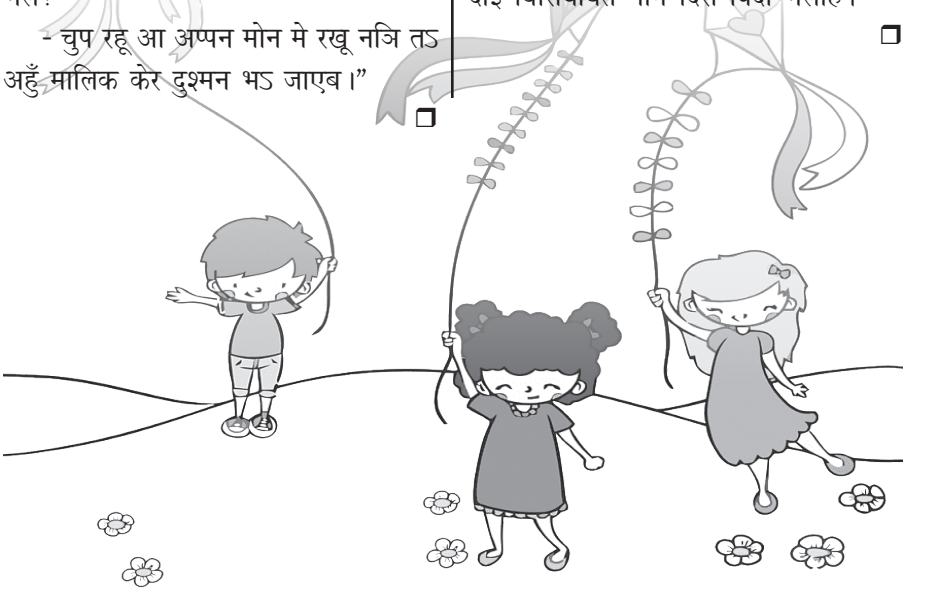

दहेज विरोधी अभियान

वनीता ठाकुर

दहेज विरोधी अभियानक रैली सँ लौटल छला रामभद्रजी। खानदानी लोक छथि। सत्ताधारी दलक स्थानीय नेतृत्त्वकर्ता सेहो छथि। संग लागल कार्यकर्त्ता सेहो छलैन्ह।

दरबज्जा पर किछु गोटे बैसल छलथिन। घरबैया पर नजरि पड़िते नमस्कारक मुद्रा मे ठाढ़ भऽ गेलाह।

नेताजी बीच मे राखल कुर्सी पर बैसैत बाजि उठलाह, "अहाँ लोकनिकेँ स्पष्ट कहि चुकल छी। शर्त मंजूर तऽ बात आगाँ बढ़य, नञि तऽ बात खतम।"

ई कहि नेताजी फ्रेस होएबाक लाथे कोठरीक भीतर चलि गेलाह। कार्यकर्त्ता लोकनिक जिज्ञाशा बढ़लैन्ह, पूछि बैसलथिन - "अहाँ लोकनि केँ छी? नेताजी सँ की शर्त?"

एकटा भद्र सन व्यक्ति बजलाह - "हे यौ हमरा कन्यादान अछि। नेताजीक बालकक उदेश मे आयल छि, से ई 10 लाख टाका आ एकटा स्कार्पियो माँगि रहल छथि।"

दहेज विरोधी अभियानक पर्चा-पोस्टर लेने कार्यकर्त्ता गुम्मे रहि गेलाह।

अप्पन सप्पत

पूनम झा

हेगै माए!!!! दूध बचलो छौ आ की सबटा बेच एलही? - 10बर्षक घुरना अपन माए सँ पुछक।

"छै रौ, तोरो लेल छौ। हईया ले।" गिलास मे दूध दैत माए बाजल।

"गै ई तऽ पाईन सनके लगै छै। तू पाईन फेंट कऽ देलैं?"

"नै रे, बौआ! एक्को रत्ती पाईन नञि देलियौ। अप्पन सप्पत।" माए घुरना केँ विश्वास दियाबैत कहलक।

"ऐं गै माए! ...तोरा सँ जहाँ कियो पूछै छौ कि पाईन तऽ नञि मिलेने छैं, तऽ तूँ सबकेँ कहै छीही 'अहाँक सप्पत' आर एखन 'अप्पन सप्पत' किएक खाई छीही?" - घुरना दूधक गिलास मूँह मे लगाबैत पुछलक।

"बौआ रे! ओ सब तऽ आन छै तूँ तऽ हमर अप्पन छैं।" माए घुरनाक माथ पर स्नेह सँ हाथ फेरैत बाजल।

समझौता

घनश्याम घनेरो

मार मुँह धऽ कऽ। ककबो गायब।
- अतै तऽ अछि, लिअ!
- एहन केशो नञि देखलौंह?
- श्रृंगार छैक, नहुँए नहुँ।
- कप्पार छैक! तेल अछिए नहि।
- आ धूत! प्रकार फरमाउ।
- कथिक?
- श्रृंगारक?
- सोलह।
- ओतबे ने?
- इएह तऽ स्त्री मे घटी बेसीक दुविधा रहैत अछि।
- स्त्रीक श्रृंगार पुरुषक आमदनी पर।

(**साभार :** उपरान्त - पृष्ठ संख्या 27)

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

2015
Corporate Trophy
Winner

Jitendra Narayan Dutta
Insurance Advisor
M.: 9818389612, 9910952191

Office : 31B, Jeevan Pravah Building, District Centre, Janak Puri, New Delhi-110058

Resi. : H.No. 957, Plot No. 18B, Kh. No. 281, Street No. 14B, Uttrakhand Enclave Part-II, Shastri Park Extn., Natthupura, Burari, New Delhi-110084

E-mail : sbkdutta@gmail.com

मात्र कानून सँ स्त्रीक खिलाफ अपराध रोकब असंभव

आई-काल्हि महिला सुरक्षा खास कऽ यौन अपराध पर जबर्दस्त बहस छिड़ल अछि। किछु तहिना जेना एक दौर मे दहेज हत्या चर्चा मे रहय। ई बात उचिते जे निर्भया सँ दरिंदगी कँ सात साल बादो एखन धरि कोनो दोषी कँ फांसी नहि भेलै, ताहि सँ लोकक धैर्य जवाब दऽ देलकैक अओर जखन कोनो एहन नया कांड होइत छैक तऽ लोकक आक्रोश सातम आसमान पर पहुँच जाइत छैक। हैदराबादक कथित एनकाउंटर सहित विभिन्न घटना पर दिल्ली केर तेज-तर्रार पूर्व डीसीपी, सामाजिक कार्यकर्ता आ मिथिलाक सपूत आमोद कंठ सँ खास बातचीत पेश अछि। आमोद कंठ कोनो परिचयक मोहताज नहि छथि। ई समस्तीपुर स्थित गाम चौता रेवाड़ी सँ ताल्लुक राखैत छथि आ ओतय हिनक कतेको प्रोजेक्ट चलि रहल छैन्ह। हिनक किरदार पर एकटा चर्चित फिल्म 'बिकनी किलर' सेहो बनाओल गेल छैक। राष्ट्रपतिक पुलिस मेडल सँ सम्मानित 1974 बैचक आई.पी.एस अधिकारी कंठ 34 बरख धरि पुलिस सेवा केलाक बाद 2008 मे सेवानिवृत्तिक बाद देश भरि मे लावारिस आ वंचित बच्चा सभहक पुनर्वास, शिक्षा आदि पर प्रयास नामक संस्थाक जरिये काज कए रहल छथि।

कठोर कानूनक बावजूदो महिला आ बालिका सभहक संग दरिंदगी किएक नहि थमि रहल अछि? एकरा रोकबाक की उपाय थिक?

नारी सुरक्षाक अनेक आयाम अछि। मात्र यौन अपराधेटा नहि, ई स्पष्ट भऽ जेबाक चाही। हालांकि आई-काल्हि यौन अपराधक चर्चा बहुत ज्यादा भऽ रहल अछि। तऽ हम चाहब जे पहिले यौन अपराधक बात करी। यौन अपराधक बारे मे एकटा पुलिस अधिकारीक नाते हमर अनुभव ई अछि जे, बहुत साल सँ काफी पैघ स्तर पर ई समस्या छैक। कोन कारण सँ केवल पुरुष यौन अपराध करैत अछि आ नारी किएक नहि करैत छथि ई विचारनीय प्रश्न अछि। खास कऽ हम चुँकि बच्चा सब पर काज

गोविन्द चन्द्र दास

करैत छी तऽ कहि सकैत छी जे लड़की आ लड़का दूनूक संग यौन अपराध होइत छैक। 2007 मे बच्चा सब पर एकटा अध्ययन भेल रहय 'वर्ल्ड स्टडीज ऑन चाइल्ड एब्यूज'। ताहि समय मे हम अरूणाचल प्रदेशक पुलिस महानिदेशक रही आ एहि स्टडीक टीम लीडर रही। करीब 18000 व्यक्तिक साक्षात्कार केने रही आ वएह संयुक्त राष्ट्रक सेहो अध्ययन रहय। ताहि रिपोर्ट मे खुलि कऽ ई बात सामने आयल जे 50 सँ 52 फीसदी बच्चा कोनो नञि कोनो तरहक यौन अपराधक शिकार अछि। वएह अध्ययन केर आधार पर प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम सेक्सुअल औफेंस एक्ट (पॉक्सो कानून) बनल रहय। मुदा निर्भया केसक बाद

2013 मे क्रिमिनल लॉ एमेंडमेंट एक्ट बनल। जाहिमे यौन अपराधकेँ पुनः परिभाषित कएल गेल। ओकर दायरा बढ़ा देल गेल, जाहिमे छेड़छाड़, पाछा केनाए, शारीरिक संबंध आदि के शामिल कएल गेल। 1999 मे रेप क्राइसिस इंटरवेंशन सेंटर केर स्थापना कएलहुँ, जे आब देश भरि मे 250 ठाम काम कऽ रहल अछि। अओर निर्भया फंड सँ एकर फंडिंग भऽ रहल अछि। एकरा माध्यम सँ ई मुकम्मल प्रयास कएल गेलैक जे स्त्रीकेँ यौन आघात सँ बचायल जाए। हम स्वयं ब्रिटेन, अमेरिका मे जा कऽ देखलहुँ जे महिला सुरक्षाक वास्ते भारतवर्ष मे जेहन काम भऽ रहल अछि, तेहन व्यवस्था दुनिया मे अओर कतहु नहि अछि। ई तऽ एकटा आयाम भेल।

कानून नहि, मानसिकता बदलय पड़तैक। एक-सँ-एक कठोर कानून बनल मुदा, आई 40 साल बाद समस्या मे कमी हेबाक चाहय छल, मुदा आश्चर्य! सड़क पर महिलाक प्रति अपराध तखनो रहैक आइयो छैक। गांव होए वा महानगर सबठाम अलग-अलग रूपमे स्त्रीक प्रताड़ना भऽ रहल छैक।

जतय धरि नारी सुरक्षा केर बात अछि त महिला मजबूत तऽ बहुत होइत छथि। हिनका मे एक खास किस्मक मानसिक ताकत होइत छैन्ह। हुनक शरीर मे बर्दाश्त करबाक अत्यधिक क्षमता छैक, तैं ओ जे कऽ सकैत छथि ओ पुरुष नहि कऽ सकैत छथि। शायद पुरुष मे मात्र ताकत केर इस्तेमाल करबाक नजरिया होइत छैक। सामाजिक, सांस्कृतिक आ ऐतिहासिक परंपरा मे महिला केँ एकटा एहन स्थान पर राखि देल जाइत छैन्ह। चाहे ओ परिवार मे होए, सड़क पर होए वा कामकाज मे होए हुनका सेफ्टी, सिक्योरिटीक आवश्यकता होइत छैन्ह। एकटा स्पेस केर जरूरत होइत छैक, जतय ओ सुरक्षित रहि सकैथ। हमरा सबकेँ बूझए पड़त जे स्त्री सुरक्षा किएक अओर कोन ढंगक?

सवाल छैक जे अपराधी केँ कि कानूनक भय नहि छैक आ ओ बेखौफ भऽ अपराध करैत अछि। एहि पर अंकुश कोना लगतै?

हम एकटा पुलिस अधिकारी छलहुँ आ आई सँ नहि, एक मुद्दत सँ महिला सुरक्षा सँ जुड़ल रही। हमरा स्मरण अछि जे हम 1979-80 मे दक्षिण दिल्लीक डीसीपी रही आ ताहिसँ पहिने किरण बेदी डीसीपी रहथिन। हम बहुतो एहन केस डील कएलहुँ। जौं तखन कानून रहितै तऽ की होयतै? तखन परिवार मे महिलाक प्रताड़ना, पति-पत्नीक झगड़ा आ दहेज हत्या (ब्राइड बर्निंग) केर बहुत केस चलि रहल छलैक आ तकर बहुत चर्चा रहैक। हालांकि सड़क पर महिलाक प्रति अपराध तखनो रहैक आईयो छैक। छोट गांव होए, शहर होए वा महानगर होए, सबठाम अलग-अलग रूपमे स्त्रीक प्रताड़ना होइत रहलैक। आई 40 साल बाद समस्या मे कमी हेबाक चाही छल, मुदा आश्चर्य! घरेलू हिंसा आ दहेज हत्याक खिलाफ धारा 498 ए जाहिमे महिला केँ जबर्दस्त प्रोटेक्शन भेटल। कार्यस्थल पर यौन प्रताड़नाक खिलाफ कठोर कानून सन तमाम कानून बनल। मुदा महिला वा लड़की आईयो ओतबे असुरक्षित अनुभव कऽ रहल छथि, जतेक तखन असुरक्षित महसूस करैत छलीह। हम पुलिस केर दृष्टिकोण सँ देखैत छी तऽ स्थिति मे मामूली परिवर्तन कहल जा सकैत अछि।

त एकरा रोकबाक की तरीका छैक?

देखियौ, जौं हम ई कही जे एकरा रोकि दी वा पूरा खत्म कऽ दी तऽ ई असंभव अछि। ई कोशिश नहि जानि अहाँ कोन हद धरि कऽ पायब। जौं अहाँ कानून बनेनाय आ ओकरा लागू करबाक कोशिश केँ अपराध केँ रोकनाय मानैत छी तऽ किछु हद धरि रूकियो रहल होए शायद। इहो भऽ सकैत अछि जे पहिले कानून रहबे नहि करय आ छलैहो तऽ बेहद कमजोर रहैक। ताहि सँ केस दर्ज हेबाक कोनो सवाले नहि रहैक। केस तऽ कानून बनलाक बाद दर्ज भेनाय शुरू भेल। पहिले सिर्फ दुष्कर्म रहय, अस्मिताक अनादर वा अश्लील साहित्य वा अश्लिल गतिविधि रहैक। आई देखियौ हर तरहक कानून बनि गेल अछि। साइते दुनिया केँ कोनो देश मे एतेक कठोर आ एतेक विशाल कानून हेतै, जेहन भारतवर्ष मे छैक। तैयो अपराध नहि थमि रहल छैक। दरअसल पहिल चीज मानसिकता होइत छैक। अपराधी केँ सेहो मानसिकता होइत छैक। बतौर पुलिस अधिकारी हम बता सकैत छी जे कोनो अपराधक वास्ते इंटेंशन, मोटिव, नॉलेज आ एक्ट चाहियै। ई सब शुरू कतय सँ होइत छैक। मानसिकते सँ, हर अपराधक जन्म होइत छैक। ई बड़ा विचित्र बात छैक जे महिला, माए-बहिन अहाँकेँ जन्म दैत छथि, अहाँ हुनका एहन मुकाम पर ठाढ़ कऽ दैत छियैक, हुनका पर आघात करय छियैक जे ओ क्यो होथिये नहि। अंत मे इएह कहल जा सकैत अछि जे मानसिकता बदलय पड़त। एकर अलावा जागरूकता आ एहन माहौल बनाबय पड़त, जाहि मे आदमी केँ मजबूर कऽ दियौक जे ओ गलत काम नहि करय। जेना 'मी टू मूवमेंट' भेल। एहि अभियान सँ लोक मे घबराहट भेलय। हर कामकाजी पुरुषक संग काज केनिहार महिला केँ कोनो तरहें यौन प्रताड़ना भेलय तऽ 'मी टू' एकटा झटका तऽ देलकै! एहि अभियान मे एक-सँ-एक पैघ लोक देखार भेलाह। की सही, की गलत? ई अलग कहानी छैक, मुदा एहिसँ दबाव पड़ैत छैक। चाहे व्यक्ति क्यो हुए मुदा ओकरा ऊपर अंकुश तऽ लागैत छैक। एहि बारे मे जागरूकता होए आ लोक एक्ट करय तऽ एहन मामिला मे कमी तऽ हेतैक। कानूनक क्रियान्वयन बड्ड ज्यादा महत्वपूर्ण होइत छैक आ अहाँ एकटा लॉ एंफोर्समेंट अधिकारी सँ बात कऽ रहल छी, जे जिनगी भरि (34 साल) कानून केर क्रियान्वयन केलक। लॉ एंफोर्समेंट अधिकारीक दृष्टिकोण सँ हम देखलियै जे नाकामी होइत छैक ओ क्रियान्वयन मे होइत छैक।

हैदराबाद कांड कें अपने कोना देखैत छियै? की पुलिस पर महिला डॉक्टरक परिजनक गंभीर आरोपक बाद ओ अपन कलंकक दाग साफ करबा वास्ते आ जनताक कोपभाजन सँ बचय लेल सब आरोपी कें एनकाउंटर कऽ देलकै?

सवाल ई छैक जे, जे किछु भेलै ताहि पर हम सब खुलि कऽ बात नहि कहैत छी, कियो नहि कहैत छथि। मुदा हम पुलिस अधिकारी रहि चुकल छी। हमरा पता अछि जे एनकाउंटर कोना होइत छैक। की तमाम तैयारी होइत छैक। ई जे तथाकथित एनकाउंटर अछि, बहुत बेतुका बुझना जाइत अछि। एहि मामिला मे राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, तेलंगाना कें हाईकोर्ट आगाँ आबि गेल छैक। आब तऽ सुप्रीम कोर्ट सेहो एकटा समिति बना देलकैक। जज सब पता करबे करथिन। मुदा सरकम्सटांशियली ई बहुत बेतुका बुझाइत अछि। सच पूछी तऽ पुलिस कें ई नहि करबाक चाही आ जौं ओ केलक तऽ एहिमे पुलिस कें बड्ड भारी नुकसान हेतैक। ई गलत छैक एहन नहि हेबाक चाही। ठीक अछि निर्भया केस मे 7 साल भऽ गेलैक आ एखन धरि ताहि मे केकरो फाँसी नहि भेलैक मुदा जनाक्रोश कें शांत करबाक एहन प्रयास नहि हेबाक चाही। राजीव गांधी हत्याकांडक सी.बी.आई. कें बतौर डीआईजी हम देखैत रही। मामला कें 29-30 साल भऽ गेलैक। ताहि मे मृत्युदंड खत्म कऽ ओकरा उम्रकैद मे बदलि देल गेल तऽ अहाँ की करबै? हम सुनलौंह जे राष्ट्रपतिजी अजीब बयान दऽ देलाह। ओ कहलथिन जे पॉक्सो केस मे दया याचिका खत्म कऽ देबाक चाही। गुस्ताखी माफ राष्ट्रपतिजीक बारे मे एहन बात नहि कहबाक चाही, मुदा ई तऽ बड्ड बेतुकी बात अछि। अधिकतर मर्सी पिटीशन मे देरी तऽ राष्ट्रपतिजीक ओतय सँ होइत छैक। जखन हुनका लग फाइल पहुँच गेल, तऽ ओ कोनो जज तऽ छैथ नहि, हुनका कोनो ट्रायल तऽ कराबक नहि छैन्ह। हुनका लग सब पाकल-पकायल मटीरियल छैन्ह। ओकरा पढ़ू, बूझू आ दू-तीन दिन मे फैसला सुना दियौ। तऽ एकर स्थान पर कहैत छथिन्ह जे मर्सी पिटीशन खत्म हेबाक चाही!

कहय छैक जे 'जस्टिस डिले इज जस्टिस डिनाइड' तऽ डिनाई तऽ नहि भेलय, मुदा एहन मामिला मे काफी देर होइत छैक तऽ दुःख होइत छैक।

हालहिं मे सुप्रीम कोर्ट पॉक्सो कें मामिला मे बड्ड पैघ पहल केने छल, जाहिमे हमरा शामिल होएबाक मौका भेटल। हमरा अवसर भेटल तऽ हम काफी डिटेल मे गेलहुँ। हम देखलहुँ जे पॉक्सो के 2.24 लाख केस अछि। काफि देर भऽ रहल छल तऽ सुप्रीम कोर्ट हर 100 केस पर एकटा स्पेशल कोर्ट बनेबाक निर्देश देलक। देशक क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम मे बड्ड कमी छैक ताहि जस्टिस डिनाई कें बात तऽ खत्म हेबाके चाही। दरअसल 'अपराध न्याय प्रणाली' बड्ड बदतर स्थिति मे छैक। एहन मे चाहे विक्टिम होए वा आरोपी न्याय हासिल केनाय बड्ड मुश्किल छैक। जतेक केस होइत छैक ताहि मे 25 फीसदी मामिले मे सजा होइत छैक। तऽ इएह मानय पड़त जे बाकी केस मे लोक निर्दोष छैक। 40-50 फीसदी लोक निर्दोष होइत अछि। भऽ सकैत अछि जे ओकरा फँसायल गेल होए। ई तमाम बात क्रिमिनल जस्टिस सिस्टमक नाकामिये तऽ छैक। हर व्यक्ति टालय चाहैत छैक, देर करय चाहैत छैक। जाँच होए वा ट्रॉयल न्याय केनाए बड्ड दूरक बात छैक।

तऽ एहिमे शिथिलता बुझाइत अछि, चाहे ओ ज्यूडीशियल सिस्टम होए वा पुलिस सिस्टम?

ई सब एक्के थीक। मतलब ई सब 'क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम' केर हिस्सा छैक। जेना 'जुवेनाइल जस्टिस सिस्टम' छैक तहिना ई। चाहे पुलिसक भूमिका होए, वकीलक भूमिका होए, कोर्टक भूमिका होए वा जेल सुधारक बात। अहाँकें पता अछि प्रथम स्वाधीनता आंदोलनक बाद 'इंडियन पुलिव एक्ट' 1861 मे बनलै विद्रोह कें दबेबाक वास्ते। तेकर बाद आईपीसी, सीआरपीसी आदि कानून। ताहि मे बुनियादी परिवर्तनक जरूरत छैक। भारतक लोकक वास्ते न्याय पद्धति एकटा अजीब चीज छैक। जकर आम सँ लऽ कऽ खास किनको जानकारी नहि छैन्ह।

करियर केर शुरूआत अध्यापन सँ भेल, मुदा एतेक साल बाद पुलिस सेवा लेल कोना प्रेरित भेलहुँ?

हम पटना विश्वविद्यालय सँ एम.ए. केलहुँ। तकर बाद लेक्चररक रूप मे अध्यापन शुरू भऽ गेल। किछु दिन जमशेदपुर मे काज केलाक बाद हम आदिवासी सभहक वास्ते लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज शुरू केलहुँ। दू साल ओतय काम केलाक बाद करीब एक साल मजिस्ट्रेट रहलहुँ। आ तकर बाद भारतीय पुलिस सेवा (आई.पी.एस.) मे आबि गेलहुँ। एकरा लेल कोनो प्रेरणा नहि छल। आम उम्मीदवार जकाँ यू.पी.एस.सी.क तैयारी केलहुँ आ बनि गेलहुँ आई.पी.एस. अधिकारी। पुलिस सेवा हमरा लेल कोनो प्रेफर्ड सर्विस नहि रहय, मुदा जखन एहिमे आबि गेलहुँ त कतेको मौका भेटल। हर तरहक एसाइनमेंट भेटल आ काफी रोचक रहल।

गुस्ताखी माफ मुदा राष्ट्रपतिजीक बड्ड अजीब बयान सुनबा मे आयल। ओ कहलथिन जे पॉक्सो केस मे दया याचिका खत्म कऽ देबाक चाही। अधिकतर मर्सी पिटीशन मे देरी तऽ राष्ट्रपतिजीकें ओतय सँ होइत छैक। हुनका कोनो ट्रायल तऽ कराबक नहि छैन्ह। हुनका लग सब पाकल-पकायल मटीरियल आबैत छैन्ह। ओकरा पढ़ू, बूझू आ दू-तीन दिन मे फैसला सुना दियौ।

अहाँ राजीव गांधी हत्याकांड, जेसिका लाल हत्याकांड, शेयर घोटाला, जैन हवाला डायरी सन बेस हाईप्रोफाइल केसक जाँच केलहुँ। तऽ एहन जाँच मे कतेक दबाव रहैत छैक?

देखियो राजनीतिक दबाव तऽ बड्ड बेसी रहैत छैक। पोलिटिकल पावर, मनी पावर आ नौकरशाहीक सेहो दबाव रहैत छैक। जे रसूखदार लोक छैथ जेना धनाढ्य, उद्योगपति वा राजनेता ओ केसकेँ बेस प्रभावित करैत छथिन। उदाहरणक लेल जेसिका लाल कांड भेलै। जाहि राति जेसिकाक मर्डर भेलै, ओहि राति दिल्लीक करीब 50 फीसदी वी.वी.आई.पी. ओतय मौजूद रहथि। हमरा ओहि केसकेँ इंवेस्टिगेट करय पड़ल आ जे भेलै अहाँकेँ पते अछि। ओहि केसकेँ खत्म करबाक लेल हर कोशिश कएल गेलै। हमरा सबकेँ बेस

'मी टू' सन अभियान चलेला सँ दबाव पड़तै आ लोक सचेत होएत तऽ दरिंदगी मे कमी हेतय।

मेहनत करय पड़ल, किएक तऽ लोअर कोर्ट आ सेशन कोर्ट दोषीकेँ बरी कऽ देलकैक। हाईकोर्ट मे हमसब जोरदार तैयारी कएलहुँ। मीडिया जे केलक से केलक, किएक तऽ कतेक बेर मीडियाक कारणेँ सजा नहि होइत छैक। हालांकि कतेक बेर हेबो करैत छैक, खैर...। हमसब बड़ मोश्किल सँ ओहि केस केँ ओवरकम कऽ सकलहुँ। किएक तऽ जे मुख्य दोषी रहय ओ बहुत पैघ जकांग्रेसी नेताक बेटा रहय। ओकर सभहक पूरा तैयारी रहय। तहिना जैन हवाला केस, एहि केस मे वी.आई.पी. दोसर व्यक्ति छल। एहि केस मे एकटा पूर्व प्रधानमंत्री, एकटा पूर्व राष्ट्रपति, 22-23 एहन लोक रहैथ जे मुख्यमंत्री, कैबिनेट मंत्री, गवर्नर आदि रहि चुकल छलाह। एकर अलावे एक-सँ-एक ब्यूरोक्रेट, उद्योगपति आदि शामिल छलैथ। जाहिर छैक जे हुनकर सभहक प्रभाव तऽ पड़बे करतै। आ केस केँ की भेलै? हमसब केस दायर केलियै, मुदा हमर बॉसे एक ढंग सँ इंफ्लूएंस कऽ केस केँ खत्म कऽ देलथिन। (हंसैत) आ अंत मे जे बचलै ओकरा अदालत मे सी.बी.आई. ओकरा पूरा कऽ देलकैक।

फेर न्याय कहां भेलई?

देखियौ भारतीय न्यायिक प्रणाली तऽ पूरा-केँ-पूरा पैसाक खेल छैक। लोक बड्ड बेसी हस्तक्षेप करैत छैक। कोनो केस केँ उठा कऽ देख लियौ, अहाँकेँ ओहिना बुझा जाएत। हालांकि काफी कुशल संस्थान सब सेहो छैक। जेना सी.बी.आई., जेतय हम 4 साल काम केलहुँ। मुदा इएह सब केस केँ लऽ कऽ हमरा एक्सटेंशन नहि भेटल। जतय 4 आर 3 कुल 7 बरखक एक्सटेंशन भेटैत छैक हमरा चारिये बरख मे रफा-दफा कऽ देल गेल आ तकरा बाद किछु दिन दिल्ली पुलिस मे रहि अओर फेर मिजोरम पहुँच गेलहुँ। सवाल छैक जे ई तऽ हेबे करैत छैक। जौं अहाँ सच्चाई धरि पहुँच जाए आ सही साक्ष्य भेट गेल तऽ चाहे सी.बी.आई. मे किएक नहि रहि, एकरा बाद ओतय टिकनाय केर उम्मीद कमे रहैत छैक।

अहाँ उपहार अग्निकांड सनक त्रसदी देखने छी। हाल मे अनाज मंडी मे भेल भीषण अग्निकांड केँ नरसंहार कहनाय गलत नहि हेतैक। एकरा लेल केकरा जिम्मेदार मानय छियै?

सही बात छै। दखियौ एतय केँ जे नगर निगम अछि, चूँकि फायर सेफ्टी वला सँ ज्यादा जिम्मेदारी म्यूनिसिपल बॉडी केँ होइत छैक। ताहि मे जतेक भ्रष्टाचार छैक, पैसाक खेल होइत छैक ओतय शायद कतहु नहि छैक। एकर अलावे जे तंत्र छैक चाहे पुलिस हो वा फायर सर्विस केँ लोक होथि ई सब एकरा स्वीकार करैत चलल जा रहल छथि। एहिसँ एहने स्थिति उत्पन्न होइत छैक जेहन ट्रेजडी अनाज मंडी मे भेलैक।

हर बेर इएह होइत छैक। हादसा भेल, जाँच भेल आ पूरा मामला कवरअप भऽ जाइत छैक। कतहु तऽ जिम्मेदारी तय हेतैक?

हमरा दू साल पुरानी दिल्ली मे काम करबाक अवसर भेटल। हम मध्य दिल्लीक डी.सी.पी. रही। एहि इलाका केँ करीब 50 फीसदी मकान फिल्मिस्तान, दरियागंज धरि पसरल छैक। ई सब एहन जगह छैक जतय पुरान मकान, कारोबार आ इंडस्ट्री छैक। एकरा सभहक वास्ते कोनो कानून नहि छैक। एतय उपराज्यपाल छथि, चीफ मिनिस्टर छथि। हर आदमी एक दोसरा पर आरोप-प्रत्यारोप कऽ रहल छैथ। जेना हुनकर जिम्मेवारी नहि होइन। फायर सर्विस बला एमसीडी पर, एमसीडी दिल्ली सरकार पर आ सरकार एलजी पर। हिनक एकटा संगठित प्रयास हेबाक चाहियैन्ह, मुदा से हमरा देखबा मे नहि आयल।

'प्रयास'क विचार कोना आयल, एकर जन्म कोना भेलैक?

'प्रयास'क पैदाइस इत्तेफाक सँ भेलैक। 1985 से 1990 धरि हम डी.सी.पी (क्राइम) रही। तखन बहुत भयानक समय रहय। सिख दंगा भेल रहय। दिल्ली आतंकवादक सबसँ पैघ अड्डा बनि गेल रहय। हजारो ड्रग पैडलर आ उपयोगकर्ता रहय। माने नशाक भयानक कारोबार छल। एकरा अलावे संगठित अपराध पनैप रहल छल। ताहि दौर मे गुमशुदा आदमी सभहक एकटा छोट यूनिटक सेहो जिम्मेदारी हमरे लग छल। रोज सांझ धरि 40-50 बच्चा सबकेँ पुलिस पकैड़ कऽ आनैत छल। जाहिमे किछु कामकाजी बच्चा, किछु सड़कक बच्चा आ किछु छोट-मोट बदमाशी करयबला बच्चा सब। ओकरा सबकेँ कतय राखल जाए ई एकटा बड्ड पैघ समस्या रहय। एकर अलावे ओकर खान-पान, शिक्षा, कौशल विकास आदिक व्यवस्था केनाए। ताहि समय मे जहांगीरपुरी मे एकटा झुग्गी बस्ती मे बड्ड पैघ अग्निकांड भेलैक। सैकड़ो बच्चा सड़क पर आबि गेलय। हमरा लागल एहन बच्चा सभहक वास्ते किछु करी आ हम जहांगीरपुरी मे एकटा सेंटर खोलि देलियै। हमरा ताहि मे तखनुक एल.जी. एच.एल. कपूर जीक सेहो मदति भेटल। आ एहि प्रकारे 'प्रयास'क

जन्म भेल। आई 31 वर्ष बाद संस्था मे 800 कर्मचारी कार्यरत छथि आ 200 सँ ज्यादा सेंटर काम कऽ रहल अछि। कम शब्द मे एतबे कहि सकैत छी जे जतय जरूरी भेलय, हम काम केलहुँ।

एते सब हेबाक बावजूदो बाल मजदूरी, तस्करी आ रेडलाइट पर बच्चा भीख माँगैत देखल जाएत अछि?

बहुत कोशिश कएल गेल, मुदा तमाम कोशिशक बावजूदो आई धरि समस्या छैक। ई सही अछि जे बच्चा एखनो रेडलाइट पर भीख माँगैत देखल जाएत छैक। दरअसल एहि बच्चा सभहक माता-पिता सब गरीब छथि आ ओ सब रोजगारक तलाश मे दूर प्रदेश सँ आयल अछि। पति-पत्नी सेहो काम कऽ रहल छथि आ ओकर बच्चा सब सेहो एहि तरह काम कऽ रहल अछि। ई बड्ड अजीब स्थिति छैक। एहन बच्चा सबकेँ मिसयूज होइत छैक, जे खुद ओकर माए-बाप करैत छथि।

सालों अपराध आ अपराधी सँ जूझबाक बाद राजनीति मे अएबाक विचार कोना आयल?

राजनीति मे एबाक कोनो विचार नहि छल। राजनीति मे हम कहियो नहि एलहुँ आ नहि कोनो पार्टी ज्वाइन केलहुँ। बस गलती सँ एकटा चुनाव लड़लहुँ, उहो एहिना... तखन शीला दीक्षित दिल्लीक मुख्यमंत्री छलीह। हुनका सँ हमरा घनिष्ठ संबंध छल। प्रयास मे सोनिया गांधी केँ सेहो किछु प्रायोजित बच्चा रहि रहल अछि। हुनका सबकेँ बुझाइत रहैन जे हमरा सन व्यक्ति केँ सक्रिय राजनीति मे एबाक चाही। तऽ ओ एक बेर हमरा चुनाव मे अजमेलाह। मुदा हमरा तुरंत बुझबा मे आबि गेल जे हर व्यक्तिक वास्ते राजनीति नहि होइत छैक। राजनीति मे बहुत नीको लोक छथि तऽ हुनका धन चाहियैन्ह, संसाधन चाहियैन्ह। एकर अलावे किछु हथकंडा सेहो अपनाबय पड़ैत छैह, जे हमरा वश मे नहि छल। हम फैसला कऽ लेलहुँ आ तखनहि राजनीति छोड़ि देलियै। हमरा लग एतेक काम अछि जे जौं हम राजनीति मे रहितहुँ त ओकर समाधान नहि कऽ पबितहुँ जे अखन कऽ रहल छी।

दुबारा मौका मिलत त.....

कहियो नहि। राजनीति मे नहि जेबाक हमर फैसला अटल अछि। सच पुछू तऽ हम गेले नहि रहि। जे पहिले सँ सार्वजनिक जीवन मे छैक तकरा जौं चुनाव लड़ा देबै तऽ कि ओ राजनीति छै? एक-सँ-एक पैघ हस्ती जे राजनीति मे छैथ ओ ऊ काम नहि कऽ पाबैत छथि जे हमसभ बिना राजनीति मे गेले कऽ रहल छी। राजनीति मे लोकक अपेक्षा बड्ड अजीब होइत छैक। हम जाहि संस्था सँ जुड़ल छी, ओतय 35-40 हजार लोक रोज आबैत छथि। बताऊ जे कोन एहन संस्थान छैक जतय एतेक पैघ तादाद मे लोक आबैत छथि।

अहाँक किरदार केँ लऽ कऽ एकटा फिल्मो बनल अछि ताहि बारे मे किछु बताबियौ?

दरअसल ओ हमर एकटा केस छल। चार्ल्स शोभराज तिहाड़ जेल सँ फरार भऽ गेल छल। एहन फरारी शाइते पहिने दुनिया मे कतहुँ भेल हेतय। बड़ भयानक आ विचित्र घटना रहय। हम डी.सी.पी. क्राइम रहि तऽ ओ केस हमरा भेटल। हम तिहाड़ मे काफी समय बितेलहुँ आ बेस गहराई सँ ओहि केसक जाँच कएलहुँ। शोभराज केँ गोवा सँ गिरफ्तार कएल गेल आ कतेको दिन धरि ओ हमर कस्टडी मे रहल। ओकरो बुझैलै जे हम ओकरा बुझि लेलियै। ओ अखनो काठमांडूक जेल मे बंद अछि। जखन ई फिल्म बनि रहल छल तऽ फिल्मक दल ओकरा सँ भेंट करबाक वास्ते गेल। पहिने तऽ ओ चलाकी देखेलकै, मुदा जखन पता चललै जे आमोद कंठ फिल्म केँ सपोर्ट कऽ रहल छथिन आ हुनकेँ कहानी पर ई फिल्म बनि रहल अछि त ओ कहलक जे "उनको मेरा सलाम कहियेगा"।

अहाँ एते तरहक भूमिका मे रहलौंह तऽ सबसँ नीक काम अहाँकेँ कोन लागल?

आई जे हम काम कऽ रहल छी ऊ अंतहीन छैक। ई हम एहि दुआरे कऽ रहल छी किएक तऽ ई हमरा हृदयक करीब अछि आ नीक लागैत अछि। हम एकरा सिर्फ कामेक दृष्टिकोण सँ देखैत छियैक। प्रयास होए वा अन्य संस्था ई सब सोचि कऽ नहि केलियै जे हम कोनो पैघ आ अनोखा काज कऽ रहल छी। हमरा बुझना गेल जे ई हमर जीवनक हिस्सा अछि आ बस अनायास वा सायास ई काम शुरू भऽ गेलैक। पहिले हम जे किछु केलहुँ ताहि सँ बेसी महत्वपूर्ण कार्य आब कऽ रहल छी। जतय धरि संतुष्टि केर बात छैक तऽ जेसिका लाल हत्याकांड जकरा सब खत्म करबा पर आमादा रहय आ फैसला पलैट गेल रहए तऽ ताहि केस केँ हम ओतय सँ निकाइल कऽ अनलहुँ। केस सँ जुड़ल राजनेता खिलाफ रहैत, हमर सीनियर आ पूरा डिपार्टमेंट एकर खिलाफ रहय। होम मिनिस्ट्रीक शीर्ष लोक खिलाफ रहैथ। हर आदमी केसकेँ खत्म करबा लेल पूरा तागत झोंकि देलखिन। अंततः एकरा अंजाम धरि पहुँचेलहुँ। केस तऽ एक-सँ-एक डील केलहुँ मुदा जेसिका केस मे हमरा सबसँ बेसी संतुष्टि भेटल।

मिथिलांगन केँ माध्यम सँ अपने खास कऽ मिथिलांचलक युवावर्गकेँ की संदेश देबय चाहबै?

मिथिलांचल कोनो बहुत अमीर जगह नहि अछि। एकरा गरीबीक वास्ते सेहो जानल जाइल अछि, मुदा मिथिलांचलक लोक खास कऽ युवा मानसिक दृष्टि सँ बड्ड प्रबुद्ध छथि। देशक कोनो इलाकाक लोकक मुकाबला मिथिलाक लोक कऽ सकैत छथि। विलक्षणताक कोनो कमी नहि छैन्ह, मुदा ओ एखन धरि अपन दिमाग केँ ठीक ढंग सँ इस्तेमाल नहि केलैथ। मिथिला केँ खास कऽ युवावर्गकेँ चाहियैन्ह जे ओ किछु करैथ अ करबाक अर्थ एकदम सीधा होइत छैक। एकरा वास्ते कोनो लंबा चौड़ा छलांग मारबाक जरूरत नहि। बस अगिला कदम अहाँक। अपन आसपास केँ महसूस करैथ आ परिवर्तन आनबाक कोशिश करैथ। वएह परिवर्तन बड्ड पैघ परिवर्तन आनैत अछि। ❐

स्त्री बलिक बकरा, विचार तऽ खटिक कैं करक छैक

ई एकटा ज्वलंत समस्या अछि, जे संपूर्ण भारत मे भऽ रहल अछि। संगहि तुरंत उजागर सेहो भऽ रहल अछि। नारीक प्रति ई अपराधक रूप एक्के छैक, मुदा कारण अनेक। एतय सभ बदलाक भावना सँ होईत अछि। कतेक ठाम स्त्री कैं नीचा देखा कऽ परिवार सँ बदला लेल जाईत अछि। युद्ध मे हारल राजाक परिवार आ राजाक स्त्री संग बलात्कार आ अपहरण होइत रहलै। संपूर्ण पुरुष समाजक बर्बरता स्त्रीक लेल अक्षुण्ण छैक, घरक बाहर अपना-पराया सभहक संगे। पुरुषक सोचक विषय कैं एहन स्थिति मे की कएल जाय? स्त्री, बलिका बकरा छै, विचार करक छैक खटिक कैं।

कारण : तात्कालिक कारण अछि अतिशय जनसंख्या, बेरोजगारी आ तज्जनित कुंठा। आभासी दुनिया मे पोर्न साइट देखनाहार किशोरक पृष्ठभूमि देखल जाओ। गली-गली मे ड्रग्स आ उत्तेजक पिल्स भेटैत अछि। मोबाइल सभहक हाथ मे अछि, जाहिमे पोर्न साइटक भरमार अछि। कुंठाग्रस्त मेकैनिक, फिटर, ड्राइवर, गार्ड कोटिक लोक ताहिसँ उत्तेजित भऽ कुकृत्य पर उतारू भऽ जाईत अछि।

वातावरणक परिवर्तन शिक्षा-दीक्षा मे समाज मे परिलक्षित होइत अछि। स्कूली शिक्षा मे प्रार्थना, मोरल क्लासक समावेश अनिवार्य रूपसँ हेबाक चाही। नैतिक शिक्षा खेल, प्रायोगिक कक्षा मे होअए। कबड्डी, क्रिकेट,

डॉ. उषाकिरण खान
(साहित्यकार एवं पूर्व विभागाध्यक्ष मगध विश्वविद्यालय पटना)

डेंगापानी इत्यादि सामुहिक खेल मे शरीर संगे मोनक परिमार्जन होइत अछि। क्लासरूम सँ इतर मैदान मे भाईचारा, समूहभाव आत्मानुशासन आनैत अछि, से विलुप्तिक कगार पर अछि। युवाजन आउटडोर सँ कटि कऽ इनडोर गेम मे रूचि लेबय लागलाह से मनोमस्तिष्क कैं कुंद कऽ रहल अछि।

निवारण : समस्याक निवारण हेतु पोर्न साइट पर रोक लगैक, नशाक सामग्री वितरण पर रोक लगबाक चाही, जनसंख्या पर नियंत्रण हेबाक चाही। पुलिस कैं चौकस रहब अत्यंत आवश्यक अछि आ पुलिसक त्वरित कार्यवाहि जकाँ कोर्ट कैं सेहो तत्पर रहय पड़तै। प्रायः कोर्ट जमानत दऽ देल करैत अछि, ताहू कारणैं अपराध मे वृद्धि भऽ रहल अछि। नाबालिग जौं बलात्कार आ रक्तपात करय मे सक्षम अछि तखन ओकरा तकर तदनुरूप समाज मे कोनो छूट किएक? परिवारक लोक मात्र अपन स्वार्थ देखैत छथि, लड़कीक पक्ष नहि सोचौत छथि। ताहि लेल किएक कोनो तरहक संवेदना हुए?

पुरुष जाति कैं विचारक चाहियैन्ह ओ तऽ अदौ सँ समाज मे घूमैत रहैत छथि। ओएह प्रवृत्तिक उचित आकलन आ निवारण कऽ सकैत छथि। हुनका विमर्श करक चाहियैन्ह। कर्त्ता हुनकैं जाति, स्त्री तऽ दुःख भोक्ता छथि। तैं ई विषय थिक पुरुष विमर्शक। ❐

गोविन्द च

आभासी दुनियाक मायाजाल मे सब कंग

बलात्कार एकटा मानसिक बीमारी भऽ गेल अछि, जे बदलैत जमानाकैं बड्ड पैघ अभिशाप भऽ गेल छैक। ई भयानकता कतहु अओर सँ नहि मुदा, एहि यांत्रिक आ वैज्ञानिक जमाना सँ उपजल अछि। यंत्र रचित मनुख आई संवेदनहीन भऽ गेल अछि। एकर प्रमुख कारण अछि लोक मे शिक्षा आ संस्कारक अभाव, जे परिवार सँ आरम्भ होइत अछि। कहलो गेल अछि charity begins at home। शिक्षाक अर्थ प्रायः लोक साक्षरता सँ लगाबैत छथि। मुदा आधुनिक परिवेश मे शिक्षाक अर्थ साक्षरता मात्र नहि रहि कोनो बच्चा आ युवाक मानसिक क्षमताक विकास भऽ सकय, अज्ञानताक अंधकार दूर होए। एहेन चेतना जागृत हेबाक चाही, नीक-अधलाह, कर्तव्य-अकर्तव्य, उचित-अनुचितक निर्णय स्वविवेक सँ कऽ सकय। मोरल वैल्यूजक

डॉ. शेफालिका वर्मा (लेखिका)

किताब प्रत्येक स्कूल मे कीनल जाएत अछि, मुदा ओहि पोथीक पन्ना कहियो उनटायल नहि जाएत अछि। तैं ई विकृत मानसिकता, अनगढ़-अनपढ़ बालिग सँ नाबालिग धरि लेल अनिवार्य अछि।

आई निर्वासित सन चौराहा पर देशक अतीत दंडित अछि। पएर सँ रौदैत यांत्रिक मानव बेतहाशा भागि रहल अछि। ओकर एक्के लक्ष्य हैवानियत, वासना मे जड़ैत-पजड़ैत मानव... मुदा ई मानव कैं? पढ़ल-लिखल युवा विद्यार्थी नहि, कथमपि नहि। ई सभ छथि अशिक्षाक अन्हार सँ लड़ैत विकृत मनोवृत्त। मानव मस्तिष्कक सफाई हेबाक आवश्यक अछि, जाहिठाम काम, क्रोध, पाशविक प्रवृत्ति

शुरूये मे बच्ची कें लोकक स्पर्शक अर्थ बुझएबाक चाही

समस्त भारत मे आई दुष्कर्म शब्द प्रभृत्त जघन्य कुकृत्य एकटा ज्वलंत मुद्दा बनि गेल अछि। एहि विकराल समस्याक समाधान हेतु एकरा जड़ि मे जएबाक प्रयास कएल जा रहल अछि मुदा ओ खुब समधानल नहि भऽ रहल अछि। जखन कतहु ई घटना होइत अछि लोक सरकार, कानून व्यवस्था आ मीडिया पर अपन आक्रोश निकालैत छथि। वर्तमान परिस्थिति मे एहि समस्याक हेतु कड़ा आ प्रभावी हल निकालब आवश्यक भऽ गेल अछि।

हमरा जनैत प्राथमिक पाठशाला सँ एहि दिशा मे काम शुरू कऽ देबाक चाही। कारण प्रायः सुनय मे आबैत अछि कि स्कूलक संचालक, शिक्षक, दरबान, ड्राइवर वा सहपाठी द्वारा बच्ची प्रताड़ित होइत रहैत अछि। तैं शुरूये मे बच्ची कें लोकक स्पर्शक अर्थ बुझएबाक चाही। अपन सभ्यता ओ संस्कारक विषय मे धीआ-पुता कें शिशु अवस्थहि सँ सीख देबाक चाही। सही उमर मे सेक्स संबंधी शिक्षा देबाक चाही। समाज मे पोर्नोग्राफी, अश्लील विज्ञापन आ द्विअर्थी गीत पर रोक लगक चाही।

अवश्य एहि जघन्य अपराधक निदान हेतु त्वरित कार्यवाई हेबाक चाही। दुष्कर्मीक विरूद्ध त्वरित कार्रवाई भेला सँ एहन कुत्सित मानसिकतावला व्यक्तिक मन मे भय हेतैक आ ओ कोनो कुकृत्यक विचार सँ पहिने हजार

डॉ. अरुणा चौधरी
(रीडर, मैथिली विभाग
मगध महिला कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय)

बेर सोचत। वर्तमान समय मे स्त्री घरक देहरी सँ बाहर निकलि अपन पहचान बनाबय मे लागल अछि तऽ घर एबा मे देर-सबेर हेबे करतैक। एहन स्थिति मे लोकक ई परामर्श जे स्त्री एकगर नहि निकलथि, जे देर राति धरि बाहर नहि रहथि, की ई संभव छैक? स्त्री घरे मे नुकायल रहय आ पाशविक प्रवृत्तिक बलात्कारी स्वतंत्र आ निरंकुश रहैथ ई कतय कें न्याय छैक?

निवारण : एहि दिशा मे कारगर पहल करक परिवारक बहुत पैघ जिम्मेवारी छैक। लोकक मन मे कानूनक भय हो वा नहि मुदा अपन परिवार सँ लाज ओ भय अवश्य होइत छैक। परिवार मे बेटी जकाँ बेटाकें सेहो सही संस्कार देल जाए। बेटीकें घर एबाक समय सीमा राखैत छी तहिना बेटाकें सेहो एहि परिधि मे बान्हू। बेटाकें लड़कीक सम्मान केनाए शुरूये सँ सिखाबय पड़त। स्त्रीकें आत्मरक्षाक प्रति जागरूक होमय पड़तैन्ह। वर्तमान मे प्रायः स्कूल-कॉलेज मे जूडो-कराटे आदिक प्रशिक्षण देल जा रहल छैक। एहि दिशा मे अभिभावक कें बालिका कें प्रेरित करय पड़तैन्ह। एहि सबसँ सीख लऽ स्त्री आत्मरक्षा मे समर्थ हेतीह आ स्वयंक सुरक्षित राखि एकटा निर्भय-निष्कंटक जीवन जीवि सकै छथि। ❐

ाल; बलात्कार एकटा मानसिक बीमारी

आदिक नाश होए। मनुखक दिमाग पर श्रव्य काव्य सँ बेसी दृश्य काव्यक असर पड़ैत अछि। सिनेमा बड्ड पहिने पारिवारिक, रोमांटिक आ भक्ति भावसँ भरल रहय। देखतहिं-देखतहिं सिनेमाक रंग-ढ़ंग बदलि गेल।

बर्तोल्त ब्रेख्त कहने छथि, अहाँ सिनेमा मे परिवर्तन आनि लोक मे परिवर्तन नहि आनि सकैत छी, सिनेमा तखनहिं बदलत जखन लोकक जीवन स्तर बदलि जाएत। आई सबहक घर मे टीवी आतंकवादी जकाँ घुसि गेल। विज्ञापनक रूपेँ तरह-तरह दृश्य परोसय लागल आ पुनः पाँच इंचक मोबाइल हाथ मे। शिक्षित-अशिक्षित, वृद्ध बेदरा युवा सब कोए - देखैत रहु जे मन होइछ। तर्कशास्त्र मे शुरूए मे कहल गेल - man is a rational animal - यानी आदमी विवेकशील जानवर होएत अछि। कहल जाएत छैक कपड़ाक भीतर सब मनुख जानवरे होइत छैक, मौका भेटबाक चाही। माता-पिता अपन बाल-बच्चा मे संस्कार भरैथ। आई-काल्हिक फिल्म पर नाबालिग सबमें आपराधिक प्रवृत्ति, हिंसक आ पशुत्व केर उद्रेक होइत छैक ताहि पर रोक लगबाक चाही। जमाना बड्ड आगाँ बढ़ि गेल अछि, युग-युग सँ सतायल नारी जागृत भऽ रहल अछि, सब क्षेत्र मे अप्पन आधिपत्य जमा रहल अछि। मुदा बलात्कारक नवरूप, जवान तऽ जवान बच्चो कें हैवान सब नहि छोड़ि रहल अछि। निर्भया काण्डक बाद एहि घटनाक जेना बाढ़ि आबि गेल मुदा कतहुँ सँ निराकरणक कोनो आस नहि।

पुलिस बलात्कारी कें मारि देलक, तऽ कानून किएक अपन हाथ मे लेलक - भऽ सकैत अछि पुलिस कें ओहि मे अपन बेटीक, बहिनक छवि देखायल होए, खून खौलि गेल होए। सरकारकें बेटीक प्रतिष्ठा लेल संविधान बदलय पड़तै। त्वरित न्याय सबसँ जरूरी छैक। बलात्कारक कोनो केस लोअर कोर्ट, हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट सँ रिव्यू संग जतेक जल्दी भऽ सकय निपटारा भऽ जेबाक चाही। एहन केस मे राष्ट्रपति सँ दया याचनाक प्रावधान एकदम समाप्त क देवक चाही। ❐

साहित्य अकादमी पुरस्कार 2019

प्रत्येक वर्षक भाँति एहियो बेर साहित्य अकादमी विभिन्न भारतीय भाषा साहित्य मे हुनक सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक कृति लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार 2019क घोषणा कएलक। साहित्य अकादमी 18 दिसम्बर 2019कें हिनकर नामक घोषणा केलक, समस्त विजेता कें 24 फरवरी 2020 कें दिल्ली मे आयोजीत एकटा समारोह मे एकटा ताम्र पत्र अओर एक लाख टाका नगद पुरस्कार रूपें दऽ सम्मानित कएल जाएत। ज्ञातव्य हो जे 1955 एहि पुरस्कारक स्थापना कएल गेल छल, तखन एकर नगद राशि मात्र पाँच हजार टाका छल जे समयानुसार बढ़ैत गेल।

एहि वर्ष मैथिली साहित्य मे कुमार मनीष अरविन्द कें हुनक कविता संग्रह 'जिनगीक ओरिआओन करैत' कें साहित्य अकादमी पुरस्कार लेल चुनल गेल। एहि वर्ष निर्णायक मंडल मे प्रो. अमरनाथ झा, श्रीमती बीणा ठाकुर अओर डॉ. राज कुमार झा छलाह। एहि बेरक विचारणीय पोथी मे :- यक्ष प्रश्न (कथा) - धीरेन्द्र नाथ मिश्र, बहुवचन (आलोचना) - तारानन्द वियोगी, चितिर-बितिर (आलोचना) -रमानन्द झा 'रमण', उच्छ्वास (कविता संग्रह), गाछ रूसल अछि (कथा संग्रह) - कमलाकान्त झा, गुण-कथा (कहानी) - शिव शंकर श्रीनिवास, लोक विमर्श (निबन्ध संग्रह) - पंचानन मिश्र, जिनगीक ओरिआओन करैत (कविता संग्रह) - कुमार मनीष अरविन्द अओर अन्तहीन आकाश (कथा संग्रह) - इन्दिरा झा छल। ❐

साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 2019

वर्ष 2019 लेल साहित्य अकादमी युवा पुरस्कारक घोषणा कएल गेल। दिल्ली मे आयोजित एकटा समारोह मे हिनका लोकनि कें एकटा ताम्र पत्र अओर पचास हजार टाका नगद पुरस्कार रूपें दऽ सम्मानित कएल जाएत। एहि बेर मैथिली भाषा साहित्य लेल अमित पाठक कें हुनक गीत संग्रह 'राग-उपराग' लेल साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार हेतु चुनल गेल। एहि पुरस्कार हेतु निर्णायक मंडल मे एहि वर्ष डॉ. चन्द्रमणी झा, श्री लक्ष्मण झा, श्री श्याम दरिहरे छलाह। अओर विचारणीय पोथी मेः- अंशु बनि पसरि जायब (कविता) - अमित मिश्र, खुरचन भाएक कछमच्छी (व्यंग्य) - नवकृष्ण ऐहिक (रूपेश कुमार झा), गस्सा (लघु कथा) - सोनु कुमार झा, पह (कथा) - अभिलाषा, पूर्वागमन (कविता) - स्वाति शाकम्भरी अओर राग-उपराग (गीत संग्रह) - अमित पाठक छल। ❐

साहित्य अकादमी बाल साहित्य पुरस्कार 2019

एहि वर्ष साहित्य अकादमी द्वारा बाल साहित्य पुरस्कार 2019क घोषणा कएल गेल। दिल्ली मे आयोजित एकटा समारोह मे समस्त विजेताक लोकनि कें सम्मान स्वरूप पुरस्कार मे एकटा ताम्रपत्र अओर पचास हजार टाका नगद देल जाएत।

मैथिली भाषा साहित्य लेल एहि बेर ऋषि वशिष्ठ कें हुनक कथा संग्रह 'एक फूलक गुलदस्ता' लेल साहित्य अकादमी बाल साहित्य पुरस्कार हेतु चुनल गेल।

पुरस्कार हेतु निर्णायक मंडल मे श्री धिरेन्द्र नाथ मिश्र, श्री कामदेव झा, श्री अजीत आजाद छलाह। अओर विचारणीय पोथी मेः- अंशु बनि पसरि जायब (कविता) - अमित मिश्र, बाल-गोपाल (कथा संग्रह) - जगदीश प्रसाद मंडल, सोना आखर (कविता) - मिथिलेश कुमार झा, एक फूलक गुलदस्ता (कथा) - ऋषि वशिष्ठ (इलस्ट्रेशन-सुधीरजी मिश्र), सोनहुला इजोतवाला खिड़की (कविता) - सिया राम झा 'सरस' अओर बाल महाभारत (कथा संग्रह) - ऊषा किरण खाँ छल।

संगहि महाकांत ठाकुर जी कें सेहो बाल साहित्य मे हुनक योगदान लेल सम्मानित कएल गेल। ❐

शेषांश पेज नं. 5

सफलता जौं कोनो देशक देहसाधना होइत अछि तऽ संस्कृति ओकर अन्तर्मन आ अन्तश्चेतनाक द्योतक। जहिना देहक साज-सज्जा हेतु कोनो व्यक्ति द्वारा जे साधना कएल जाइत अछि, ओहिना संस्कृति हमर अन्तरक आवश्यकताक पूर्ति करैत अछि। प्राणिमात्रक कल्याणक कामना मे स्वार्थ, शोषण, उत्पीड़न कें कोनो स्थान नहि होईत अछि। "मा कश्चिद दुःखभाग भवेत" अर्थात् "कियो दुःखी नहि होथि" कें परिकल्पना भारतीय संस्कृति केर मूलभावना अछि। भारतीय संस्कृति केर एहि श्रेष्ठता आ उदारताक प्रशंसा पाश्चात्य देशक श्रेष्ठ विचारकगण समय-समय पर कएलैन्ह अछि। संगहि संसार मे स्वत्व स्थापित करबाक हेतु एहि सांस्कृतिक अवधारणा, हिंसक आँधी आ शोषण कऽ अग्नि सँ लड़बाक क्षमता प्रदान करैत अछि, अन्यथा मानवताक अस्तित्व दाँव पर लागि जाएत।

प्रत्येक व्यक्तिक अंग मे अपरिमित भंडार होइत अछि। हमर आँखि मे सूर्य, चन्द्र, सम्पूर्ण काया मे देवगण, शक्ति देवी हमर अन्तस मे, गणेश जी मस्तिष्क मे सरस्वती माता जिह्वा पर, चतुर्मुखी ब्रह्माजी हृदय मे आ शंकरजी नाभि मे निवास करैत छथि तइयो हमसब मृगमारीचिकाक पाछाँ भागि सुख शान्ति प्राप्ति हेतु एम्हर-ओम्हर भटकैत रहैत छी आ अन्ततः कालकवलित भऽ जाइत छी।

उदाहरणस्वरूप, रावण महान योद्धा, अति बलवान, बुद्धिमान, शिवभक्त राजा छलाह,

स्वर्णक लंका बनौलैन्ह समुद्र आ देवगणकें अधीन कएलैन्ह, परञ्च शांति कतय? भिखारी भेष बना जखने ओ माता सीताक अपहरण कएलैन्ह तऽ ओ भिखारी भऽ गेलाह। गलत, अनीति मार्ग पर जेबाक कारणें हुनक तेज, बल, बुद्धि, सद्गुण सभ नष्ट भऽ गेलैन्ह।

स्वामी विवेकानन्दजीकें स्मरण करैत हमसब गौरवान्वित छी मुदा आचरण करबा काल रावणक आत्मा हमरा भीतर प्रविष्ट कऽ जाइत अछि तऽ सब किछु व्यर्थ भऽ जाइत अछि। कलिकाल मे असुरक्षा, अनाचार, अनेकता, आराजकता आम बात अछि जाहि कारणें रूग्न मनःस्थिति स्वाभाविक। हमरा एहि दानवी शक्ति सँ युद्ध करय पड़त। विजयश्री तखने भेटत जखन हम रावणक जीवन केर मर्म आ अपन भीतरक दैविक शक्तिकें जगा सत्पथ, सत्कर्म मे लीन रहब।

❐

NEURO ENT CLINIC

Dr. Prashant Kr. Chaudhary

M.B.B.S., M.S., M.Ch.(Neurosurgery), [PGI Chandigarh]

9582181470

Senior Consultant Neurosurgeon :
ACTION CANCER HOSPITAL
SRI BALAJI ACTION MEDICAL INSTITUTE

Consultant for : Headache, Backache, Spondylosis
Nerve Weakness, Limb Weakness, Brain Tumor, Epilepsy, Disc

Dr. Deepti Chaudhary

M.B.B.S., M.S., (ENT)

8377954449

Consultant for : Ear, Nose, Throat, Sinus, Speech, Hearing

For Appointment Call : 9810970765, 8882074289, 9625184808

Clinic : Metro Pillar No. 803, Kakrola, Near Dwarka More, New Delhi-110078
Resi. cum Clinic : G-129, Pushkar Enclave, Paschim Vihar, New Delhi-110063

मधुश्रावणी

पीयूष रंजन 'राहुल'

कैथाहीवालीक अंगना मे आई हुइल मचल अछि। खूब चहल पहल अछि। जनानी जैत सब बिसहराक गीत गाबि रहल छथिन। सिमरीवाली ठेकुआक लेल आटा सानय मे लागल छथिन, पसीना सँ लथ-पथ। भारी भड़कम शरीर आ ताहि पर गेठियाक दर्द। लोर-पोटा सबटा खसय लागलैन्ह। नवहथवाली आ बलाटवाली दौड़ि कें हुनका पंखा करय लगलखिन। इजोतवाली कनिया हमेशा पटना शहर आ टिप-टॉप मे रहयवाली छथिन। काज करबा मे कोनो विशेष विश्वास नहि छैन्ह। मुदा लाजे पछे चूल्हा मे आगि पजारबाक उपक्रम कऽ रहल छथिन। जलेबीक भीजल जारैन हुनकर धैर्यक परीक्षा मे लागल अछि। चूल्हाक धुआँ सँ हुनकर आँखि लाल भऽ गेलैन्ह। तामशे-पित्ते अप्पन वर आ साउस कें गरिया रहल छथिन। जखन नञि रहल गेलैन्ह तऽ मड़वा लग पनघैल लग खेलैत कनकिरबा कें कान पकैड़ कें अमेठ देलखिन। कनकिरबा जोर-जोर सँ कानय लागल।

कैथाहीवाली दौड़ल आबैत छलखिन की पएर उचौक गेलैन्ह। पहिले ककरा चुप कराऊ ई असमंजस कें देखैत बलाटवाली अंठिया कें नारियल काटय लगलीह। किछु लोकनि फूल ओरियाबै मे लागि गेलीह। कैथाहीवाली कें नञि किछु फुरेलैन्ह तऽ लंगड़ाइत-लंगड़ाइत तेल सिनुर करय लगलीह। बीच-बीच मे कुसुम कें सेहो गैर-बात कहय लगलखिन, "देखियौ तऽ, आई बहिनक मधुश्रावणी छै आ ई छौड़ी कता निपत्ता अछि से नहि कहि।"

कुसुम कैथाहीवालीक सौत बलाटवालीक बेटी छथिन। दून्नू बहिनक एक्के संग विवाह भेल छल मुदा कुसुमक वर आ सासुरक लोग हुनका अपना संग राखय सँ इंकार कऽ देने छथिन। कुसुम एकटा सोलह वर्षक नवयौवना। दूध सँ गोर, भरल शरीर, औंगठल केश, हिरनी सँ आँखि। अखैन नहिरे मे रहि रहल छथि। आब श्रृंगार तऽ नञि करैत छथि मुदा मोगराक सेंटक शौक अखनो छैन्ह। गाम मे लोक पीठ पाछाँ खूब खुसुर-फुसुर करैत छैन्ह। मुदा ककरो हिम्मत नहि जे बलाटवालीक आगाँ किछ कहैथ।

अस्तु आई-माई सब जाए लगलीह। भैया काकी सेहो कैथाहीवाली सँ विदा लेलैथ। आई हुनकर बहिनक बेटा नलिन आबि रहल छथिन दरभंगा सँ। एहि दुनिया मे आब वएह हुनकर सहारा छथिन। बाड़ी मे किछु पटुआ छैन्ह से राइन्ह देथिन। अरबा चाउरक भात, भांटा नञि छैन्ह नहि तऽ तरूआ सेहो छानि दैतथिन्ह। दही अछि। किछ मोने-मोन सोचैत अंगना दिस विदा भऽ गेलीह।

(पोखैर परहक दृश्य)

कुसुम सभक संगे फूल लोरहय छथिन। मुदा जीवनक फूल मे कोनो रंग नहि। पोखैरक पानि मे अप्पन प्रतिबिम्ब देखबाक प्रयास करैत छलीह की कोनो धिया-पुता रोड़ा फेंक देलक। जीवनक खुशीक संग प्रतिबिम्ब सेहो अस्थिर भऽ गेल...।

ओम्हर नलिन से झटकैट आबि रहल छैथ। मनीगाछी टिशन से तीन कोस पैदल। अपने लहेरियासराय कोर्ट मे काज करैत छी। इक्कीस वर्षक उम्र, देह पर उज्जर कुरता, धोती आ काँख मे खादीक पियर झोरा। हल्का मूंछ आ सुगठित शरीर।

पोखैरक महार पर स्त्रीगणक भीड़ देखि किछु पूछयबला छलैथ की मोगराक सेंट नाक मे घुसल। बहुत नजदीकी छल एहि सुगंध सँ। कुसुम हुनकर पहिल प्रेम छलैन्ह। घंटो ईमली गाछक नीचा कुसुमक केश मे ओ बेलीक फूल लगेबाक कोशिश करैत छलाह आ कुसुम खिलखिला कऽ हँसैत कहैत छलखिन जे एहि मे मोगराक बात कहाँ। नलिन तमसाइत छलाह आ कुसुम हँसैत छलीह।

नजर उठा कऽ देखलैथ तऽ सामने कुसुम ठाढ़ छलीह। तन्द्रा टूटल। लागल जेना चोरी पकड़ल गेल होए। सकपका कऽ मुँह सँ बाहर भेल 'की हाल अछि?' मुदा हमेशा हँसैत रहयवाली कुसुम सुन्न नजर सँ देखैत ओतय सँ परा गेलीह। असंख्य सवाल छल ओहि नजर मे। नलिन पुनः घर दिस विदा भेलाह। अपन समस्त पूंजी कें जोरलाक बाद 65,000 टाका जमा भेलैन्ह। एहि राशि सँ भैया काकीक वास्ते एकटा जमीन रजिस्ट्री करेबाक छैन्ह। घर पहुँच कऽ हाथ-पएर धो कुसुमक बारे मे भैयाकाकी सँ पुछलखिन तऽ हृदयाघात भऽ गेल। कुसुमक सासुरक लोक कें शर्त छैन्ह जे जौं 50,000 टाका नञि गनल गेल तऽ कुसुम कें सासुर नहि लऽ जैल जेतै आ मधुश्रावणी नहि हेतैन्ह। नलिन सिर्फ पत्थरक मुरत बनल सुनैत रहलाह। दही ओहिना पड़ल रहि गेल।

(कैथाहीवालीक अंगनाक दृश्य)

बाहर दलान पर भीड़ लागल अछि। कुसुमक दियर अचानक भाड़ लऽ कऽ पहुँच गेलखिन। कहलखिन जे कुसुमक सासुरक लोक हुनका बिनु शर्त स्वीकार करय लेल तैयार भऽ गेल छैथ। चारू दिस हर्षनाद होमय लागल। ताबेत भुटकुन दौड़ल आयल जे गजब भऽ गेलै। भैयाकाकीक अंगना मे कैल राति चोरी भऽ गेल। चोरबा हुनकर सबटा पाई लऽ गेलैन्ह।

कुसुम सुनलैथ तऽ हुनका सबटा बात बुझैत देर नहि लगलैन्ह। नलिन ई की केलौंह? चक्कर खा कऽ बेहोश भऽ गेलीह। ताबेत दूटा नवयौवना मधुश्रावणीक हंकार देबा खातिर विदा भेलीह। आई-माई सब टंकार सँ गीत उठेलैथ - "उगि गेल तरेगन परि गेल सांझ, तखने मंदिर घर मे देबा गेली साँझ।"

❐

साढू

ज्ञानवर्द्धन कंठ

आई जी आई एम एस, पटनाक नेफ्रोलॉजी वार्ड। बेड पर बैसि बाबूजीक घुट्ठी सोहरा रहल छलियैन्ह।माए चम्मच सँ हुनका खिच्चड़ि खुआ रहल छलहि। पाछाँ केओ किनको बजा रहल छलाह - “साढू, यौ साढू?”

माए बाजलीह - पाछाँ तकही तऽ, भरिसक तोरे दिस ईशारा कऽ रहल छौ।

हम - हय, अपन साढू कें बजाबैत छै। सुनलिही नञि?

पाछाँ तकैत छी तऽ देखैत छी जे पन्द्रह नंबर बेड पर एकटा अधवयसू रोगी हमरे बजा रहल छथि - यौ, अहीं कें कहै छी। इमहर आऊ ने!

हम सत्वर हुनका लग पहुँचि हाथ जोड़ि कहलियैन्ह - प्रणाम! की बात?

ओ भभा कऽ हँसय लगलाह। बजलाह - साढू भऽ कऽ एना अंठेबै तऽ कोना काज चलतैक?

हम - अपनेकें कोनो भ्रम भेल अछि। हम अपनेक साढू नहि छी। हमर तऽ विवाहो नहि भेल अछि।

ओ फेर ठठा कऽ हँसय लगलाह। बजलाह - देखू, अखनि विवाह नहि भेल अछि। कालि हेबे करत। सासुर मे घरक पछुआर मे नेबोक गाछ हेबे करत। हमरो सासुर मे घरक पछुआर मे नेबोक गाछ अछि। तैं सरोकारी सँ दूनू साढू भेलहुँ कि नहि? आबो फरिछायल वा नहि?

ई कहि ओ अओर जोरसँ हँसय लगलाह। हमरो हँसी लागल, मुदा मुस्कीक तर मे हँसी कें दाबि मोनेमोन सोचलहुँ - विचित्र लोक छथि। चऽरक सरोकारिये खुटेर मौसी बना रहल छथि। फेर वएह बजलाह - बाबूजी छथि? सीरम क्रिएटिनिन कतेक छैन्ह? टू पॉइंट फाइव? कोनो बात नहि। हमरा तऽ थर्टीन टपि गेल अछि। तीनटा डाइलिसिस भऽ चुकल अछि। सूगर अढ़ाई सय सँ ऊपरे रहैत अछि। हमरा किडनी ट्रांसप्लांट नहि करेबाक अछि। सक्सेस नहि होए छैक। जा धरि चलब, ता धरि चलब। साढू, एहि वार्ड मे देखै छियैक? कतेक लोक छैक? केकरो सँ केकरो मुँह मिलैये? ही,ही,ही। भगवानो अलबत्त छथि। कहू, एहिमे सँ केओ सभदिन एतय मर्त्यलोक मे रहताह? नहि ने? तखन हमरे कोन जिद्द? जहियाक टिकट कटत, डोला-कहार आओत, लऽ जैत। अहाँ एना की तकै छी? अहाँ साढू छी, तैं कहै छी। बाबूजीक सेवा करियौन्ह। मुदा करेजा बुलंद राखब। कै भाए छी? “एकसरे” आ बहीन? “सेहो नहि?” वाह, तखन तऽ महो-महो। जावत अस्पताल मे छी, दूनू साढू खूब गप्प-शप्प करब। हमरो बालक भाए मे एकसरूए छथि। दवाई आनय गेल छथि। जाऊ, अहाँकें बरदा देलहुँ। बाबूजीकें देखियौन्ह। हमर प्रणाम कहबैन्ह। हें हें हें।

साढू सँ ई पहिल संवाद छल। मुदा कोनो अज्ञात तार सँ हम हुनका प्रतिये जुड़ाव अनुभूत केलहुँ। हुनक पुत्र सँ परिचय भेल, घनिष्ठता सेहो बढ़ल। हम कतहु जाए तऽ ओ बाबूजीक ध्यान राखैथ आ ओ कतहु जाथि तऽ हम साढूक ध्यान राखी। दुपहरिया मे एकटा बड्ड कड़क स्वभाववाली सिस्टर ड्यूटी पर आबय। सभ रोगी कें देखितहिं झाड़य लगैक, मुदा ओकरा अबैत देखि साढू पहिने दूनू हाथ जोड़ि निश्छलता सँ पुछलथिन्ह - “की सेवा दीदी?” सिस्टर कें पहिल बेर मुस्काइत देखलहुँ। बजलीह - “बाबा! आप नहीं, मैं सेवा करूँगी न?”

एहन कड़क सिस्टर कें जीत लेलखिन्ह साढू। बाद मे हमरा कहलैन्ह - बुझलहुँ साढू? प्रेम सँ बढ़ि कऽ एहि संसार मे किछु नहि। हम साते बरखक रही। हमर पिता स्वर्गीय भऽ गेलाह। माइयोक मरना चौदह बरीस भऽ गेलैक। कोना एहि संसार मे पालन-पोषण भेल? एतेकटा जिनगी बितेलहुँ। दूटा कन्याक विवाह। कऽर-कुटुम्ब। सऽर-समाज। सभ एहि मे पार लगैत गेल। बौआ एखन बी.ए. मे छथि। जे हमरा पार लगौलैन्ह, से हुनको पार लगौथिन्ह। की यौ? अनुचित कहै छी? आएँ? ही,ही,ही...। लिय सेब खाऊ। बहुतेक दऽ जाइये। खाऊ साढू, संकोच नहि करू।

ओहि दिन भोरे सँ साढू गुम्म रहथि। हुनक पुत्र सँ ज्ञात भेल जे आई हुनक ब्लड-प्रेशर अनियमित रूपसँ बढ़ि-घटि रहल छैन्ह। डॉक्टर लोकनि चिंतित छथिन्ह। एतबहि मे साढू आँखि फोलि फुसफुसेलाह - साढू, नमस्कार। पुनः आँखि मूनि लेलैन्ह। सदाक लेल। पाँच दिनक सढुआरी मे जिनगीक बुधियारी कतेक सिखलहुँ, से नहि कहि। पाँच मासक मध्य बाबूजी सेहो विदा भऽ गेलाह। कालक्रम मे विवाह भेल। बाल-बच्चेदार भेलहुँ। आई पच्चीस बरखक बादो नञि बाबूजी बिसराइत छथि आ नञि साढू।

❐

चुनाव

मिसिदा

पंचायत चुनावक घोषणा भऽ गेल छल। गर्मी सेहो चरम पर, दुपहरि मे कोनो मचान पर तऽ कोनो दुकान पर...। कतओ ताश खेलाएत काल इएह चर्चा जे एहि बेर मुखिया केर कैंडिडेट कें हेतै?

नामिनेशन केर तारीख आबि गेल। पहिल दिन केओ नामिनेशन नहि केलक। गाम मे खुदबुद्दी होमय लागल। पूरे पंचायत मे इएह गाम सँ कैंडिडेट ठाढ़ होइत अओर जीतैत एलैए...। ई केहन अबूझ बूझौवल भऽ रहलै? लोक सभहक बीच विभिन्न प्रकारक चर्चा होमय लागल।

एहि बेर ई फसाठी पंचायत सामान्य वर्गक कोटा मे आबि गेल छल। फसाठी गाम सँ रमेश सहनी मुखिया केर नामिनेशन कऽ देलक। राम मोहन पासवान, पंचायत समिति मे, धोमर गाम सँ पंचायत समिति लेल एगो अओर संतोष झा सेहो नामिनेशन करताह चर्चा होमश लागल। भौनी सँ जटाशंकर सिंह, सरपंच लेल सेहो कैंडिडेट छलाह। नामिनेशन केर आब मात्र तीन दिन शेष छल, तखन भौनी अओर पटरा गाम सँ अभिमन्यु सिंह अओर राजेंद्र झा, मुखिया लेल नामिनेशन कऽ एलाह।

एमहर परमानंद काका केर मोन सेहो उछाल मारय लागलैन्ह, हुनक दियाद-वाद अओर संगी-तुरिया सभ केओ मुखिया मे चुनाव लड़बाक लेल जोश चढ़ा कऽ नामिनेशन करबा देलैथ।

शुरू भऽ गेलै चुनाव प्रचार। परमानंद काका कहलैथ, "जे हमरा केकरो सँ टक्कर थोड़बो अछि, हम जीतबे करब। गामक मालिक केकरो सँ वोट मंगतै गऽ?"

राधे झा कहलैथ, "हे, ई चुनाव छै... वोट मंगैएटा पड़त। कहै छै चुनाव मे, मतदाता मालिक होइत अछि, आ चुनाव जीतला पर नेता... बूझलहुँ नै...?"

"घरे-घर जाए पड़तै हौ?" परमानंद काका किछु सोचैत पुछलैथ।

"हँ... हौ, जबरदस्ती हँसय पड़तह... सबकें बूझबय पड़तह जे तौं हुनकर अप्पन छह... बेर-बखत पर हुनकर संगहि रहबह... बाद मे देखल जेतै..." राधे झा बूझौलैन्ह।

परमानंद काका, एहि प्रचंड गर्मी मे साइकिल पर सवार भऽ माथ पर तौनी बन्हने घुमय लगलाह... घरे-घर... बाधे-बाध... पियास सँ कंठ सुखैन्ह कतऽ पानि पिबताह... मालिक भऽ पानि कोना कऽ माँगतैथ? जतय-जतय काका जाथिन्ह ओतुका लोक सब सोचौ जे मालिक हमर बासन मे पानि कोना कऽ पिबताह? ... से चाह की कियो पानियो लेल नहि पुछैन्ह। परमानंद काका, भुखले-पियासले सांझ धरि गाम पर घुरि जाइथ। चुनाव प्रचारक सिलसिला चलैत रहल। आब परमानंद काका कें बूझा गेल जे चुनाव की छै?

भिनसर मे, किछु समांग सब संगहि दरबज्जा पर बैसल चाहक चुस्कीक बीच परमानंद काका बजलैथ, "हे! कान पकड़लहुँ, आब भविष्य मे कहियो चुनाव नहि लड़ब... कहक तऽ... गाछी-बिरछी... धुर-धुक्कुर... मरद-मौगी सभहक अगाड़ी हाथ जोड़य पड़ैए... नहि, आब नहि? आब की करब, ओखरि मे मुड़ी घुसाइए देलियै तऽ लड़ैए पड़तै... देखहक तऽ ऊ अभमन्यु अओर रजेनदरा कें... हमर विरोध मे ठाढ़ भऽ गेलै... अभमन्यु केर बाप हमर बाबू लेल लठैती करै... आई ओकर बेटा हमरे विरूद्ध? रजेनदरा हमरे संगहि पढ़ै, ओकरा खाय लेल नहि जुमै ईस्कूल-कॉलेजक फीस कतऽ सँ भरैतैक... हम बाबू केर पेटी सँ टाका चोरा कऽ ओकरा कहियो-कहियो खुआ दियै, अठवाँ सँ इन्टर धरि ओकर फीस हम भरलौंह... सार, ओहो...?" परमानंद काका तामसे थरथर काँपैत बजलाह।

"की करबै, इलेक्शन भरि शांते रहू... ई चुनाव छै, एकरा मे पुण्य-परोपकार नहि देखल जाईत छै...?" जीत्तू झा बजलैथ।

"नहि हौ... हम बड्ड आनिवाला लोक छी, मरि जेबै मुदा ओकरा सबकें चुनाव नहि जीतऽ देबै? कहक तऽ पूरन काका... ऊ अजोधिया वाला मोकदमा मोन छह ने...? हौ, जीत्तू, हम भले ऊ केश हारि गेलहुँ, अपन एक्कैस बीघा जमीन आ चालीस भरि सोनाक गहना बेचि देलहुँ, अजोधिया कें दिल्ली धरि छोड़लियै? ... तहिना ई चुनाव जीतऽ तऽ दहक, देखा देबै हमहूँ..." परमानंद काका पूरे जोश मे छलैथ। हुनका कें बूझैतैन्ह? एहि बीच, बात कें शांत करैत झबरूआ बाजल, "बाघा टोल गेल छलहुँ? ऊ रमेसर सँ भेंट-घाँट कऽ लेतियैक, परसू वोट अछि, ओकर बहुत्ते रिलेशन सब छैक... ओकर अपन समाज मे बड्ड चला-चलती छैक..."

"ठीक छै, एहो सही... बेरूपहर चलिहैं" मुँह बनबैत परमानंद काका बजलैथ।

परमानंद काका झबरूआ संग चलि देलैथ। रमेसर मचान पर बैसल... एगो हाथ सँ बीअैन डोलबैत दोसर हाथ मे एगो पोथी नेने बैसल छल। ओकरा बहुते लोक सब घेरने छलै... शायद चुनावक चर्चा होइत छल। परमानंद काका केर दिमाग तऽ... दिमागे छलैन्ह। ओहो किछ-किछ पैंतरा सीख नेने छलाह, सोचलैथ एतेक भीड़-भाड़ मे अपन इमेज बनौबाक चाही... ओ चट्ट सँ रमेसर केर पाएर छूबि लेलैन्ह... रमेसर अचकचा कऽ परमानंद काकाक हाथ पकड़ि कऽ कहलकै, "ई की करैत छी मालिक...? कहू, हमर कोन सेवा केर दरकार अछि?"

"हौ, रमेसर बौआ, तौं तऽ सब बूझैत छह... हम चुनाव मे ठाढ़ छियह... आब हमर लाज तोहरे हाथ मे छह..." कहि परमानंद काका फेरो रमेसर केर पाएर छूबि लेलैन्ह। परमानंद काका ठाढ़े छलाह, रमेसर मचान पर बैसले-बैसल पूछलकै, "मालिक, कथी मे ठाढ़ छी?"

"मुखिया मे" हाथ जोड़ि कऽ परमानंद काका जबाब देलैन्ह।

"ओह...! हम तऽ अभिमन्यु कें जबान दऽ देलियै..." रमेसर बजलै।

"हे... हम बड्ड उमेद सँ एलहुँ यै... हमरा निराश जुनि करऽ..." कहैत परमानंद काका

ओकर पाएर छूबैत जमीन पर बैसि रहलाह। “हमर इज्जत केर सवाल छह, बौआ”।

“ठीक छै... अहाँ हमर मालिक छी... जोगार तऽ करैए पड़तै... जाऊ... हम अहाँकेँ वचन देलहुँ... जीत अहींकेँ...” परमानंद काका खुश भऽ झबरूआ संग गाम दिस विदा भऽ गेलाह। जखन ओ सब भंडारी पोखरि पर पहुँचलाह तखन भोली बाबा, ढ़ोंढ़ाई बाबा, प्रेमा बाबा अओर तारा बाबा संगहि भेट भऽ गेलाह। कुशल क्षेमक उपरांत भोली बाबा पुछलैथ, “कतय गेल छलहुँ?” परमानंद काका सभटा हाल बतौलैन्ह। तारा बाबा कहलथिन्ह, “रमेसर केर चलाचलती छै हौ? ओकर बाबा की पुरखा आई धरि बुथो देखलकै यै... जे ओ भोंट खसौतै ग?”

परमानंद काका केर होश उड़ि गेलै। मोनहि मोन झबरूआ केँ गारि पढ़ैत बुदबुदाबऽ लगलाह, “ई झबरूआक चक्कर मे रमेसरा केँ एकबेर की कतोक बेर पएर छूबय पड़ल... कतय गेल ई...?” देखै छथि, झबरूआ झटकि कऽ पड़ाएल जा रहल छल।

❐

परिश्रमक फल

तनुजा दत्ता

घरक आगाँ सँ निकलैत जीप मे बैसल महिला केँ देख कऽ बड्ड अचंभित भेलौंह, लागल जेना हिनका कतहु देखने छियैन्ह। पूजा हमरा अचंभित देख कऽ बुझि गेलखिन्ह “भाभी नञि चिन्हलियैन्ह हुनका? पलाशक कनिया छथीन, नीना। ई बी. पी. एस. सीक परीक्षा देने छलखिन्ह, पास भऽ कऽ बिडीयो छथीन।” “आ पलाश की करय छथीन?” जिज्ञासावश पुछलियैन्ह। “भाभी ओ तऽ कोनो छोट-मोट नौकरी कऽ रहल छथि, आ घर मे बच्चा खेलाबय छथि।”

एकाएक पिछला बात सब याद आबय लागल। पलाश हमरे सासुरक छलैथ। पढ़य मे बड्ड होशियार। स्कूल सँ बी. ए. धरि पढ़ाई मे सब दिन अव्वल रहलाह। ई है कारण छल जे अति महत्वाकांक्षी रहैथ। महत्वाकांक्षी रहबाक चाही मुदा अति कोनो चीजक नीक नञि होएत अछि। जखन समय भेटतैन्ह तऽ हमरा सँ भेट करय जरूर आबय छलाह। “पलाश आई-काल्हि की करय छी बौआ?” “भाभी, आई. ए. एसक तैयारी कऽ रहल छी।”

“अच्छा, तैयारी करू आ संगे-संग बैंक, रेलवे सभहक परीक्षा सब सेहो दैत रहियो।” “हा... हा... हा..., भाभी ई कर्ल्के बनय केँ रहितै तऽ कखैन ने हम पास भऽ गेल रहितौंह।” “किएक? नौकरी कोनो खराब नहि होए अछि, ई तऽ अपन हाथक बात अछि, आई. ए. एस बनि जायब तऽ ई नौकरी छोड़ि देबै।”

ऐना करैत-करैत पलाश सब नौकरी केँ छोड़ैथ गेलखिन्ह। हमर बात पलाश केँ अरूचिकर लागलैन्ह। तैं हमरो सँ भेट करनाय छोड़ि देलैथ। समय कखन पर लगा कऽ उड़ि गेल बुझबो नञि कएल। गाम सँ पता लागल जे पलाशक विवाह हुनकर बाबुजी बढ़िया लड़की देख कऽ कऽ देलखिन्ह। नीना, कनियाक नाम छलैन्ह। शिक्षक पिताक पुत्री भेला सँ हुनको शिक्षाक खुब ज्ञान रहैन्ह। एक दिन संयोगवश नीना हमरा बाजार मे भेटा गेलीह। चुँकि पूजा संगे छलीह तऽ चिन्हा-परिचय करा देलैथ। “अहाँ की करय छी, नीना?” “दीदी हम अँग्रेजी सँ द्वितीय वर्ष मे छी, गामे सँ जाए छी कॉलेज। बियाहक बाद कनी दिक्कत तऽ भऽ गेल, मुदा हम पढ़ाई नञि छोड़लौंह, हमरा आगुओ पढ़य केँ अछि।” “बढ़िया अछि।” “दीदी, मुदा घरक लोक नञि चाहैत छथि, सब कहय छथीन जे की कहतै लोक सब, कनिया असगरे रिक्शा पर बैसि कऽ कॉलेज ओते दूर जाए छ।”

रूढ़िवादी परिवार मे बियाह भेला सँ नीनाक पढ़ाई केँ परिवार मे कोनो महत्व नञि रहैन्ह। तैयो नीना, जबर्दस्ती भोरे घरक सभ काज खत्म कऽ कऽ कॉलेज चलि जाए छलैथ। नीना केर पढ़ाई केँ लऽ कऽ धीरे-धीरे घर मे उठापटक भेनाए शुरू भऽ गेलैन्ह। साउस, ससुर केँ कहनाए रहैन्ह जे गामक लोग हमरा मुड़ि नञि उठाबऽ दैयै... फलां बाबुक पुतोहू बड्ड जिद्दी छैन्ह... असगरे कनिया गाम सँ रिक्शा पकड़ि कऽ कॉलेज ओतेक दूर चलि जाए छथीन... आदि आदि। तहियो नीना पढ़ाई नञि छोड़लैथ।

एक दिन नीना अस्पताल मे भेटेलैथ सुखि कऽ काँट सन देह भऽ गेल रहैन्ह। “नीना, कोनो खुशखबरी अछि?” “हँ दीदी” “देह तऽ पूरा गलि गेल।” “दीदी, ई पढ़ाई हमर काल भऽ गेल, रोज घर मे कलह होए अछि, कहियो काल कऽ तऽ पलाश तामस मे हाथ सेहो उठा दय छथि। मुदा हम पढ़ाई नञि छोड़ब। कखनो कऽ होयैए जे बाबुजी लग चलि जाऊ।” “नञि नीना, ई अहाँक अपन लड़ाई अछि, अहींकेँ लड़ि कऽ रस्ता बनाबय पड़त। माँ-बाबुजी केँ बीच मे नञि आनियौन्ह।” फेर नीना सँ कहियो भेट नञि भेल।

अहिना एक दिन नीनाक ध्यान आबि गेल। गाम पर फोन लगाबय छी कनी बातो भऽ जाएत आ नीनाक समाचारो बुझि लेबैन्ह। पता लागल जे नीना केँ बेटा भेलैन्ह। घरक लोग बड्ड खुश छथीन। मुदा समस्या सेहो बढ़ि गेलैन्ह। कम्नाहैर रहितो घरक काज, बच्चाक काज सब काज कऽ कऽ नीना युनिवर्सिटी जाए छथि। आब पढ़ाई अओर कठिन रहैन्ह। आब तऽ गाम, दर-दियाद, सबकेँ मुँह खुलि गेलैन्ह। खुब ताना सुनय केँ पड़ैन्ह। घोघ तानि कऽ असगरे रिक्शा पर बैसि कऽ निकलि जाए छथीन कनिया..., एहन ढ़ीठ लोक नञि देखलियै... जते मुँह ओतक बात। तैयो नीनाक अनवरत पढ़ाई चलैत रहलैन्ह।

आई सच मे हुनका एहि पद पर देखि कऽ हृदय सँ खुशी भेल। एहि पद लेल ओ बड्ड संघर्ष केने छलैथ। साँचे परिश्रमक फल भेट गेलैन्ह। नतमस्तक छी एहन महिला केँ देखि कऽ।

❐

विशेषज्ञ सँ पुछु

श्रद्धेय पाठकवृंद

मिथिलांगन पत्रिकाक एकटा नव स्तम्भ आरम्भ करए जा रहल अछि 'विशेषज्ञ सँ पुछु'। मिथिलांगन सम्पादकीय मंडल एकटा विशेषज्ञ लोकनिक समुह बनौलैन्ह अछि जे पाठकगण द्वारा पुछल गेल प्रश्न/जिज्ञासा वा उठाओल गेल शंकाक समाधान करताह। पाठक अपन-अपन प्रश्न/जिज्ञासा मिथिलांगनक ईमेल mithilangan@gmail.com वा मो. न. 9910952191 व्हाट्सप पर भेज सकैत छथि।

चुनल प्रश्न/जिज्ञासा कें पाठकक नाम आ पता संग पत्रिकाक अगिला अंक मे प्रकाशित कएल जाएत। मिथिलांगन सम्पादकीय मंडल द्वारा बनाओल गेल विशेाज्ञ समुह निम्न प्रकारें अछि :-

शिक्षा

डा. राजीव वर्मा

साइबर क्राइम/ I T

कमांडर के. के. चौधरी

साहित्य

रविन्द्र चंद्र दास

शम्भु शंकर

आध्यात्म

एम. पी. कंठ

मानवर्द्धन कंठ

एच. एन. मिश्रा

विज्ञान

प्रो. संतोष कु. कर्ण

मानव संसाधन

कमलेश कुमार दास

स्वास्थ्य

डॉ. राम कुमार मल्लिक

डॉ. तारिणी कुमार दास

बाल मनोविज्ञान

दीपाली कर्ण

नूतन कंठ

राजेश कर्ण

सौंदर्य प्रसाधन

संतोषी कर्ण

योग

कुमार राधा रमण

समसामयिक विषय

आलोक कुमार

गोविन्द चंद्र दास

रोजगार

बसंत शेखर दत्त

कमांडर के. के. चौधरी

विधि

सुन्दरम

रंगमंच

संजय चौधरी

मैथिली लोक/पारम्परिक गीत

निर्मला चंद्र

अर्चना दास

निर्मल कुमार कर्ण

मोहन कुमार दास

खान-पान

सरिता दास

आवास ऋण

निर्भय कुमार

सामाजिक सरोकार

मानवर्द्धन कंठ

सरिता दास

विनीता मल्लिक

कला

रविन्द्र कुमार दास

संजु दास

वित्त/बैंकिंग/आयकर/बीमा

आशीष नीरज

आभाष कुमार

शिवम

गीत-संगीत

सुन्दरम

विनीता मल्लिक

लोक व्यवहार

रविन्द्र चंद्र दास

सरिता दास

विनीता मल्लिक

SHRISHTI

LAC BANGLES SERVICE

VANDANA

M.: 9873731941

e.: vandanalabh@gmail.com

H.NO.-957, UTTARAKHAND ENCLAVE-II (NEAR MASDIJ), NATHUPURA, BURARI, NEW DELHI-84

प्रश्न :- हमरा पायलट बनबाक इच्छा अछि। ओहि लेल हमरा कि करय पड़त?

- सुभ्रा सौम्या, वैनी - समस्तीपुर

उत्तर :- पाइलट बनबाक लेल जनकारी

1. 12वीं उत्तीर्ण Physics एवं Mathematics अनिवार्य
2. DGCA approved डॉक्टर सँ क्लास-२ मेडिकल
3. ओकर पश्चात class 1 मेडिकल DGCA approved मेडिकल केंद्र सँ। www.dgca.nic.in पर डॉक्टर आ क्लास 1 medical centre क जानकारी उपलब्ध अछि।
4. भारत वा भारत सँ बाहर 200 घंटा के उड़ानक अनुभव चाही (जाहि मे 185 घण्टा single engine aircraft एवं 15 घण्टा multi engine aircraft मे कऽ सकैत छी)।
5. 4टा परीक्षा Navigation, Technical, Materelogy एवं Air Regulation DGCA द्वारा लेल जाईत छैक। संचार मन्त्रालय द्वारा Radio Telephony कें परीक्षा सेहो उत्तीर्ण करय पड़ैत छैक।

5टा परीक्षा अओर कोनो flying club वा flying school सँ 200 घंटा कें उड़ानक प्रशिक्षणक उपरांत DGCA द्वारा CPL (CommercialPilot Licence) भेटैत छैक। CPL प्राप्त केलाक उपरांत कोनो Airlines मे Pilotक नोकरी कें लेल आवेदन कऽ सकैत छी।

अन्य कोनो प्रकारक जानकारी www.dgca.nic.in सँ प्राप्त कएल जा सकैत छैक अथवा हमरा फोन (9871007536) कऽ कऽ सेहो जानकारी लऽ सकैत छी। मिथिलवासीके पाइलट बनवाक लेल सहयोग कऽ कऽ हमरा बहुत खुशी होएत।

- पायलट बसंत शेखर दत्त

प्रश्न :- हमर बालिका एहि बेर 10वीं क परीक्षा देतीह। ओ average student छथि। आग्रह जे किछु टिप्स देल जाए जकर लाभ हुनका आ परीक्षाक तैयारी मे लागल आनो स्टूडेंट कें होइन्ह।

- कुमार रंजीत, मोहन गार्डेन (दिल्ली)

उत्तर :- 10वीं क बोर्ड परीक्षा एकटा सफल भविष्यक आधार अछि। विद्यार्थी अपन रूचिक अनुसार 10वींक तैयारी आ परीक्षाक आधार पर अपन stream चुनैत छथि।

कोनो विद्यार्थी साधारण नहि होइत छथि, सब असाधारण छथि। साधारण वा असाधारण हुनक उद्देश्य, निरंतर प्रयास आ जीवनक प्रति गम्भीरता पर निर्भर अछि।

10वीं बोर्ड आ जीवन मे सफलता हेतु किछु आवश्यक बिन्दुः-

1. जीवनक उद्देश्यक प्रति समर्पण।
2. योजनाक निर्माण आ कार्यान्वयन।
3. नीक समय-सारणी आ कार्यक्रम।
4. नीक सँ क्लासरूमक पाठ कें अभ्यास आ पालन हेबाक चाही।
5. घर मे शांत स्थल पर पठन-पाठन हेबाक चाही।
6. सैम्पल पेपर्स हल करक चाही।
7. छोट-छोट नोट्स बनेबाक चाही।
8. निरंतर लिखबाक अभ्यास करक चाही।
9. निरन्तर परिशोधन (revision) करक चाही।
10. अंत समय लेल कोनो विषयक तैयारी नहि छोड़क चाही।
11. सम्पूर्ण सिलेबल पढ़क चाही।
12. अपन कमजोरी आ मजबूतीक विश्लेषणक अनुसारे तैयारी हेबाक चाही, आत्म-विश्लेषण आवश्यक अछि।
13. पूर्णतया आश्वस्त आ आत्मविश्वासी हेबाक चाही।
14. Maths आ Science मे निरन्तर अभ्यास करक चाही।
15. Concepts अर्थात संकल्पना पर केन्द्रित तैयारी हेबाक चाही।

- प्रो. (डॉ.) राजीव कुमार वर्मा

प्रश्न :- फास्ट फूडक इस युग मे बच्चा सबकें स्ट्रीट साइड स्नैक्स आ चाइनीज भोजनक बेसी शौक अछि जे हमर स्वास्थ्यकें खराब कऽ रहल अछि, जौं आहार ठीक नहि अछि तऽ बच्चा सबकें बीमारी सँ सुरक्षित कोना राखल जाए?

- सुमित आनन्द (डाटा एनायलिस्ट)

उत्तर :- बीमारी सँ सुरक्षित राखय लेल निम्न उपाय करी :-

1. सर्वप्रथम बच्चा कें जन्मक समय सँ लगातार यथोचित टीकाकरण (Vaccination) अवश्य करेबाक चाही। एहिसँ बच्चा 7 तरहक जानलेवा बीमारी सँ सुरक्षित भऽ जाईत अछि।
2. पहिल 6 मास केवल माएक दूधक सेवन करैथ। एहि सँ शरीरक रोग-प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) काफी मजबूत भऽ जाईत अछि आ सामान्यतः कोनो पैघ बीमारीक संभावना नहि रहैत छैक।
3. 6 मासक बाद घरक बनल भोजन शुरू करेबाक चाही।

भोजन स्थानीय भौगोलिक वातावरण (geographic conditions) आ मानव प्रजाति (race)क अनुरूपे हेबाक चाही। जेना भात-दालि, तरूआ-तरकारी आ दूध-दही उत्तर भारतीयक भोजन आ ईडली-सांभर दक्षिण भारतीयक भोजन थिक, तहिना चाइनीज भोजन सामग्री मंगोल प्रजातिक लेल बढ़ियाँ होइत अछि।

कहबाक तात्पर्य जे धियापूताकें अपन पारंपरिक भोजनक आदत लगाउ। सन् 2018 मे अमेरिका मे एकटा वृहद अनुसंधान सँ पता चलल अछि जे 6 मास से 2 साल धरि बच्चाकें जाहि तरहक भोजनक आदत लगैबैक पैघ भेला पर ओ ओहने भोजन पसंद करत।

आब बात रहल शुद्ध आ अशुद्ध भोज्य पदार्थक, तऽ हरसंभव प्रयास करबाक चाही जे यथासंभव शुद्ध भोज्य पदार्थ ग्रहण करी।

एकटा महत्वपूर्ण बात :- शिशु कालहिं सँ बच्चा कें अपनहिं हाथे भोजन करबाक आदत लगेबाक चाही, एहिसँ बच्चाक दिमाग (brain) मे ओहि भोज्यपदार्थक संकेत (signal) अंकित (fix) भऽ जाईत अछि आ नमहर भेला पर ओ ओहने भोजन पसंद करैत छथि।

- डॉ. तारिणी कुमार दास

प्रश्न :- भारत मे करक कार्यप्रणली काफी जटिल अछि आ पहिल बेर करदाताक लेल, कराधान आ प्रलेखन मे शामिल भेनाए बोझिल भऽ सकैत अछि। करक भुगतान करैत समय ध्यान रखबाक योग्य मूलभूत तत्त्व कि अछि, जाहिसँ आगाँ कोनो समस्या नहि आबय?

-अविनाश कुमार, बीटक्वाइन ट्रेडर, कानपुर

उत्तर :- भारत मे कर दू श्रेणी मे विभाजित अछि, प्रत्यक्ष कर आ अप्रत्यक्ष कर। अहाँक जिज्ञासा सँ ई स्पष्ट नहि अछि जे अहाँ कोन प्रकारक कर (प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष) केँ बारे मे जानय चाहैत छी।

जौं अहाँ वेतनभोगी कर्मचारी छी तऽ अहाँक करकेँ टी. डी. एस.क रूपमे काटबाक जिम्मेदारी अहाँक नियोक्ता केँ छैन्ह। एहिमे अहाँकेँ ध्यान देबाक चाहि जे जखन अहाँक नियोक्ताक द्वारा वित्तीय वर्षक दौरान अहाँ सँ निवेशक विवरण माँगल जाए तऽ अहाँ सही विवरण हुनका दी। जौं अहाँ अपन 80C, 80D जेहन निवेशक पूरा विवरण नहि देबय तऽ अहाँक ज्यादा कर टी. डी. एस.क रूपमे काटि लेल जाएत अओर अहाँकेँ आयकर रिटर्न फाइल कऽ कऽ रिफन्ड क्लेम करय पड़त। जौं अहाँक टी. डी. एस. वास्तविक कर सँ कम काटल गेल अछि तऽ अहाँकेँ आयकर रिटर्न फाइल करबा सँ पुर्व www.incometaxindiaefiling.gov.in पर जा कऽ Self Assessment Tax नेट बैंकिग वा डेबिट कार्डक माध्यम सँ जमा करय पड़त।

एतय ई बात ध्यान देबय केँ अछि जे जौं अहाँक वार्षिक आय छुटक न्युनतम सीमा सँ बेसी अछि तऽ अहाँक आयकर रिटर्न फाइल करनाय जरूरी अछि भले अहाँक सहीये टी. डी. एस. किएक नहि काटल गेल होए। जौं अहाँ रिटर्न नहि फाइल केलौंह तऽ Section 271 F क अंतर्गत 10,000 टाकाक पेनाल्टी आयकर अधिकारी द्वारा लगाओल जा सकैत अछि।

- CA आशीष नीरज

प्रश्न :- हम रंगमंच करैत छी, रंगमंच सँ जुड़ल कतेको संस्था आ व्यक्ति हमरा जानैत छथि। अखन पटना कालीदास रंगालय मे मैथिली लोकगीतिनाट्य 'राजा सलहेस'क मंचन संस्था द्वारा भेल रहय। कि हमरा दिल्ली मे मिथिलांगन सँ नाट्य प्रस्तुति हेतु अवसर भेट सकैत अछि?

- महेन्द्र लाल कर्ण, मधुबनी

उत्तर :- अवश्य। एहि मे कानो दू राय नहि जे मिथिलांगन सदिखन नव प्रतिभा केँ आगाँ बढ़ेबा मे लागल रहैत अछि। संगहिं अनुभवी कलाकारक प्रतिभा सँ अपन सांस्कृतिक प्रस्तुति केँ निखारैत आबि रहल अछि। जकर उहारण अछि एहि मंच सँ भाष्कर झा, अनिल मिश्रा, रामश्रेष्ठ पासवान, रोहिणी रमण झा, शुभ नारायण झा, पूजा श्री, पूजा झा, कल्पना झा, सायरा अलि, सुनिल झा, साक्षी मिश्रा, सुरेन्द्र झा आदि कतेको मांझल कलाकार अपन प्रस्तुति मिथिलांगनक मंच पर दऽ चुकल छथि। सूचि पैघ अछि... तथापि मिथिलांगनक मंच पर अपनेक स्वागत अछि।

- संजय चौधरी

प्रश्न :- 'डहकन' केहन तरहक विधा छैक? एकर पारंपरिक इतिहास आ विस्तार पर प्रकाश दी। ई कतेक प्रकार छैक सेहो बताबी?

- कल्पना झा, नोएडा

उत्तर :- डहकन समान्यतः उतरा-चौरी अछि ननदि-भाउज केँ। ई हिनका लोकनिक हास्य-विनोद भरल गाड़ि होइत अछि, जे अपन मिथिला मे प्रायः जतेक प्रकारक शुभ काज होइत अछि, जेना- मुण्डन-उपनयन संस्कार, तीज-त्योहार, विवाह दानक विभिन्न विधि-व्यवहार आदि मे माहौल केँ खुशनुमा बनाबय लेल स्त्रीगण द्वारा गाओल जाइत अछि। जाहिमे दूनू पक्ष एक-दोसरा केँ नौआ (हजाम/ठाकुर), पुरहित, नौकर-चाकर आदि केँ लगा कऽ गारि पढ़ैत छथि। ई समस्त प्रकरण हास-परिहास आ विनोद सँ भरल रहैत अछि, कियो एकरा खराप नहि मानलैथ आ एकरा गंभीरता सँ नहि लैत छथि।

जहाँ धरि एकर इतिहास आ विस्तारक बात अछि तऽ एकर प्रमाण रामायण मे सेहो भेटैत अछि। चुँकि राम चारू भाए मिथिलाक जमाय भेलाह तऽ एतुका स्त्रीगण हुनका लोकनिक संग चौल करय मे हुनक माए-बाबु आ खानदान केँ भाँति-भाँतिक गारि दैत छलथीन। आधुनिक कतेको राम कथावाचक अपन कथा व्याख्या मे एहि प्रसंगक गायन आ वाचन करैत छथि। वर्तमान मे कुँजबिहारी जीक 'राम विवाह' प्रसंग एकर उदाहरण अछि।

एक तरह सँ बुझु तऽ ई एतेक पुरान अछि जतेक मिथिलाक सभ्यता। साहित्य अकादमी 1980 मे एकटा पोथी प्रकाशित केलक 'मिथिला संस्कार गीत'। एहि मे मैथिली संस्कार गीतक संकलन अछि, एकर संपादक छलीह अणीमा सिंह (नचिकेता जीक माए)। जकर कतेको संस्करण (बिनु बदलाव केँ) निकलल। ओ पोथी हम एक बेर मिथिलांगन सरस्वती पूजा मे 'महिला प्रश्नोत्तरी' मे पुरस्कार स्वरूप सेहो देने रही। एहि पुस्तक मे डहकन अलग सँ देल गेल अछि। एहिसँ एकर पुरातनताक ज्ञान होइत अछि।

- रविन्द्र चन्द्र दास

प्रश्न :- प्राचीन कला केंद्र चंडीगढ़ आ प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद द्वारा प्रदत्त क्रमशः संगीत भास्कर आ संगीत प्रवीणक डिग्री केँ यूजीसी नेट मे मान्यता छैक कि?

जौं नहि छैक तऽ उपरोक्त संगीतक डिग्री सँ विद्यार्थी यू.जी.सी. मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय सँ पी.एच.डी. कोना करैत छथि। कि ई डिग्री यू.जी.सी. द्वारा प्राध्यापक बहाली मे मान्य छैक?

- डॉ. संजीव शमा, झंझारपुर

उत्तर :- संजीव शमा जी, संगीत भास्कर आ संगीत प्रवीण दूनूकेँ मान्यता बहुतो विश्वविद्यालय देने अछि। जखने विश्वविद्यालय एकरा मान्यता देलक तऽ यू.जी.सी. मे सेहो एकरा recognise कएल गेल अछि। कतेको हाई कोर्ट अओर माननीय सुप्रीम कोर्ट सेहो अपन judgements मे एकरा upheld केने अछि।

- सुन्दरम

जाड़क मौसम मे भोरका नाश्ता

बाजराक रोटी, बेसनक कड़ी, धनियाक चटनी आ संग मे गुड़।

(1) बाजराक रोटी

सामग्रीः–

बाजराक आटा - 1/2 किलो
देशी घी
नून - स्वादानुसार

विधि– आटा मे नून मिलाकऽ कनि-2 पानि दऽ कऽ बढ़ियाँ सँ सानि लिय ओकर बाद चेकला पर या हाथ पर ठोकि कें (जेना सुविधा होए)

रोटी बना लिय आ ऊपर सँ एक चम्मच घी दऽ बढ़ियाँ सँ मिला दियौ। गरमा गरम बाजराक रोटी तैयार अछि।

(2) बेसनक कड़ी

सामग्रीः–

दही - 1 कटोरी
बेसन - 1/2 कटोरी
हल्दी - 1/4 चम्मच
नमक - स्वादनुसार
सरसों तेल - 2 चम्मच
धनिया पता - काटल

फोरनक वास्ते - कड़ी पत्ता, मेथी, जीरा, राय, सुखल लाल मिरचाय (साबूत)

विधि– बेसन, दही आ ओहिमे डेढ़ कटोरी पानि अओर हल्दी मिलाकऽ निक सँ रहि सँ फेंट लिय।

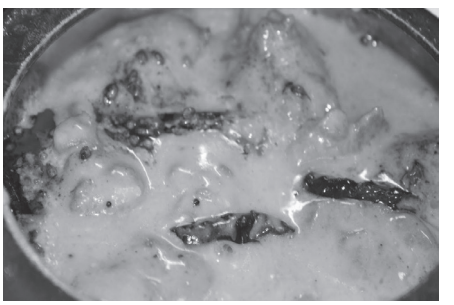

आब गैस पर कड़ाही मे फोरन तैयार कऽ लिय, कनि ढंडा भऽ गेलाक बाद दहीवाला मिश्रणकें ओहिमे मिला दियौ। पाँच सँ सात मिनट धरि करछुल सँ चला निक जकाँ पकाबैत रहु। बेसी गाढ़ भऽ गेला पर कनि गरम पानि मिला दियौ आ ऊबलि लिय। ऊपर सँ काटल धनिया पत्ता दऽ कें सजा लिय। बेसन कड़ी तैयार अछि।

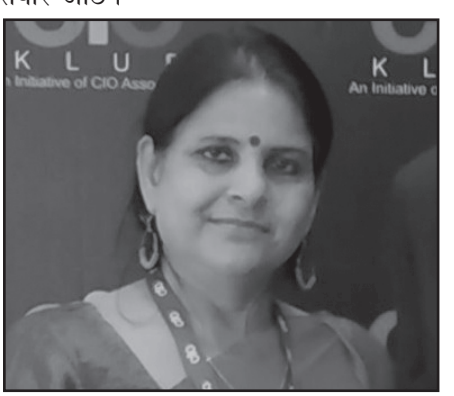

प्रतिभा चौधरी

(3) धनियाक चटनी

सामग्रीः–

धनियाक पत्ता - 2 गुच्छा
लहसून - 5-6 कलि
हरीयर मिरचाय - 5-6 टा
टमाटर - 3-4टा(मध्यम आकारक)
भुजल चना - 1-1/2 चम्मच
(बिन छिलकावाला)
आदि - एकटा छोट टुकड़ा
नून - स्वादानुसार

विधि– टमाटर आ हरियर मिरचाय कें छोट-छोट आकार मे काटि लिय। ओकर बाद मिक्सी मे टमाटर, धनिया पत्ता, लहसून, हरीयर मिरचाय, भुजल चना, अदरक आ नून मिलाकऽ पिस लिय। भऽ गेलु चटनी तैयार।

आब तीनू सामग्री तैयार अछि। बाजराक रोटी संग, बेसनक कड़ी आ धनियाक चटनी संग मे गुड़ दऽ गरमा-गरम खाऊ आ ठंडाक आनन्द लिय।

बीटरूटक कलाकंद/बर्फी

सामग्रीः–

ताजा चुकन्दरक रस - 1/4 कप
पनीर - 200 ग्राम
बादाम, पिस्ता - 1-1 चम्मच काटल
छोटकी ईलायची पाऊडर - 1/2 चम्मच
मिल्क पाउडर - 1 कप
चीनी पाऊडर - 1/4 चम्मच
देशी घी - 1/4 चम्मच

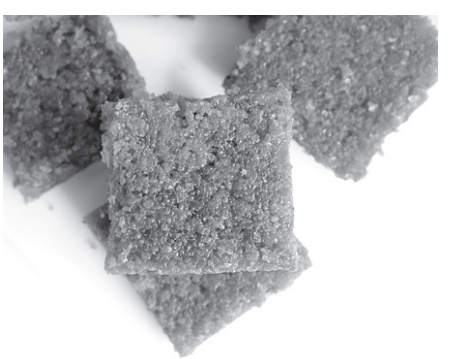

विधिः– दूध पाऊडर कें 10-12 सेकेंडक लेल कम आँच पर कनि भुनि लिय, ओकरा बाद ओहिमे पनीर आ चुकन्दरक रस मिलाकऽ पका लिय। जखन बढ़ियाँ जँका भुजा जाएत तऽ

ओहिमे ईलायची पाऊडर आ बादाम काटल मिला लिय। ओकर बाद एकटा थाली मे कनि घी लगाकऽ ओहि मिश्रण कें पसारि दियौ। ठंडा भऽ गेलाक बाद बर्फीक शेप मे काटि कऽ ऊपर सँ पिस्ता आ बादम दऽ कऽ सजा लिय। बस, भऽ गेल कलाकंद/बर्फी तैयार।

स्टफ्ड रसमलाई

सामग्रीः–

ब्रेड स्लाईस	- 5-6 टा
दूध	- 500 मि. लि.
छोटी ईलायची पाऊडर	- 1/4 चम्मच
सौंफ	- 1/4 चम्मच
मिल्क पाऊडर	- 1 चम्मच
बादाम	- 1 चम्मच (काटल)
पिस्ता	- 1 चम्मच (काटल)
चीनी पाऊडर	- 1 चम्मच
खोया	- 50 ग्राम।

विधि– 5-7 मिनट धरि दूध कें कम आँच पर औंटू, सौंफ दऽ कऽ कनि गाढ़ कऽ लिय। ओकरा बाद दूध कें छन्ना सँ छानि लिय। आब आधा कप दूध मे मिल्क पाऊडर मिलाकऽ फेर सँ दूध कनि ऊबालि लिय अओर ओहिमे ईलायची पाऊडर सेहो दऽ दियौ।

स्टफ्ड बनाबय लेल ब्रेड कें कटोरि सँ गोल-2 शेड मे काटि लिय, ओकर बाद खोया,

बादाम, पिस्ता, चीनी पाऊडर, ईलायची पाऊडर सबकें निक सँ मिला लिय। ओकर बाद ब्रेडक एकटा टुकड़ा पर खोयावाला मिश्रण राखि कऽ उपर सँ दोसर ब्रेडक टुकड़ा राखि कनि दबा दियौ, ऊपर सँ तैयार दूध दऽ कऽ बादाम आ पिस्ता सँ सजा लिय। भऽ गेल स्टफ्ड रसमलाई तैयार। ❐

बसंतक चमकैत मेकअप

संतोषी कर्ण

सब सँ पहिने सबटा केश कें खोपा (जुड़ा) बना लिय वा बाइन्ह लिय तकरा बादे मेकअप शुरू करू।

1. Cleaning – आब चेहरा कें Cleaning milk सँ साफ कऽ लिय एकर अलावा अहाँ रोज वॉटर सेहो इस्तेमाल कऽ सकैत छी। अगर मुहाँसा नुकेबाक होए तऽ थपथपा कऽ साफ करब, रगड़ि कऽ नहि।

2. Astrirngent Lotion – एहि lotion कें कनिक रूईया मे लऽ कऽ जतए-जतए पसीना आबैत अछि ओतय थपथपा कऽ लगा लिय एहि सँ पसीना नहि आएत।

आब हाथ मे कनि NIVEA Soft Cream लिय ओकरा चेहरा पर लगा कऽ नीक सँ मिला लिय जौं आईब्रो हल्का अछि तऽ आइब्रो पेंसिल लगा लिय। आब Mattcounder लिय आँखि कें आस-पास ऊपर नीचा लगा लिय। ई बेसक लेल नीक होईत अछि। एकरा बाद आई शेडो लिय, कपड़ा (dress) सँ मिलैत-जुलैत वा फेर कॉमन चुनब। Colour कें आँखि पर लगा लिय। आईशेडो अहाँ दू रंगक सेहो इस्तेमाल कऽ सकैत छी। आब आई लाईनर लगा लिय। एकरा बाद मस्करा लगाउ। अगर अहाँकें इच्छा होए तऽ आईलैशेश सेहो लगा सकैत छी, ई कोनो Cosmeticsक दुकान मे आसानी सँ भेट जाएत। आब Primer लिय आ पुरा चेहरा पर नीक सँ लगा लिय। आंखि छोड़ि कऽ किएक तऽ आँखिक मेकअप भऽ चुकल अछि।

आब Foundation पुरा चेहरा पर लगा लिय। याद राखब जे Foundation चेहरा कें रंगक हिसाब सँ आबैत अछि तऽ Face सँ एक शेड लाईट लेब। ओकरा बाद Councler सँ डार्क हरिया कें Cover करू। Counclear सेहो कतेको तरहक आबैत अछि जौं Face पर ठोस दाग-धब्बा अछि तऽ ओहि हिसाब सँ Councler लेबय परत।

एकरा बाद लिय Compact ओकर पुरा Face पर हल्का-हल्का ब्रशक सहायता सँ लगा लिय आब Bronger (ब्रोन्जर) ब्रशक सहायता सँ गाल पर लगा लिय ओकरा बाद ब्लशर सेहो गाल पर लगाउ। आब हाई लाईटर पुरा Face पर लगा लिय। अहाँक ईच्छा होए तऽ आँखिक नीचा काजर लगा सकैत छी। अन्त मे टुकली (बिन्दी) लगा लिय।

(नोट–Make-up product कोनो नीक कम्पनीक इस्तेमाल करब)

आशा करैत छी जे लगनक समय मे अहाँ सब एहिसँ लाभ उठायब। ❐

Mob.: 9716144102
संतोषी कर्ण
Women's Creation
मिथिला में शुभ संस्कार-विवाह, मुण्डन, चुड़ाकड़न, आ पावैन-तिहार
सऽ सम्बंधित कोनो सामग्री के आवश्यकता हुया तऽ सम्पर्क करि।

जय मिथिला, जय मैथिली
एफ-17, सिद्धार्थी एन्कलेव, भगवती गार्डन एक्स., जैन रोड़, उत्तम नगर, नई दिल्ली

आदिकाल सँ मिथिलाकेँ अपन ललना पर गर्व रहल अछि। सीता, गार्गी, मैत्रीय, भारती आदि कतेको एकर प्रत्यक्ष प्रमाण छथि। मैथिलानी सदिखन अपन व्यक्तित्व आ कृतित्व सँ अपन समाज आ देशक नाम ऊँच करैत आबि रहल छथि।

एहि स्तम्भक माध्यमे वर्तमान मे मिथिला आ देशक नाम ऊँच करयवाली मैथिल धियाक परिचय पाठक लोकनि सँ कराओल जाएत।

- सम्पादक

हिमानी दत्त

मिथिलाक पहिल व्यवसायिक महिला पाइलट

दादाजी की हूर-हूर, दादी-माए-पिताजीक डुल-डुल अओर वर्त्तमान मे मिथिलाक पहिल व्यवसायिक महिला पाइलट - हिमानी दत्त। कतेक जल्दी समय व्यतित भऽ गेल।

2006 मे हमसभ काठमाण्डू सँ दिल्ली आबि गेलौंह। समय व्यतित भेल, हमर डुल-डुल आब कक्षा 12वीं उत्तीर्ण भऽ चेन्नईक S R M University सँ इंजिनीयरिंगक अध्यापन लेल चलीह गेल।

2 सालक पढ़ाई केलाक उपरान्त एक दिन भोरे-भोर कहैत अछि "पापा हम सेहो अहिं जँका पाइलट बनब"। कनी काल हम दूनू परानी सोचि कऽ हमर अपन अनुभवक अनुसारेँ हिमानी लेल जतेक जे व्यवस्था चाही कऽ देलौंह।

पुनः हिमानी पाइलटक प्रशिक्षण लेबा लेल नर्सिमोंजी विश्वविद्यालयक उड्डयन संस्थान, शिरपुर लेल चलि गेल। शिरपुरक प्रशिक्षणक उपरान्त C P L (Commercial Pilot Licence) DGCA द्वारा प्राप्त कएलाक बाद Airbus -320केँ प्रशिक्षण बहरीन सँ प्राप्त कएलक अखन Go Airlines मे सह Co-Pilotक रूप मे कार्यरत अछि।

कतेको प्रकारक शंका छल जे पढ़ाईक उपरान्त नौकरी आ ओहु सँ बेसी महत्वपूर्ण जे विवाह मे दिक्कत होएत बेटी केँ। संभवतः हम पहिल पाइलट छि अपन जातिक मिथिला मे आ हिमानी पहिल महिला पाइलट सम्पूर्ण मिथिला मे।

कहल जा सकैत अछि जे हिमानीकेँ पिता सँ विरासत मे जिंदादिली आ साहसक रूपमे पाइलट बनबाक प्रेरणा भेटलैंन्ह अओर माता श्रीमती अंजु दत्तक दिस सँ पूर्ण सहयोग। हिमानी कहैत छथि, "माँकेँ बड्ड बेसी सहयोग आ हुनक ईच्छा छलैन्ह जे ओ अपन बेटी केँ पाइलटक ड्रेस मे देखैथ।" रेकॉर्ड 9 महीना मे अपन प्रशिक्षण समाप्त कऽ कऽ अखन GO AIRLINES मे सेवारत छथि।

हिमानी केँ अनुसारे पूरा दुनिया मे सबसँ ज्यादा महिला पाइलट भारत मे अछि, एहि लेल हमरा सबकेँ गर्व करबाक चाही। मुदा अपन मिथिला मे सेहो बेटी केँ पाइलट बनबाक लेल प्रोत्साहित करक चाही।

हिमानी केँ कर्ण कायस्थ महासभा द्वारा जून 2018 पटना अधिवेशन मे सम्मान कएल गेल। तत्पश्चात् मुंबई मे कर्ण गोष्ठी, मुंबई द्वारा सम्मान कएल गेल।

7 दिसम्बर 2019क प्रेस क्लब ऑफ इंडियाक मैथिली पत्रकार ग्रूप द्वारा 'मिथिलाक महिला मिथक तोड़य मे कतेक कामयाब' मे आमंत्रित कएल गेल छल।

राँटी, मधुबनीक हिमानी पर दादी, परिवार, ग्रामीण आ समस्त मिथिलाकेँ गर्व छैन्ह।

❐

तिल बहब

कंचन कंठ

“हे रे बाबू नञि हमर, तिलगुड़ खा ले कनेक। हे कनियेटा खा ले हमर हाथ सँ। हे, हमरो बात मानू ने कनेक” आकाशक माए अपन पोता कें नेहोरा करैत जा रहल छलीह आ ओ बच्चा कारी तिल देखि भागल घुरय।

“ओ बच्चा छै, नै खाय चाहै छै तऽ छोड़ि ने देथुन” रूमा, मने आकाशक कनियाँ बाजि उठलीह।

“हे, अहाँ तऽ बीच मे बाजू नहि, एतेक माँगि-चाँगि कऽ एकटा पोता देलैथ बाबा विदेसर! आ तिनको सौं तिल-चाउर नञि बहैब से कोना!” कतेक पछरा-पछरी कऽ कऽ आखिर ओ खुआये कऽ मानलीह।

ओहि दाई कें आई बड्ड मोन खराप छलैन्ह परंच ओ सबकें ई कहि रहल छलीह जे बौआ कें खबरि नहि करियौन्ह, साल खराब भऽ जेतैन्ह। अखन हुनकर मेडिकलक फाइनल ईयर छैन्ह।

अनमोलक मोन आई बड्ड औना रहल छलैन्ह। तिलासंकराति अबिते, अतीत चलचित्र जेना घूमय लागल। ओ अपन संगी कें कहि घर लेल प्रस्थान केलैन्ह। भोरूका फ्लाइट लेलाह, ओना तऽ मुंबई मे साइत भगवान भेटि जेताह, मुदा अवसर पर ट्रेनक कन्फर्म टिकट तऽ भेटनाई मोश्किल आ समय से कहां अछि ओतेक!

घर मे घुसैत देरी दाई लग गेलाह, “दाई आबि गेलहुँ, तिल-गुड़ दिय ने, आब बदमासी नहि करब। अहि रे बा! ई कि, दाई तऽ बिछान धेने छथि आ हमरा कियो बतेलहुँ नहि!” बजैत-बजैत आंखि सँ अश्रुधार बहि गेलैन्ह।

ओ फटाफट अपन कॉलेज मे दाई लेल एकटा सीट बुक करौलैन्ह, अपन एच ओ डी सँ हुनकर बीमारी बता सलाह लेलैन्ह आ दोसरे दिन सपरिवार मुंबई आबि दाईक सेवा-बरदाइस मे लागि गेलाह।

आई तीन मास भऽ गेल। दाईकें ल्यूकीमियाक फस्ट स्टेज छलैन्ह ओ परीक्षाक संग दाईक पूर्ण ध्यान सँ सेवा कऽ स्वस्थ आ ठाढ़ कऽ देलैन्ह। माए-पापा सेहो संगे छलाह।

आब दाई कें काल्हि अष्ट विनायक यात्रा पर लऽ जा रहल छथि। कोनो हड़बड़ी नहि आरामक ख्याल राखैत यात्रा करेथिन्ह।

दाई मोनेमोन गदगद छलीह अपन सौभाग्य आ पोताक तिल बहब संस्कार पर। ❐

गनगुआरि

कुमार मनोज कश्यप

दोस्त-महिम कें कतेक चेरियेला पर कोन-कोन धरानिये एक-एकटा पाए जोड़ि कऽ ओ दू रूमक एकटा फ्लैट बुक करा पाओल रहैथ। बैंकक किश्त चुकाबय केर चक्कर मे खान-पान, रहन-सहन सभहक स्तर खसि कऽ न्यूनतम भऽ गेल रहय। सदिखन मोनेमोन हिसाब लगाबैथ जे फ्लैट भेट गेला पर मकानक किराया बाँचि जाएत आ तखन आर्थिक स्थितियो सुधरि जाएत।

अपन सोचल कहियो केकरो भेलैयै? फ्लैटक कब्जा मे देरी पर कतेको कोर्ट केस मे बिल्डर के भेल सजा सँ उत्प्रेरित भऽ इहो सभ दिन-राति एक कऽ कऽ यूनियन बनेलक आ शुरू केलक धरना-प्रदर्शनक दौड़।

एम्हर बिल्डर दिस सँ सबकें नोटिस भेटल, दू लाख रूपया अओर जमा कराबय लेल। कारण निर्धारित ‘सुपर बिल्ट-इन-एरिया’ अंतिम निर्माण मे बढ़ि गेल छल। धरना-प्रदर्शन अओर जोर पकड़लक आ विचार अदालतक दरबाजा खटखटेबा धरि कें भऽ रहल छल। बिल्डर दिस सँ विचार-विमर्शक न्योत भेटला पर कतेक दौड़क मीटिंग भेल।

एक दिन मीटिंग सँ बाहर आबि एकरा सभहक प्रतिनिधि सबकें सम्बोधित करैत कहलक - “एरिया कें संग-संग निर्माण-सामग्रीक लागत बढ़ने ई बढ़ल राशि हमरा सबकें देबय पड़त। बिल्डर अपना घर सँ डाँड़ तऽ नहि सहतै? हमरा सभ लेल खुशखबरी अछि जे अहाँक प्रतिनिधि सभहक सतत जोर देला आ कतेक घमर्थनक बाद बिल्डर दस प्रतिशत राशि कम करबा लेल तैयार भऽ गेल अछि। जएह हाथ सएह साथ। आब हमरा सभ बाकी रकम जतेक जल्दी जमा करबा देबै ततेक जल्दी फ्लैटक कब्जा भेट जाएत। अहाँक फ्लैट बनल तैयार अछि गृह प्रवेशक लेल।”

लोकक मुँह खुलल कें खुलले रही गेल। सभा सँ लोक मुँह बिधुओने घर घुरि रहल छल, चेहरा पर मुस्कान छल तऽ मात्र नेता सबकें।

❐

फेसबुक

अरूण लाल दास

"हैत घड़ी तँ अहाँ फेसबुकिया फेसबुकिया खेलाइत रहैत छी।

अओर तऽ कोनो काजे नञि रहि गेल। सबटा दूध जरि कऽ खाक भऽ गेल, मुदा अहाँ लेल धैन सन। महको नञि लागल। आब एखन दूध भेटबो नै करतै। कथी हमर बच्चा पिअत। रिटायर भऽ गेलौंह तकर की माने। एकटा काज जहाँ कहि दैत छी, कि अहाँक मोन घोर भऽ जाइयै। हमहीं कते करू। भोर सँ नचिते रहैत छी। बच्चा हमर कनैत-कनैत लहालोट भऽ जाइयै मुदा ताहिसँ अहाँकेँ की? इसकुलक बेर से भेल जाइ छै। ओकर डायरी मे की लिख कऽ देलकै से देखलियै। कथि लेल। ओहो हमहीं देखबै।" ओ एकहि साँस मे बाजि गेलीह।

हमर नतनीयो कम नञि। नानीकेँ तरफदारी करैत ओहो भला कतय चुप रहयवाली। अछि त तीने बरखक मुदा नानी केर इनसल्ट नै बर्दास्त कऽ सकैए।

- नन्ना फोन बाजे। इस्कू मे मैम गुछ्छा करे। डायरी देखा नै।

- हँ बेटा नै देखा।

- कल न हम खूब झूला पर झूला। केक भी खाया। मजा आ गया नन्ना। हैपी बरडे नानू। केक आनदो न। बरडे मनाऊँ। नन्ना फोन।

ओ बजिते रहि गेल।

- बाजै छैं तखन तऽ बुझू जे मिसरीयो सँ मीठ आ जखन तान धरै छैं तऽ तोरा आगाँ सब फेल। हमर केसकेँ लीरी-बीरी कऽ कऽ हमरा चटनी बना दैत छैं। एको मास नै भेलौ सबटा किताब फाड़ि कऽ बैस गेलैं। पढ़बैं कि कपाड़। चटनी बना लेलैं किताबक।

भाई जीक फोन रहय। सुनै छियै सन्नीक नानी। नै सुनै छियै। अहाँकेँ जरूरियो बात कहैत छी तऽ एहिना अन्ठिया दैत छियै आ फेर कहय लागैत छी जे अहाँकेँ कहने नै रही।

सन्नीकेँ नानी एखन किछु नै सूनक लेल तैयार हौ बाबू। कें झगड़ा करत। भोजनो पर आफद भऽ जैत। दूधक जोगाड़ करहिये पड़त।

आस्ते-आस्ते हमर सन्नी इसकुल ड्रेस पहिर, मौजा लगा जुत्तका फीता बान्हि, हमरा बाई-बाई नानू करैत अपन नानीक अंगुरी पकड़ि इसकुल जा रहल अछि।

ता मे हम दूधक जोगाड़ मे स्कूटर स्टार्ट करैत छी। ❐

खसल दुश्मन दुश्मन नहिं

डॉ. परमानन्द लाभ

द्वापरक गोविन्द अनवरित भेलाह कलियुग मे, कहौला– गुरु गोविन्द सिंह।

दशम पालशाह गुरु गोविन्द सिंह!!

गुरु गोविन्द सिंह जेहने आध्यात्मिक छलाह, ओहने रणभूमि मे करतब देखएनिहार।

मुगल संग गुरु महाराज कें भीषण युद्ध करय पड़लैन्ह। ओ युद्ध मे खसल सैनिक कें पानी पिएबाक हेतु एकटा सिख सरदार कें आदेश देलैन्ह।

सिक्ख सरदार अपन घायल खसल सिपाही कें तऽ पानी पीऐबे करैत छल, संगहिं शत्रु खेमाक खसल सिपाहियों कें पानि पिआ दैत छल।

सिख सरदारक एहि काजक शिकायत अओर सिख सभ गुरु गोविन्द सिंह धरि पहुँचोलक। पहिने तऽ गुरु महाराज एहि बात कें टाड़ि देलैन्ह, मुदा जखनि हुनका समक्ष अनवरत ई प्रसंग आयल, तऽ ओ ओहि सिख सरदार कें बजा पुछलैन्ह –

"सरदार! अहाँ की करय छी?"

"जे हुजूरक आज्ञा अछि।" हाथ जोड़ि सरदार कहल।

"की दुश्मनक घायल खसल सिपाही कें सेहो पानि पीबैत छी।"

गुरु महाराजक एहि सवालक जवाब सरदार देल– "जी हँ गुरुदेव"।

गोविन्द सिंह–"किएक?"

हाथ जोड़ि विनम्र भाव सँ सरदार निवेदन कएल– "महाराज! जा धरि ओ हमारा सँ लड़ैत रहल, ता धरि ओ हमर दुश्मन छल। जखनि ओ रणभूमि मे खसि गेल, तऽ ओ दुश्मन कोना रहल? दुश्मन नञि रहल।"

गोविन्द सिंह आसन छोड़ि सिक्ख सरदार कें गरा सँ लिपटि गेलाह अओर प्रसन्नता सँ गद्गद् स्वर मे बजलाह– "वाह, भाई वाह! अहाँक विचार श्रेष्ठ आ पवित्र अछि। अहाँ धन्य छी। जाऊ, अहाँ अहिना करू।"

एहि प्रकारें गुरु गोविन्द सिंह 'गुरु आ गोविन्द' दूनू छलाह। ई हुनक ज्ञानक गंभीरता छल, जे रणभूमि मे दुश्मनोक प्रति सहिष्णुता, दयालुता, उदारता आ परोपकारिताक भाव राखैत छलाह।

❐

भावांजलि (गद्य गीत)

विनीता मल्लिक

भावांजलि (गद्य गीत) अपन नामकेँ पूर्णतः तर्कसंगत कऽ रहल अछि। एहिमे तुकान्तक नहि वरन् गद्य जकाँ सरल गीत अछि जे अपन भावसँ पाठकक हृदय छू रहल अछि।

प्रस्तुत पोथी मे 51टा कविता अछि जे कवयत्रीक समस्त उद्‌गार ओहि अनदेखल अदृश्य प्रियतमक संधान अछि जकर खोज मे वो व्याकुल, अधीर भऽ रहल छथि।

डॉ. शेफालिका वर्मा जीक रचनाक विशेषता अछि जे ई किछुए पढ़ि लेला सँ संतुष्ट नहि करत वरन् पठन पिपासाकेँ अओरे बढ़ाइए देत आ हृदय मे वएह भाव संचरित होमय लागत जाहि भावे ओ लिखल अछि।

आंजुर भरि भाव लय हम
अहाँक समक्ष नमित
भ रहल छी प्रभो!
....कोना अर्ध्य दी एहि
भावांजलिक देवता!....

पंडित गोविंद झा भावांजलिक तुलना गीतांजलि सँ करैत कहैत छथि, "लेखिका छंदक कंचुकी मे बान्हि देने रहितैथ तऽ भावांजलि गीतांजलि भ जेतयैक।"

कालिदास सँ लऽ कऽ विद्यापति धरि पढ़ैत-पढ़ैत श्रृंगाररस सँ मन उमेठी गेल, मुदा एकर श्रृंगार नञि भोजपुरी फिल्म जकाँ अश्लील अछि आ नञि कालिदास जकाँ चर्ममय, एहिमे जे रस अछि से दैहिक नहि आत्मिक आ आध्यात्मिक अछि। व्यष्टि विराटकेँ छुबैत, तऽ बिन्दु सिंधुकेँ छुबैत। एहिमे अछि छायावाद युगक कोमलता, सरसता आ प्रशांति।

वास्तव मे भावांजलिक प्रत्येक आखर मे प्रभुक आकुल संधान अछि। आत्माक परमात्मा सँ मिलबाक बेचैनी, छटपटी। अंत मे वो अनुभूत करै छथि जे जिनका खोजि रहल छी, कस्तूरी मृग जकाँ भटकि रहल छी ओ तऽ हमर हृदय मे अवस्थित छथि।

कवयित्री निर्गुण निराकार ब्रह्मक उपासिका, कबीर पंथी सन छथि। मन्दिर मनक चैन लेल जाएत छथि, ओहिठामक भीड़ देखि ओ हताश भऽ घुरि जाएत छथि। तखन हुनका भान होएत छैन्ह जे परमात्मा तऽ हृदयरूपी मन्दिरे मे अवस्थित छथि। हृदयकेँ जतेक काम-क्रोध-मोह आदि सँ स्वच्छ राखब ओतेक परमात्माक संग तादात्म्य होइत रहत। जखन ई अनुभूति भऽ जाए छैक तऽ कवयित्री अपन हृदयकेँ पूर्णतः मन्दिर बना लैत छथि। जतय-जतय तीर्थ मे गेलीह देवताकेँ अपन हृदय मे स्थापित कऽ लऽ आनय छलीह। तखन मनुखकेँ अवाहन करैत छथि जे अहाँ झूठे लोक केँ देखेबा लेल तीर्थ करय जाएत छी, मन मन्दिर केँ साफ राखु प्रभु अहाँक हृदय मे बास डीह लऽ लेताह। प्रभु ओ अदृश्य शक्ति छैथ जिनका लेल संदेह-शंका, तर्क-कुतर्क त्यागि, मात्र हुनका अनुभूत करू, नीक कर्म करू।

एहि तरहक कतेको भाव खण्ड अखण्ड सँ विचरैत भावांजलिक कविता सब सभहक हृदय सँ तादात्म्य भऽ जाएत अछि।

पढ़ैत-पढ़ैत कखनहुँ एना लागैत छैक जे मानवताक प्रति प्रेम बौआइत-बौआइत जेना भगवान दिस उन्मुख भऽ जाएत छैक। कवयित्रीक जीवन-यात्रा जेना प्रेम-प्यार सँ आरम्भ भऽ प्रेम सँ अंत भऽ जाएत छैक।

प्रख्यात मैथिली साहित्यकार जगदीश प्रसाद कर्ण 'भावांजलि' दऽ लिखने छथि, "भावांजलि, भाव जगत् केर यात्रा, आत्माक लहरि, भक्तिक आलोड़न, ओहि अदृश्यक दृश्य सृजन... की कहू तत्काल अओर पुनः चिरकाल अवगाहनक वस्तु थीक। हम बूझैत छी ई वास्तविक कविता थीक जकरा विषय मे अंग्रेजीक कवि टी. इस इंलियट कहलैन्ह- "We enjoy poetry before we understand it" कविता केँ बुझबा सँ पहिने हम ओकर रस मे लुब्ध भऽ जाइत छी, ओकर रसास्वादन करय लगैत छी। तैं जेना प्रथमहिं हमरा आकृष्ट केलक तहिना निरन्तर ई आकृष्ट करत - सेहो पीरीत अनुराग बखानिय तिल-तिल नूतन होए। क्षणे-क्षणे यन्नवत्यमुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः। एक्के साँस मे पढ़बा योग्य आ साँस-साँस मे अनुभव करबा योग्य जाहिसँ पाठक मीरा बनि जाए- मैं तो गोविन्द के गुण गाऊँ।"

एक-एक पाँति एकर भाव गुम्फन, भाव लहरिक, ओहि अरूपक जे शब्दगत अहाँ आरती सजावोल अछि, तकर आरती उतारल जाएत। हम किछ अपन आवेग व्यक्त कएल अछि जे शब्दगत रोकने नहि रूकि सकैत अछि। अहाँ अपना डुमरा गामक (माटिक) नहि भू माताक ओहिना भक्तिपूर्ण पूजन कएल अछि जेना अयोध्याक सीमा पार करैत काल स्वयं श्रीराम मातृभूमिक माटि अपना रथ मे राखि पुनः अयोध्याक भूमिकेँ प्रणाम कऽ तखन आगाँ दोसर राज्य वा प्रदेश मे प्रवेश कैलन्ह। ❐

भावांजलि (गद्य गीत)
कवयित्री - डॉ. शेफालिका वर्मा

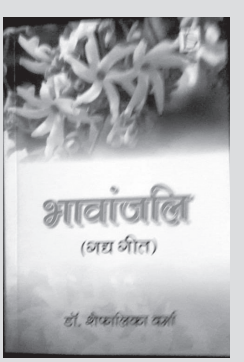

मूल्य - 100 रुपया
प्रथम संस्करण - 1996 (भाखा प्रकाशन)
द्वितीय संस्करण - 2019 (ब्रोसिस प्रकाशन)

पत्राचारक पता : ए, 103, सिग्नेचर व्यू अपार्टमेंट्स, डीडीए एचआईजी फ्लैट्स
डॉ मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
मो: 9311661847, ईमेल: shefalika1943@gmail.com

मिथिलाक बाढ़ि

कुसुमलता देवी

सुनियौ यौ भैया बिहारक बाढि मे
सब मिल करय छै काँय-काँय-काँय।

पेट मे अन्न नहि, देह पर नञि कपड़ा,
आंगन मे टाट नहि, घर पर नञि खपड़ा,
घर मे डिबिया छूछे परल छै,
बाती जड़ै छै धाँय-धाँय-धाँय।

घर मे बाढ़िक हिलकोरा मारने,
आंगन दहायल संग खेत खरिहाने,
रोड पर सब कपार पिटै छै,
काग जकाँ करै छै टाँय-टाँय-टाँय

जखने हेलीकॉप्टर आबैयै,
सबहक मन मे विहारी उठैयै,
नैना भूटका दौड़ लगाबै छै
रोड पर करै छै खाँए-खाँए-खाँए।

पैकेट कें लुट लेल मारि पड़य छै,
निर्बल कानय छै बलगर पाबय छै,
स्वार्थी सब भितरे भितरे जड़ै छै,
हम नञि लूटय छी हाय-हाय-हाय।

सरकारो कें दैत-दैत होश उड़य छै,
तखनो नहि ककरो पेट भरय छै,
'कुसुम' सबटा तमाशा देखय छै,
विचार कऽ लिखय छै ताँइ-ताँइ-ताँइ।

बिगड़ल छै कोशी आ कमला बलान

ज्ञानेन्द्र भाष्कर

भोरक भोरहरबा मे रातिक अन्हरिया मे
बहि गेलै अंगना-दलान
बिगड़ल छै कोशी आ कमला बलान।

अगिया बेताल जकाँ बाढ़ि सनसनाई छै,
माल-जाल गाछ-बिरिछ सबटा दहाई छै,
बहि गेलै बड़को दलान
गामक चौहद्दी कें नञि छै कोनो ठेकान
बिगड़ल छै कोशी आ कमला बलान।

माए कनय छै बाबू तकय छै,
भैर घर जले-जल किछुओ नञि सूझै छै,
नेना कें नहि भेटै निशान
बिगड़ल छै कोशी आ कमला बलान।

भूखे पियासे लोक सब अलगे मरय छै,
मिथिला केर भाग्य पर मैथिल कनय छै,
केकरो नञि कोनो धियान
बिगड़ल छै कोशी आ कमला बलान।

मिथिला केर पागक इज्जत बचाऊ यौ,
मैथिल महान जन रस्ता सुझाऊ यौ,
सब मिलि करियौ निदान
'ज्ञानेन्द्र' विह्वल भऽ लिखलैन्ह ई गान
बिगड़ल छै कोशी आ कमला बलान।

साइबर कैफे मे सावधान रहू

कमांडर (रि.) के के चौधरी

एहन अक्सर होइत अछि जे अपना सबकेँ कोनो कारण सँ साइबर कैफे जाए पड़ैत अछि। ओ चाहे कोनो डॉक्यूमेंटक प्रिंट लेबाक लेल होए वा अपन ईमेल देखबाक होए वा कोनो बैंक ट्रांजैक्शन करबाक लेल होए। मुदा साइबर कैफे मे जौं किछु सावधानी नहि राखल जाए तऽ बहुत नुकसान भऽ सकैत अछि। अपना सबकेँ सविता जीक संग घटल एहि घटना सँ जरूर सीख लेबाक चाही।

सविताजी अपन दोस्त सभहक संग कश्मीर घूमय गेल छलीह। जम्मू मे हुनका मोबाइल मे एकटा मैसेज एलैन्ह जे हुनकर क्रेडिट कार्डक पेमेंटक आई अंतिम दिन छैन्ह। हुनका याद एलैन्ह जे ओ क्रेडिट कार्डक पेमेंट समय पर करनाए बिसरि गेलैन्ह आ जौं आई पेमेंट नहि भेलैन्ह तऽ काफी ब्याज देमय पड़तैन्ह। समय कम छलैन्ह किएक तऽ दू घंटा मे घूमय लेल निकलय केँ रहैन्ह, तैं ओ कोनो साइबर कैफेक ताक मे छलीह। होटलक बगले मे एकटा साइबर कैफे भेट गेलैन्ह आ ओ ओतय पहुँचि गेलीह।

इंटरनेट बैंकिंग द्वारा ओ अपन क्रेडिट कार्डक पेमेंट कऽ देलैन्ह आ चलैत-चलैत ओ एकटा ईमेल अपन भैयाकेँ सेहो कऽ देलैन्ह जाहिमे एखनि धरिक यात्रा आ आगाँक प्लानक बारे मे सूचना देलैन्ह। वापस होटल जा कऽ किछु देर बाद संगी सभहक संग घूमय लेल निकली गेलैथ।

दोसर दिन जखनि ओ अपन संगी सभहक संग लद्दाख पहुँचलीह तऽ हुनका मोबाइल पर एकटा मैसेज भेटलैन्ह जे तीस हजार रूपया हुनकर अकाउंट सँ निकलि गेलैन्ह। सिग्नल सेहो कम छलैक आ ओ बैंक सँ सेहो संपर्क नहि कऽ पाबि रहल छलीह। कहुना दू दिन बीतल आ ओ जम्मू वापस पहुँचलीह। पहुँचते ओ अपन भैया केँ फोन कऽ केँ अपना अकाउन्ट सँ तीस हजार रूपया निकलबाक बात बतेलखिन कि एकटा आर सूचना हुनका हिला देलकैन्ह।

जखने ओ अपन भैया केँ फोन केलखिन तऽ हुनकर भैया कहलैन्ह जे घर मे सब कियो हुनकर ईमेल पढ़ी कऽ बड्ड चिंतित रहैथ। पापाकेँ हुनका ईमेल सँ पर्स हरेबाक बारे मे जानकारी भेटलैन्ह आ ओ कतेक बेर फोन कऽ केँ पूछबाक कोशिश केलैन्ह, मुदा फोन 'संपर्क सँ बाहर' छलैल्ह। अंत मे, ईमेल मे लिखल बातक आधार पर ओ दस हजार रूपया हुनकर दोस्तक खाता (जकर विवरण हुनक ईमेल मे रहय) मे ट्रांसफर कऽ देलैन्ह। बाद मे पता चलल जे पापा सेहो (जे दोसर शहर मे रहैत छलाह) ओहने ईमेल पाबि दस हजार ओहि खाता मे ट्रांसफर कऽ देलैन्ह।

सविता कपार पकड़ि कानय लगलीह आ सोचय लगलीह जे कोना भेलै ई सब!

कोना भेलै ई?

दरअसल होटलक आसपास किछु एहन गैंग होइत छैक जे निर्दोष आ अनजान यात्री

पर विशेष नजर राखैत अछि। ओकरा एहन टूरिस्ट सभहक प्रोग्रामक बारे मे पता रहैत अछि जे यात्रा कतेक दिनक अछि आ कोन दिन ओ एहन स्थान पर रहत जतय फोनक सिग्नल नहि केँ बराबर रहत।

साइबर क्रिमिनल एहन टूरिस्ट सबसँ पैसा ठगय लेल साइबर कैफेक कंप्यूटर मे एकटा प्रोग्राम लोड कऽ दैत छैक जेकरा **'की लोगर'** कहल जाइत अछि। **की लोगर** प्रोग्राम कंप्यूटरक की बोर्ड मे टाइप कएल हर अक्षरक कॉपी कऽ केँ अलग फाइल मे जमा कऽ दैत अछि।

जखनि सविताजी साइबर कैफे मे बैंक अकाउंट आ ईमेल खोलने हेतीह तऽ टाइप कएल सब अक्षर अलग फाइल मे जमा भऽ गेल हेतैक। हुनका गेलाक बाद साइबर क्रिमिनल केँ ओहि फाइल सँ बैंकक अकाउंट नंबर आ पासवर्ड भेट गेल संगे ईमेलक एड्रेस आ पासवर्ड सेहो भेट गेल। ईमेल सँ भैयाक आ पापाक ईमेल एड्रेस सेहो भेट गेल।

ओ बैंक अकाउंट केँ खोलि कऽ तीस हजार रूपैया (संजोग सँ अकाउंट मे लगभग ओतबे रूपैया रहय) केँ ट्रांसफरेटा नहि केलक अपितु भैया आ पापा केँ अलग-अलग ईमेल सेहो केलक आ बतोलक जे ओकर पर्स हेरा गेल जाहिमे ओकर डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड आ कैश रहय अओर कहलक जे तत्कालक खर्चा वास्ते दस हजार रूपया एकटा संगीक खाता मे जमा कऽ देल जाए जाहिसँ ओकर डेबिट कार्डक प्रयोग कऽ केँ ओ तात्कालिक खर्चाक लेल पैसा निकालि सकैथ। संगहि 'अपन संगी'क बैंक अकाउंटक विवरण सेहो दऽ देल गेलकैन्ह।

भैया केँ किछु शंका अवश्य भेलैन्ह मुदा फोन नहि लागलाक कारणेँ ओ रूपया ट्रांसफर करनाए जरूरी बुझलैन्ह। पापा तऽ चिंतित भऽ तुरंते रूपया ट्रांसफर कऽ देलैन्ह।

करी की?

1. सबसँ पहिले तऽ ई ध्यान राखी जे साइबर कैफे वा फ्री वाई-फाईक उपयोग कऽ केँ एहन कोनो साइट नहि खोली जाहि मे कोनो गुप्त सूचना (जेना यूजर नाम वा

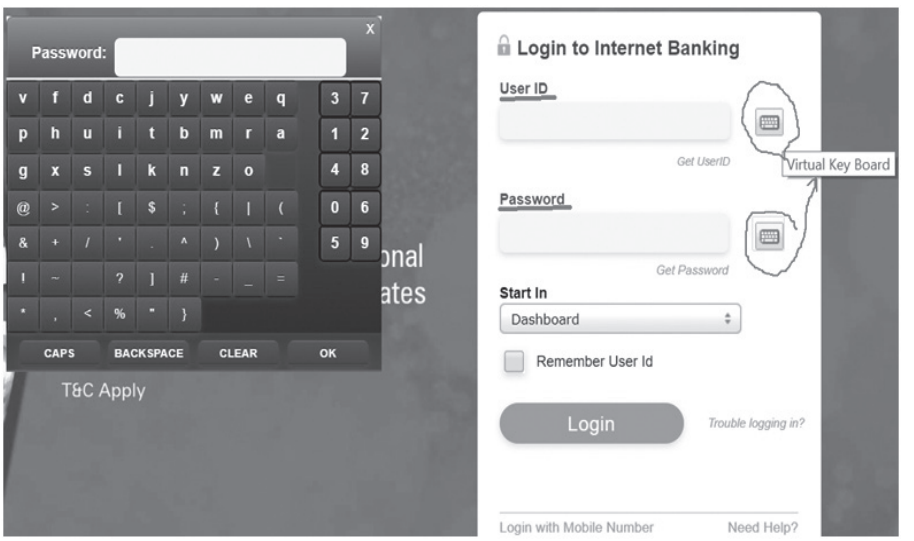

पासवर्ड) कें टाइप करबाक जरूरत होए।

2. जौं ई बड्ड आवश्यक होए तऽ ई सूचना **'की बोर्ड'**क उपयोग कऽ कें नहि करी। एहन लगभग सब साइट पर 'वर्चुअल की-बोर्ड'क व्यवस्था सेहो होइत छैक, जकर उपयोग करबाक चाही। चित्र मे वर्चुअल की बोर्ड देखाओल गेल अछि।
3. वर्चुअल की-पैड मे कोनो अक्षर कें टाइप नहि करबाक जरूरत होइत अछि। एहिमे सब अक्षरक एकटा पैड रहैत अछि जाहिमे सँ अक्षर कें क्लिक कऽ कें चुनय पड़ैत अछि। एहन स्थिति मे 'की लोगर' प्रोग्राम कें ई पता नहि चलैत अछि जे कोन अक्षर टाइप कएल गेल अछि आ साइबर क्रिमिनलक ई ट्रिक फेल भऽ जाइत अछि।
4. जाहि अकाउंट मे वर्चुअल की बोर्डक व्यवस्था नहि होए ओकर उपयोग कम-सँ-कम साइबर कैफे आ फ्री वाई-फाई मे नहि करी तऽ नीक।
5. कतेको साइबर कैफे मे कैमरा सेहो छिपल रहैत अछि, तैं कोशिश करी जे कोनो सूचना क्लिक करैत काल दोसर हाथ आ शरीर सँ ओकरा नुका कऽ क्लिक करी।
6. जौं अपन सगा-सम्बन्धी वा दोस्त सँ एहन कोनो मैसेज आबय तऽ पैसा ट्रांसफर करबा मे जल्दी नहि करी। आखिर सविताजी तऽ अपन संगीक संग रहबे करैथ आ सब संगीक तऽ पर्स नहि हेरा गेल हेतैन्ह!

निवेदनः-

अहाँकें ई लेख केहन लागल से मिथिलांगनक ईमेल पता mithilangan@gmail.com पर अवश्य लिखब।

जौं अहाँक मोन मे साइबर क्राइम कें लऽ कऽ कोनो तरहक प्रश्न होए त अवश्ये पूछू। मिथिलालंगनक अगिला अंक मे हम ओकर उत्तर देब।

❐

शुभकामनाक संग

जिनगीक संगो, जिनगीक बादो

जीवन बीमा, गाड़ी बीमा अओर मेडिक्लेमक लेल सम्पर्क करू

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

जय प्रकाश लाल दास
सदस्य शाखा प्रबंधक क्लब
भारतीय जीवन बीमा निगम

शाखा - 31बी, डिस्टिक्ट सेंटर, जनकपुरी, नई दिल्ली - 110058
निवास - 257, गली न. - 08, उत्तराखण्ड इन्क्लेव, शास्त्री पार्क बी ब्लॉक,
नजदीक अमृत विहार, बुराड़ी, नई दिल्ली - 110084,
मो. - 9810431060, 9810878860, 8743980608

विज्ञान मंच

बौआ-बुच्ची लोकनि,

अहाँ सभहक रूचि कें देखैत एहि स्तम्भकें आरम्भ कएल गेल अछि। अहाँ सब अपन-अपन प्रश्न मिथिलांगनक ईमेल mithilangan@gmail.com वा मो. न. 9910952191 पर व्हाट्स अप भेज सकैत छथि। चुनल प्रश्नक जवाब मिथिलांगनक विशेषज्ञ देताह जकरा अहाँक नाम आ पताक संग पत्रिकाक अगिला अंक मे प्रकाशित कएल जाएत।

एहिमे अहुँ लेल प्रश्न देल जा रहल अछि जकर जवाब अहाकें भेजबाक अछि, बिछल जवाब कें हुनक नाम-पताक संग अगिला अंक मे छापल जाएत। - सम्पादक

1. गाय या भैंसक दूध उज्जर किएक होइत अछि?

उत्तर :- सामान्यतः गाय या भैंसक दूध मे 80% पानि होइत अछि। एहि मे जे प्रोटीन अओर वसाक तत्व पायल जाइत अछि, ओ छोट-छोट बूंदक रूप मे होइत। एहि द्वारे जखन दूध मे सँ इजोत प्रवाहित होएत अछि तऽ ओ प्रकीर्णित भऽ जाइत अछि। एहि सँ दूध उज्जर देखाय दैत अछि। कखनो-कखनो किछु विटामिन आ खनिजक अंशक अधिक भेला सँ दूधक रंग हल्का भऽ जाइत अछि।

2. सूरजक रोशनी मे ठाड़ भेलाक बाद जखन घर आबैत छि तऽ किछु देर देखाय नहि दैत अछि, किएक?

उत्तर :- मानवक आँखिक पुतलीक आकार प्रकाशक चमकक अनुरूप अपनेआप समायोजित भऽ जाइत अछि। जखन हम रौद मे ठाड़ रहैत छि तऽ आँखिक पुतली सिकुड़ जाइत अछि अओर जखन हम अन्हार मे आबैत छि तऽ पुतली कें फैलय मे किछु समय लागैत अछि। एहि सँ लोक कें किछु देर बाद स्पष्ट देखाय लागैत अछि।

एकटा दोसरो कारण छैक, हमर आँखिक रेटीना मे 'शलाका' अओर 'शंकु' नामक कोशिका होइत अछि। शलाका कोशिका मे बैंगनी रंगक 'रोडोप्सिन' आ 'विजुअल पर्पल' नमक पदार्थ होइत अछि। जखन प्रकाश एहि पदार्थ पर पड़ैत अछि तऽ ई अवघटित भऽ जाइत अछि अओर 'मेटोरोडोप्सिन' नामक पदार्थ बनाबैत अछि। एहि अपघटन सँ प्रकाशग्राही कोशिका उत्तेजित भऽ जाइत अछि अओर ओकर स्पंद मस्तिस्क धरि पहुँचैत अछि जाहिसँ वस्तु देखाय दैत अछि। तेज इजोत मे रोडोप्सिनक बहुते मात्रा अवघटित भऽ जाइत अछि। जखने हम कम प्रकाशवाला जगह पर आबैत छि तऽ रोडोप्सिनक कमी सँ वस्तु स्पष्ट नहि देखाय दैत अछि। एकर पुनः निर्माण मे किछु समय लागैत अछि अओर कनि देरक बाद वस्तु स्पष्ट देखाय दैत अछि।

3. पानि मे नून घुलि जाइत अछि मुदा तेल नहि! किएक?

उत्तर :- नून एकटा क्रिस्टलीय मतलब रवेदार पदार्थ अछि जे सोडियम (Na+) आ क्लोराइडन (Cl -) आयन सँ बनल अछि। ई आयन इलेक्ट्रोस्टेटिक बल सँ आपस मे जुड़ल रहैत अछि। पानि ध्रुवीय विलायक अछि अर्थात पानिक दूनू छोड़ विपरीत आवेशयुक्त होइत अछि। जखन नून कें पानि मे मिलाबैत छियै तऽ नूनक सोडियम आ क्लोराइड आयन पानिक अणु सँ संबंध बनाबैत अछि। जाहिसँ सोडियम आ कलोराइडक बीचक electrostatic बल कमजोर भऽ जाइत अछि। फलस्वरूप नूनक आयन बिखैर कऽ पानि मे घुलि जाएत अछि। मुदा तेलक अध्रुवीय विलायक हेबा सँ ओकर अणु उदासीन नहि भऽ पाबैत अछि, जाहिसँ तेल नहि घुलैत अछि।

आहाँलोकनिक लेल प्रश्न

1. **गर्मी से पसीना कियैक आबैत अछि ?**
2. **थाकल रहला पर हाथ-पैर वा कोनो आओर अंग के दबेला सँ थकान कियैक हटि जायत अछि?**
3. **घाव ठीक भेलाक बाद ओही मे खुजली कियैक होइत अछि?**

नहि रहलाह दिव्यांगजन केर योद्धा, समाजसेवी, प्रसिद्ध शिक्षाविद् डॉ. गजेन्द्र नारायण कर्ण

दिव्यांगजनक हक लेल सम्पुर्ण जीवन भरि लड़यवाला आ सतत् हुनक सहायता लेल तत्पर रहयवाा दिव्यांगक योद्धा, समाजसेवी, प्रसिद्ध शिक्षाविद्, मिथिलांगनक आजीवन सदस्य जे.एन.यु क प्रोफेसर डॉ. गजेन्द्र नारायण कर्ण। डॉ. जी. एन. कर्ण वा कहु तऽ डॉ. कर्णा क नाम सँ दिव्यांगजगत मे प्रसिद्ध, मधुबनी जिलाक तेघरा गामवासी डॉ. जी.एन.कर्णक आकस्मिक निधन सँ सम्पूर्ण जे.एन.यू परिसर आ दिव्यांगजगत मे शोकक लहर पसरि गेल।

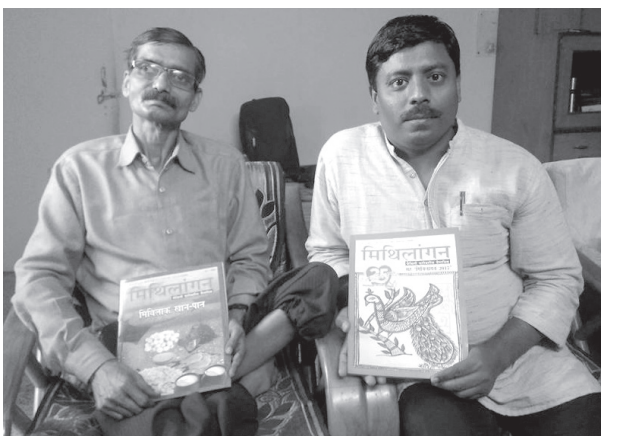

बचपने मे पोलियोक शिकार भऽ चुकल डॉ. कर्ण हिम्मत आ जिजीविषाक जीबैत-जागैत उदाहरण छलाह। फिलहाल विगज किछु वष सँ कैंसर सँ जूझि रहन छलाह। 53 वर्षीय डॉ. कर्णक निधन 12.01.2020 कें देर रात दिल्लीक बत्रा अस्पताल मे भेलैन्ह अओर उनका अंतिम संस्कार दिल्लीक लोधी रोड स्थित शवदाहगृह मे वैदिक रीति सँ कएल गेल। ओ अपना पाछाँ पत्नी डॉ. संध्या कुमारी (हिंदी प्राध्यापिका, दिल्ली विश्वविद्यालय), दू पुत्र आ एक पुत्री छोड़ि गेलाह।

डॉ. कर्ण नेशनल ह्यूमन राइट्स कमीशन मे डीजेबलिटी कोर ग्रुपक मेंबर छलाह। एकर अलावा नीति आयोगक पैनल मे डीजेबलिटी इन इंडिया, रूरल इकोनोमी अओर ग्लोबल रिसर्च नेटवर्क जेहन कतेको राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संस्था सबसँ जुड़ल छलाह।

ओ अपन संस्था Society for Disability and Rehabilitation Studiesक माध्यम सँ देश भरि मे दिव्यांगक अधिकार लेल अंतिम समय धरि संघर्षशील रहलाह। दिल्ली, पटना, मधुबनी, समस्तीपुर, दरभंगा आदि शहर मे दिव्यांगक लेल कतेको कार्यक्रम आ सेमिनारक आयोजन केलैन्ह।

बिहारक एकटा छोटछीन आ पिछड़ल गाम सँ आबि JNU क 'अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान' सँ उच्च शिक्षा प्राप्त करि डॉ. कर्ण अकादेमिक उपेक्षाक शिकार सेहो कम नहि भेलाह। मुदा तैयौ ओ जिवट भऽ अओरो जोश सँ भरि अपन पथ पर सदति अग्रसर रहलाह।

आई हुनकें प्रयास सँ 'विकलांगता अध्ययन' कें यूजीसी द्वारा एकटा विषयक रूपमे मान्यता मिलल। ओ हजारों दिव्यांग कें ह्वीलचेयर, लैपटॉप आदि दऽ हुनका सबल बनौलैन्ह। हुनक विकलांगता विषय पर लिखल पोथी 'भारत की डीजेबलिटी समस्या' अनेक अंतर्राष्ट्रीय अकादेमिक संस्था मे संदर्भ ग्रंथक रूपमे पढ़ाओल जाइत अछि। ओविकलांगता पर अँग्रेजीक संग-संग हिन्दी मे सेहो 'विकलांगता समीक्षा' नाम सँ जर्नलक प्रकाशन करि दिव्यांगजनकें आगाँ बढ़ेबाक आ हुनका समाज मे स्थान दियाबय लेल अंतिम दम धरि संघर्षरत रहलाह।

हुनक गेनाय मिथिला समाज आ दिव्यांग समाजक लेल बड्ड पैघ क्षति अछि। ईश्वर हुनक परिवारकें एहि क्षतिकें सहन करबाक क्षमता प्रदान करैथ।

गैरतलब अछि जे मिथिलांगन पत्रिकाक प्रथमांकक विमोचन डॉ. गजेन्द्र नारायण कर्णक पावन हाथ सँ भेल छल। संगहि हिनक सामाजिक कार्य आ साक्षात्कार सेहो मिथिलांनक पूर्व अंकक शोभा बढ़ौने अछि।

समस्त मिथिलांगल परिवार दिवंगत आत्माक शांति लेल प्रर्थना करैत अछि। ❐

समाचार-पत्रिका

मिथिलांगन पत्रिकाक विमोचन

सचिवक कलम सँ...

मणिपद्म जयंती 2019

सामाजिक, साहित्यिक आ सांस्कृतिक संस्था मिथिलांगन एहि वर्ष मणिपद्म जयंति देवेश्वरी भवन दिल्ली मे 08 सितम्बर 2019 कें अत्यंत हर्षोल्लास आ भव्यताक संग मनौलक।

दीप प्रज्ज्वलन द्वारा एहि भव्य कार्यक्रमक विधिवत शुभारंभ कएल गेल। तत्पश्चात सुप्रसिद्ध संगीतकार सुन्दरम, मिथिलांगन मंचक जानल-पहिचानल गायिका राखीक संग मिथिलांगनक नवतुरिया बेटी सब 'जय मिथिलांगन, जय मिथिला' वृन्दगान अत्यंत सुरूचिपूर्ण ढंग सँ गौलैन्ह।

मिथिलांगन पत्रिकाक संपादक मुकेशजी द्वारा मणिपद्मजीक व्यक्तित्व आ कृतित्व पर सारगर्भित चर्चा कएल गेल।

एहि अवसर पर विख्यात पत्रकार मानवर्द्धन कंठ कऽ संचालन मे 'आजुक परिवेश मे युवावर्गक सामाजिक, साहित्यिक आ सांस्कृतिक दायित्व' विषय पर परिचर्चा आयोजित कएल गेल जाहि मे लब्ध प्रतिष्ठ विद्वतजन यथा नूतन कंठ, आलोक कुमार, के. के. चौधरी आ रवीन्द्र कुमार दास 'कलाकार'जी अपन विद्व त विचार सँ उपस्थित श्रोता खास कऽ युवा सबकें लाभावन्वित केलाह।

मिथिलांगन रंगमंचक प्रसिद्ध निर्देशक संजयजी, राजेशजीक निर्देशन आ सुन्दरम जीक दमदार संगीत सँ सुसज्जित आ मिथिलांगनक नवतुरिया बेटी सभहक मांजल अभिनय सँ परिपूर्ण हास्यपूर्ण आ शिक्षाप्रद नाटक 'बैशाख नंदन'क मंचन कएल गयल। संस्थाक अध्यक्ष कमलेशजी आ कार्यकारी अध्यक्ष अधीरजी द्वारा सब कलाकार आ वक्ता सबकें मिथिलांगनक स्मृति चिन्ह दऽ सम्मानित कएल गेल। एहि संपूर्ण कार्यक्रमक संचालन रविन्द्रजी अत्यंत सहजता सँ केलैन्ह। मिथिलांगनक मीडिया प्रभारी शंभू शंकर द्वारा सम्मानीय अतिथि सबकें धन्यवाद ज्ञापित कएल गेल।

अल्पाहारक पश्चात एहि भव्य कार्यक्रमक पूर्णाहुति भेल। एहि संपूर्ण कार्यक्रम मे कार्यकारी सचिव निर्भयजीक नेतृत्व क्षमताक अद्भुत प्रदर्शन देखल गेल। सरिताजी, जयानंदजी, जितेन्द्रजी, संजीवजी, नवीन जी, अरविंद जी, आभाजी, अर्चनाजी, विनीताजी, दयाकांतजी, नुतनजी, यश, पीयूष आ मिथिलांगनक सब कार्यकर्त्ताक योगदान सँ ई कार्यक्रम अविस्मरणीय बनि गेल।

एहि बेरका कार्यक्रम मे दूटा उल्लेखनीय काज भेल :- पहिल, पर्यावरणक रक्षा कें ध्यान राखैत एहि बेर सम्मानित अतिथि सबकें पुष्पगुच्छक बदला मे पुष्प पौधा दऽ सम्मानित कएल गेल। दोसर, एहि बेरका मुख्य आकर्षण छल मिथिलांगनक बेटी सभहक दमदार आ उत्साहवर्धक प्रदर्शन। अनन्या, साक्षी, प्राची, सुप्रिया, शिवानी, पिहु, गहना अपन दमदार अभिनय सँ एकटा नव उम्मीद जगौलक अछि। एहि बेरका समारोह पूर्ण रूपसँ मिथिलांगनक बेटी सभहक नाम रहल। एकर सबटा श्रेय संजयजी, सुन्दरमजी आ राजेशजीकें छैन्ह। यश आ पीयूष सनक नव पीढ़ी जाहि तरहें आगाँ आबि अपन दायित्व ग्रहण कऽ रहल छथि, हमरा मिथिलांगनक भविष्य अत्यंत उज्ज्वल बुझना जाईत अछि। मात्र आवश्यकता अछि युवापीढ़ी कें उत्साहित आ प्रोत्साहित करबाक, जाहि मे हमसब कमी कऽ रहल छी। ❐

मिथिलांगन दिस सँ कुलपति कें ज्ञापन

सामाजिक, साहित्यिक आ सांस्कृतिक संस्था मिथिलांगन द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय मे मैथिली पाठ्यक्रम कें शामिल करबा वास्ते दिल्ली विश्वविद्यालयक कुलपति कें ज्ञापन सौंपल गेल।

मैथिल समाज सँ संबंधित कतेको संस्था पत्र आ ज्ञापनक माध्यम सँ एहि महत्त्वपूर्ण विषयकें उठौने अछि। आवश्यकता अछि सम्मलित प्रयासक। एहि लेल सब गोटा आगाँ आऊ आ एहि प्रयास कें सफल बनाऊ।

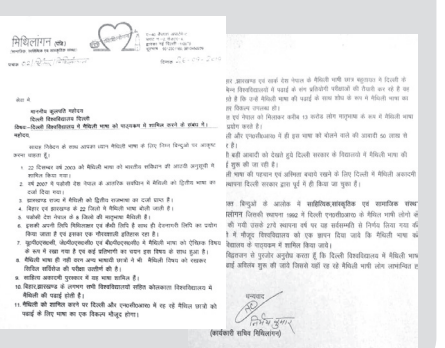

बाबू ब्रह्मदेव लाल दास व्याख्यानमाला - तृतीय

रवि दिन 29.12.19 कें दिल्लीक देवेश्वरी सभागार मे हमर पूज्य गुरु आ मिथिलांगनक प्रेरणा स्त्रोत ब्रह्मदेव बाबूक पावन स्मृति मे व्याख्यानमालाक भव्य आयोजन कएल गेल। जाहिमे प्रसिद्ध इतिहासकार श्री भैरव लाल दास द्वारा 'मिथिलाक सांस्कृतिक संवेदनशीलता' विषय पर सारगर्भित, विस्तृत आ ज्ञानदायक व्याख्यान देल गेल, जकरा उपस्थिति समस्त श्रोतागण मंत्रमुग्ध भऽ सुनैत रहलाह। लगभग दू घंटाक अपन व्याख्यान मे ओ मिथिलाक सांस्कृतिक विरासत, गौरवशाली परंपरा, मिथिलाक विद्वता, ज्ञान, प्राचीन शिक्षण संस्थान, ओकर विश्व प्रसिद्धि, चित्रकला, हस्तकला, लोक संस्कार, वर्तमान समय मे कन्या-वरक विवाहक समस्या, तलाकक कारण आ निदान, अंतर्जातीय विवाह, पंजी प्रबंधन, ओकर औचित्य, सार्थकता आ भ्रान्ति आ विवाहक अधिकार पर विस्तार सँ चर्चा केलैन्ह। ओ समस्त श्रोता सँ अह्वान केलैन्ह जे अपन मिथिलाक शास्त्रीय परंपरा,ज्ञान, आचार-व्यवहार आ कला संस्कृति कें अक्षुण्ण रखवा मे अपन योगदान दी जाहिसँ आगाँ आबयवला पीढ़ी एहि गौरवशाली विरासत कें अंगीकार कऽ सकय। संगहिं मैथिली भाषा साहित्य, तिरहुता आ कैथी लिपिक संरक्षण मे अपन योगदान करी। सब कियो अपन-अपन घर मे मैथिलीक पोथी अवश्य राखि आ पढ़ी जाहिसँ ई सुंदर संस्कार बच्चा-बुच्ची सबकें

स्पर्श करय।

समारोहक अध्यक्षता प्रकांड विद्वान आ मैथिली-भोजपुरी अकादमीक पूर्व सचिव श्रीमान परिचय दासजी केलैन्ह ओ अपन अध्यक्षीय उद्बोधन मे मिथिलाक गौरवशाली

परंपराक उल्लेख केलैन्ह आ एहि थाती कें बचा कऽ रखबाक आवश्यकता पर जोर देलैन्ह।

समारोहक शुभारंभ पूज्यनीया विन्देश्वरी दास आ उपस्थिति विद्वान लोकनि दीप प्रज्वलित कऽ केलैन्ह। मिथिलांगन सांस्कृतिक समूह द्वारा मिथिलांगन गान आ स्वागत गान गाओल गेल। समारोहक संचालन सुमन जी सब बेर जकाँ अत्यंत सहजता सँ केलैन्ह।

अल्पाहारक पश्चात दोसर सत्र मे श्री सुंदरम जीक अगुवाई मे मानवर्द्धन जी, राखी, स्नेहा, प्रत्यूष, पीहु आ यश द्वारा अत्यंत सुरूचिपूर्ण आ झमकौआ गीत-संगीतक रसास्वादन कराओल गेल। एहि सत्रक संचालन श्री संजयजी अपन चिर-परिचित हास्ययपूर्ण अंदाज मे केलैन्ह।

श्री मानवर्द्धन जी द्वारा माननीय अतिथि लोकनि आ समस्त श्रोता कें धन्यवाद देल गेल।

एहि समारोह मे सर्वश्री कमलेश जी, के के चौधरी, अधीरजी, निर्भयजी, राजेश जी, सरिता जी, हृदय नारायण जी, अंजूजी, नूतनजी, विनीता जी, संतोषी जी, दीपाली जी,प्रभा सुंदरम, अरविंद जी, शंभू जी, जितेंद्र जी, नवीनजी, आलोकजीक सक्रिय उपस्थिति उल्लेखनीय रहल।

जयानंद जी, मुकेश जी, दयाकांतजी, उमेश जी, यश, भव्य, प्रतीक गौरव आ चैतन्य द्वारा कएल गेल सुंदर व्यवस्था उत्तम आ प्रशंसनीय रहल।

जय मिथिला। जय मिथिलांगन।। ❐

समस्त संस्था समाचार :
शंभू शंकर, मिडिया प्रभारी, मिथिलांगन

मिथिलाक्षर स्थायी रूप मे शामिल करी

मिथिलांगन पत्रिका भेजबाक लेल धन्यवाद, बड्ड नीक लागल।

अपार हर्ष भेल जे अहाँक सम्पादकीय मे 2008 सँ दिल्ली सँ मैथिली मे पत्रि का प्रकाशित भऽ रहल अछि।

एकटा विचार छल जे एहि मे मिथिलाक्षर सीखवाक लेल स्थायी रूप मे स्तम्भ शामिल करी। एहि हेतु कार्यकारिणी सँ निर्णय कें बाद हुनका (सीखवाक इच्छुक कें) मिथिलाक्षर साक्षरता अभियान सँ जोरि सकैत छी।

डॉ. हरे कृष्ण झा
मिथिलाक्षर साक्षरता अभियान
मधुबनी

नानी/दादीक खिस्सा नामक एकगोट स्तम्भ प्रारम्भ कएल जाए

माननीय संपादक जी,
जय मैथिली!

मिथिलांगनक नव अंक नव कलेवर संग प्रसन्नताक गप्प अछि, परंच ई कहबा मे हमरा कनेको असोकर्ज नहि जे मिथिलांगन सदति अपन श्रेष्ठ कलेवर सँ समस्त पाठकगण कें आकर्षित करैत रहल अछि। तथापि समयानुसार जौं अओर निखरैत रहय तऽ अओर नीक लागत। तैं किछु सुझाव जौं समस्त पाठकवृंद सह संपादक महोदय कें उचित लागय तऽ विचार कएल जा सकैत अछि जेना - 'नानी/दादीक खिस्सा' नामक एकगोट स्तम्भ प्रारम्भ कएल जाए कारण आई-काल्हि एकल परिवारक कारण नेना सभ दादी-नानीक दुलार तऽ बिसरिये गेल संगहि दंतकथा (खिस्सा) सभ सेहो विलुप्तिक कगार पर ठाढ़ अछि। खिस्सा तऽ एहन उपयोगी छैक जे स्वतः नेना सबकें बहुत किछु खेल-खेल मे सिखा दैत छैक।

एहि बदलावक माध्यम सँ हम अपन हेराइत संस्कृति आ एकगोट अतिउत्तम विधाक रक्षा करबा मे सफलता पाएब।

स्मरण रहए जे ई सुझाव हम बहुत पहिनहुँ एक बेर देने रही जे विचाराधीन अछि।

धन्यवाद

कल्पना झा
सखबार, दरभंगा
वर्तमान निवास - नोएडा, उत्तर प्रदेश

मिथिलांगन पत्रिका आ संस्थाक आजीवन सदस्यता

प्रिय मुकेश जी,

अहाँ मिथिलांगन पत्रिका देखल। पत्रिकाक स्वरूप देखि एकर आजीवन ग्राहक आ सदस्य बनय चाहैत छी। एकर आजीवन सदस्यता शुल्क आ अन्य जानकारी भेज सकी तऽ हम अनुग्रहित हैब।

शुभकामना संग

श्रवण कुमार लाल दास।
जनार्दनपुर, सुपौल

सम्पूर्ण पत्रिका प्रकाशन

पछुलका अंकक पीडीएफ बड्ड नीक लागल, एहिसँ बुझना गेल जे अहाँ सभ एकटा सम्पूर्ण मैथिल पारिवारिक पत्रिका प्रकाशित कऽ रहल छी। ओकरा मे नव स्तम्भकें जोरनाय तऽ सोना मे सुहागा मिलेनाय जकाँ भेल। हमरा एकर सदस्य बना ली से आग्रह। शुभकामना श्री मुकेश दत्त जी।

अरूण कुमार लाल दास
नोबो नगर, बंगलोर

श्रद्धेय पाठकगण,

अपनेक पत्र, मेल अओर व्हाट्स अप द्वारा मिलल सुझाव आ विचार पत्रिका कें उत्कृष्ठ बनेबा मे सदति सहायक होएत रहल अछि। जकर परिणामस्वरूप अहाँ सभहक सुझाव पर एहि अंक मे किछु नव स्तम्भकें प्रारम्भ कएल गेल अछि, आशा अछि अहाँ सबकें पसंद आओत। ओहि स्तम्भ पर अपन विचार आ टिप्पणी सँ पत्रिकाक सम्पादक मण्डलकें अवश्य सूचित करी, जाहिसँ एहिमे छुटि गेल त्रुटि कें अगिला अंक मे सुधारल जा सकय।

कोनो विषय पर अपनेक कि सोचब वा कहब अछि, एहि प्रसंग पर अपन मंतव्य, अपन विचार सँ अन्य पाठक लोकनिक ज्ञान अओर जानकारीकें बढ़यबाक लेल शीघ्र कागत-कलम उठाऊ आ अपन विचार लिखि मिथिलांगनकें संपादक, मिथिलांगन, ए-40, कैलाश अपार्टमेन्ट, प्लाट नं-2, सेक्टर-4, द्वारका, नई दिल्ली-110078 भेजु। अपने लोकनि अपन मंतव्य कें मिथिलांगनक ई-मेल :mithilangan@gmail.com पर सेहो प्रेषित कऽ सकैत छी।

बीछल मंतव्यकें मिथिलांगनक आगामी अंक मे अपनेक नामक संग प्रकाशित कएल जाएत।

- संपादक

की अपने अपन धीया-पूताक संग मैथिली मे बतियाइत छी, जौं नहि तऽ आइये सँ शुरू कऽ दीयौ। मातृभाषाक रक्षाक जिम्मा अपनेक कर्तव्य अछि। - संपादक